# विमानवत्थु



I. इत्थी-विमानम - पहला खंड: महिलाओं के निवास स्थान
विमानवत्थु में बुद्ध और उनके पूर्णतः प्रबुद्ध शिष्यों (अरहंतों) के दिव्य स्वरूप का वर्णन है। इसमें स्वर्ग और उनके महलों (या उड़ने वाले महलों) का वर्णन है।

वर्णन के अनुसार, स्वर्ग अनेक प्रकार के हो सकते हैं। मृत्यु के बाद, यदि किसी व्यक्ति (या पशु) ने अच्छे कर्म किए हों, तो वह स्वर्ग में पुनर्जन्म ले सकता है। बुद्ध और अरहंतों जैसे पूर्णतः प्रबुद्ध पवित्र प्राणियों को अनंत ब्रह्मांड का एक अंग माना जाता है, जिनमें अपार सामर्थ्य और गुण होते हैं, क्योंकि उन्होंने सभी दोषों को दूर कर दिया है, इसलिए वे केवल अंतिम शरीर धारण करते हैं, जिसके बाद वे निर्वाण की सर्वोच्च अवस्था, शाश्वतता की अवस्था में प्रवेश करते हैं। दैवीय नियम के अनुसार, उन्हें दी गई कोई भी सहायता (दान/भोजन) अपार पुण्य का कारण बनती है, जिससे स्वर्ग में (देवदूत के रूप में) पुनर्जन्म का लाभ मिलता है, जहाँ व्यक्ति के लिए स्वतः ही एक विशाल महल प्रकट होता है, जिसमें अनेक सेवक और उसकी पसंद के अनुसार सुख-सुविधाएँ होती हैं।

स्वर्ग के प्राणी, उनके शरीर, निवास स्थान और अन्य वस्तुएँ दिव्य प्रकाश से निर्मित और प्रकाशमान मानी जाती हैं, जिनकी चमक मानव रूप में किए गए कर्मों के गुणों पर निर्भर करती है। सबसे प्रकाशमान प्राणी वे हैं जिन्होंने नैतिकता (शील) और ध्यान (समाधि) का पालन करते हुए, ध्यान में या बुद्ध या समकक्ष अरिहंत भिक्षुओं की संगति में, जिन्होंने आशीर्वाद प्रदान किया हो, निर्वाण अवस्था (सम्मोहन) का कम से कम एक अंश प्राप्त किया हो, जिसके परिणामस्वरूप दिव्य निर्वाण अवस्था का आनंदमय अनुभव प्राप्त होता है। प्रथम जागरण को सोतापना कहा जाता है। विमानवत्थु में सोतापना प्राप्त करने वाले कई व्यक्तियों को अत्यधिक प्रकाशमान और तेज चमकते हुए प्राणियों के रूप में दिखाया गया है। स्वर्ग के निवास स्थान भी विचार की गति के अनुसार गतिमान होते हैं। स्वर्ग के प्राणी के सेवक, जीव और वस्तुएँ उनकी इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं। लेकिन स्वर्ग में जीवन शाश्वत नहीं है। उनका जीवनकाल सैकड़ों या हजारों वर्षों का हो सकता है, जो उनके अच्छे कर्मों के फल के अनुसार भिन्न होता है, और उनके जीवनकाल के बाद उन्हें कहीं न कहीं पुनर्जन्म लेना होता है।

कुछ उल्लेखनीय मनोगतियाँ हैं: 1.8 तृतीय नौका मनोगत (बुद्ध चमत्कार दिखाकर अभिमानी उच्च जाति के लोगों का दिल जीत लेते हैं, एक महिला से जल ग्रहण करते हैं जिससे उन्हें स्वर्ग का पुण्य प्राप्त होता है), 1.10 तिल दान मनोगत (बुद्ध तिल का दान स्वीकार करके

एक महिला को नरक जाने से बचाते हैं), 1.15 उत्तरा की मनोगत (वरिष्ठ भिक्षु सारिपुत्त के आशीर्वाद से उत्तरा के पिता को अपार सोना प्राप्त होता है, उत्तरा बुद्ध को भोजन कराती है और स्वर्ग जाती है), 1.16 सिरिमा की मनोगत (बुद्ध के आशीर्वाद से दरबारी महिला सिरिमा को स्वर्ग प्राप्त होता है), 2.3 चावल की भूसी देने वाले की मनोगत (अरिहंत भिक्षु महा-कसप्पा अपने पूर्व जन्म की माता से चावल की भूसी ग्रहण करते हैं जिससे उन्हें स्वर्ग प्राप्त होता है), 2.4 चंडाली की मनोगत (बुद्ध एक निम्न जाति की महिला को नरक जाने से बचाते हैं), 3.7 पेशावती की मनोगत (प्रमुख शिष्य सारिपुत्त निर्वाण प्राप्त करते हैं) 4.12 राज्जुमाला का महल (बुद्ध एक नौकरानी को आत्महत्या से बचाते हैं, जिसे दिव्य अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है), 5.1 मेंढक का महल (एक मेंढक स्वर्ग प्राप्त करता है), 5.8 सुई का महल (ज्ञान प्राप्त भिक्षु को दी गई सुई भी स्वर्ग का कारण बनती है), 7.7 कंथक का महल (राजकुमार सिद्धार्थ, जो बाद में बुद्ध बने, उनका घोड़ा कंथक मर जाता है और स्वर्ग प्राप्त करके देवदूत बन जाता है)।

1. प्रथम डिवीजन: सीट मेंशन्स
2. द्वितीय डिवीजन: सिट्टालाटा (ईडन)-वाग्गो
1.1 प्रथम सीट हवेली (1)
1.2 द्वितीय सीट हवेली (2)
1.3 तृतीय सीट हवेली (3)
1.4 चतुर्थ सीट हवेली (4)
1.5 हाथी हवेली (5)
1.6 प्रथम नाव हवेली (6)
1.7 द्वितीय नाव हवेली (7)
1.8 तृतीय नाव हवेली (8)
1.9 दीपक हवेली (9)
1.10 तिल-उपहार हवेली (10)
1.11 प्रथम पवित्र पत्नी हवेली (11) 1.12
द्वितीय पवित्र पत्नी हवेली (12)
1.13 प्रथम बहू हवेली (13)
1.14 द्वितीय बहू हवेली (14)
1.15 उत्तरा की हवेली (15)
1.16 सिरिमा की हवेली (16)
1.17 केशकारी की हवेली (17)
3. तीसरा भाग: परिच्छत्तक-वग्गो (कोरल ट्री)
2.1 दासी का महल (18)
2.2 लखुमा का महल (19)
2.3 चावल की रोटी देने वाले का महल (20)
2.4 चंडाली का महल (21)
2.5 सुंदर महिला का महल (22)
2.6 सोनादिन्ना का महल (23)
2.7 उपोसाथा का महल (24)
2.8, 2.9 निद्दा और सुनीद्दा के महल (25,26)
2.10 पहले भिक्षादाता का महल (27)
2.11 दूसरे भिक्षादाता का महल (28)

4. चौथा प्रभाग: मंजित्थाका-वाग्गो (क्रिमसन)

---

विमानवत्थु : एटीआई संस्करण
निम्नलिखित .pdf फ़ाइल में ऊपर दी गई सभी कहानियाँ हैं, इसे खोलें और फिर .pdf फ़ाइल सहेजें
: फ़ाइल:Vimanavatthu Final.pdf

मूल पाली संस्करण
खुद्दक निकाय का विमानवत्थु, विमान (एक प्रकार का निजी स्वर्गीय निवास) का वर्णन करने वाली छंदबद्ध कहानियों का संग्रह है। इस निवास में वे प्राणी निवास करते हैं जो मनुष्य के रूप में किए गए पुण्य कर्मों के फल के रूप में देवी-देवताओं के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं। सभी कहानियाँ एक समान शैली का अनुसरण करती हैं। इनकी शुरुआत एक परिचयात्मक श्लोक (या श्लोकों) से होती है जिसमें देवता या देवी से उस विशेष निवास में उनके पुनर्जन्म का कारण पूछा जाता है। इसके बाद देवता अपने पूर्व के अच्छे कर्मों का वर्णन करते हैं।
— जॉन डी. आयरलैंड, वांगिसा: एक प्रारंभिक बौद्ध कवि में
1.16: सिरिमा — सिरिमा का महल
(श्लोक 136-148) देव सिरिमा, जो अपने पिछले मानव जन्म में मनोरंजनकर्ता थीं, पूज्य वंगीसा को समझाती हैं कि उन्होंने धम्म कैसे सीखा और धारा-प्रवेशकर्ता (प्रथम पथ की) कैसे बनीं।
3.7: शेषवती — शेषवती का महल
(श्लोक 647-658) देवी शेषवती पूज्य वांगिसा को बताती हैं कि अपने पिछले जन्म में पूज्य सारिपुत्त को प्रणाम करना ही उनके लिए एक गौरवशाली देवलोक में पुनर्जन्म सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त था। यह विशुद्ध भक्तिमय संदेश वाली प्रारंभिक बौद्ध कविता का एक उदाहरण है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु1.1

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
प्रारंभ <<<<----------------------- I.1.1 -------------------------->>>> अगला

1.1 प्रथम पीठ भवन (1)
(पथम-पीठ-विमान)

जब भगवान (भगवान बुद्ध) सावती में, जेतवन में अनाथपिंडिका के मठ में निवास कर रहे थे, तब कोसल के राजा पसेनादि ने बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षु संघ के लिए सात दिनों तक अद्वितीय दान दिया, और महान धनदाता अनाथपिंडिका ने राजा के दान के अनुरूप तीन दिनों तक दान दिया, और महान गृहस्थ अनुयायी विशाखा ने भी इसी प्रकार महान दान दिया, तो अद्वितीय दान की खबर जंबूद्वीप (भारत) में फैल गई। तब हर जगह लोगों ने यह प्रश्न उठाया, "क्या दान केवल इस प्रकार की भव्य उदारता से ही विशेष रूप से फलदायी होता है, या यह तब होता है जब यह अपनी सामर्थ्य के अनुसार उदारता हो?"

जब भिक्षुओं ने इस चर्चा के बारे में सुना तो उन्होंने भगवान (भगवान बुद्ध) को बताया। भगवान बुद्ध ने कहा, "केवल उचित दान देने से ही महान फल प्राप्त नहीं होते, बल्कि दानदाता के मन की प्रसन्नता और दानग्राही की योग्यता (उन्नति) के कारण भी ऐसा होता है। इसलिए, मुट्ठी भर धान, एक चिथड़ा, घास या पत्तों का एक टुकड़ा, या सड़ते हुए (पशु-मूत्र में मिला हुआ एक पित्त का दान भी, यदि श्रद्धापूर्वक किसी योग्य व्यक्ति को दिया जाए, तो वह महान फलदायी, महान वैभवशाली और महान विस्तार वाला होगा।"

इसी प्रकार, सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) ने कहा,

"यदि मन प्रसन्न हो, तो

तथागत (बुद्ध), पूर्णतः प्रबुद्ध, या किसी शिष्य को दिया गया कोई भी भक्ति दान महत्वहीन नहीं है।"

अब यह कथा जंबूद्वीप (भारत) में व्यापक रूप से प्रसिद्ध हो गई। लोगों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार भिक्षु और ब्राह्मण, घुमंतू, राहगीर और दरिद्रों को दान दिया। उन्होंने अपने आंगनों में पीने का पानी उपलब्ध कराया, उन्होंने प्रवेश द्वारों पर आसन लगाए।

उसी समय एक उत्तम आचरण वाले वरिष्ठ भिक्षु भिक्षाटन के लिए समय पर एक घर पहुंचे। वहां एक धर्मपरायण गृहस्थ महिला ने उनका स्वागत किया, आदरपूर्वक अभिवादन किया और अपने आसन पर इस्त्री किया हुआ पीला वस्त्र बिछाकर उन्हें अर्पित किया। अपनी सामर्थ्य के अनुसार उन्हें भोजन परोसते हुए और पंखा झलते हुए, प्रसन्न मन से उसने सोचा, "मेरे लिए सर्वोच्च पुण्य का क्षेत्र उत्पन्न हुआ है।" जब भिक्षु ने भोजन कर लिया, तो उन्होंने आसन और भोजन दान आदि के विषय में धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर प्रवचन दिया और चले गए। जैसे ही महिला ने अपने भिक्षाटन और धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर प्रवचन दिया, वह अत्यंत प्रसन्न हुई और उसने भी भिक्षु को अपना आसन दे दिया।

कुछ समय बाद एक स्त्री की रोग से मृत्यु हो गई और उनका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में बारह योजन वाले स्वर्णमय महल में हुआ। उनके साथ एक हजार अप्सराओं का दल था। उनके द्वारा दिए गए आसन के कारण उनके लिए एक योजन का स्वर्णमय दीवान प्रकट हुआ, जो आकाश में तीव्र गति से विचरण करता था और शिखर पर स्थित किसी ऊंचे घर के समान दिखता था। अतः इसे आसन महल कहा जाता है। क्योंकि आसन पर स्वर्ण रंग का वस्त्र बिछा हुआ था, इसलिए महल स्वर्णमय था, जो कर्म और उसके परिणाम के बीच समानता को दर्शाता है: क्योंकि कुर्सी आनंद की प्रबल प्रेरणा से दी गई थी, इसलिए महल अत्यंत गतिमान था; उपहार योग्य व्यक्ति की संतुष्टि के लिए दिया गया था, इसलिए महल इच्छा अनुसार गतिमान हो सकता था; स्त्री की आनंदमय आस्था की फलदायीता के कारण महल तेजस्वी और प्रकाशमान था।

एक पर्व के दिन जब देव (देवदूत) अपने-अपने स्वरूप या देव-समान शक्ति से नंदनवन (स्वर्ग) में आनंद के लिए जा रहे थे, तभी एक देवी (देवदूत) देव-वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित होकर, एक हजार अप्सराओं के साथ, परम शक्ति से सिंहासन भवन में प्रवेश कर गईं।

उसी समय, आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना, जो देव-दर्शन यात्रा पर थे, तैंतीस लोकों में पहुँचे और देवी (देवदूत) के पास दर्शन दिए। उन्हें देखकर देवी (देवदूत) अत्यंत प्रसन्नता और श्रद्धा से सोफे से उतरीं, वरिष्ठ भिक्षु के पास गईं, पंचमुखी प्रणाम किया और दस उंगलियों को जोड़कर हाथ जोड़कर उन्हें नमन किया। यद्यपि वरिष्ठ भिक्षु ने अपनी बुद्धि की शक्ति की विविधता के बल पर, मानो अपने हाथ की हथेली पर रखे हुए मायरोबलन फल को स्पष्ट रूप से देख लिया था, जिसमें उनके द्वारा और अन्य प्राणियों द्वारा संचित अच्छे और बुरे कर्मों का वर्णन था, फिर भी अपने पुनर्जन्म के तुरंत बाद देवता कहते हैं, "मैं कहाँ से मरा और इस संसार में पुनर्जन्म लिया?" "मैंने ऐसा कौन सा अच्छा कर्म किया जिससे मुझे यह सफलता मिली?" और चूंकि सामान्यतः वे सही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, इसलिए बड़े ने, देवताओं (देवदूतों) के साथ संसार को कर्म का परिणाम स्पष्ट करने के लिए, इस देवी (देवदूत) से उसके द्वारा किए गए कर्म के बारे में बताने को कहा और निम्नलिखित शब्द कहे:

1 "आपका स्वर्णमय, तेजस्वी आसन, आपकी इच्छा से विचार की गति से चलता है। आप फूलों की मालाओं से सुशोभित हैं, सुंदर वस्त्रों में, आप बादलों पर बिजली की तरह चमक रही हैं।

2 आपकी ऐसी सुंदरता किस कारण है? आप यहाँ किस कारण समृद्ध होती हैं, और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सभी सुख किस कारण उत्पन्न होते हैं?"

3 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, आपने मनुष्य के रूप में जन्म लेकर क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित क्यों करता है?

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवी ने

बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "मनुष्यों के बीच मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मैंने एक आगंतुक को एक छोटी कुर्सी दी, आदरपूर्वक उसे प्रणाम किया, हाथ जोड़कर अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान दिया।

6 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध हूँ और वहाँ मेरे हृदय को प्रिय सुखों की प्राप्ति होती है।

7 हे महान महिमावान भिक्षु, मैं आपको बताता हूँ कि मैंने मनुष्य के रूप में जन्म लेकर क्या पुण्य कर्म किया था। इसी कारण मेरी तेजस्वी महिमा ऐसी है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.2

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- I.1.2 -------------------------->>>> अगला

1.2 द्वितीय आसन भवन (2)
(दुतिया-पीठ-विमान)

इस आसन की व्याख्या और टीका दोनों को प्रथम आसन के संदर्भ में ही समझना चाहिए। लेकिन अंतर यह है:

कहा जाता है कि श्रावस्ती में रहने वाली एक स्त्री ने एक वरिष्ठ भिक्षु को अपने घर भिक्षा मांगने आते देखा और प्रसन्नता से उन्हें आसन देते हुए अपने आसन पर नीला वस्त्र बिछाकर उन्हें दे दिया। अतः जब उनका देवलोक में पुनर्जन्म हुआ, तो उनके लिए बेरिल से निर्मित एक दीवान भवन प्रकट हुआ। इसलिए, "बेरिल से निर्मित आपका आसन..." कहा गया है।

1 "आपका बेरिल से बना भव्य आसन, आपकी इच्छा से विचार की गति से चलता है। आप पुष्पमालाओं से सुशोभित हैं, सुंदर वस्त्रों में आप बादलों पर बिजली की तरह चमक रही हैं।

2 आपकी ऐसी सुंदरता किस कारण है? आप किस कारण से समृद्धि प्रदान करती हैं और आपके हृदय को प्रिय आनंद किस कारण उत्पन्न होते हैं?

3 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे गए प्रश्न से प्रसन्न होकर उस देवी ने बताया कि यह किस कर्म का परिणाम है।

5 "जब मैं मनुष्य के रूप में जन्मा, तो मैंने एक आगंतुक को छोटी कुर्सी दी, आदरपूर्वक उनका अभिवादन किया, अपने हाथ जोड़कर उन्हें अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान दिया।

6 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होता हूँ, और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

7 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको अपने उस पुण्य कर्म के बारे में बताता हूँ जो मैंने मनुष्य के रूप में जन्म लेते समय किया था। इसी कारण मेरा तेजस्वी तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु1.3

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.3 -------------------------->>>> अगला

1.3 तीसरा आसन (3)
(तथ्य-पीठ-विमान)

... राजगृह में ... (जैसा कि क्रमांक 1 में है) ... स्त्री अपना आसन अर्पित करते हुए यह कामना करती है: हे मेरे इस कर्म से भविष्य में मुझे स्वर्ण का आसन प्राप्त हो! तदनुसार कहा गया:

1 "आपका स्वर्ण निर्मित, तेजस्वी आसन, आपकी इच्छा से विचार की गति से चलता है। आप पुष्पों की मालाओं से सुशोभित हैं, सुंदर वस्त्रों में आप बादलों पर बिजली की तरह चमक रही हैं।

2 आपकी ऐसी सुंदरता किस कारण है? आप यहाँ किस कारण समृद्ध हैं, और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख किस कारण उत्पन्न होते हैं?

3 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 मोग्गलाना द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर वह देवता प्रसन्न हुए और प्रश्नकर्ता द्वारा बताए गए कर्म का फल बताया।

5 “मेरे एक छोटे से कर्म का यह फल है, जिसके कारण मेरा तेज ऐसा है। पिछले जन्म में जब मैं मनुष्य जगत में मनुष्य के रूप में जन्मा,

6 तब मैंने एक निर्मल भिक्षु को देखा, जिसे मैंने प्रसन्न मन से अपने हाथों से आसन दिया।

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध हूँ और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

8 हे महान भिक्षु, मैं आपको बताता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेते समय मैंने क्या पुण्य कर्म किया था। इसी कारण मेरा तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।”
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.4

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.4 -------------------------->>>> अगला

1.4 चौथा आसन भवन (4)
(चतुत्थ-पीठ-विमान)

इसका स्थान भी राजगृह में था। इसे दूसरे आसन के वर्णन के समान ही समझना चाहिए, क्योंकि जब स्त्री ने नीले वस्त्र को बिछाकर आसन दिया, तो उसके लिए भी बेरिल से बना एक आसन प्रकट हुआ। शेष वही है जो पहले आसन के संबंध में कहा गया था। तदनुसार कहा गया:

1 "आपका बेरिल से बना भव्य आसन, आपकी इच्छा से विचार की गति से चलता है। आप फूलों की मालाओं से सुशोभित हैं, सुंदर वस्त्रों में आप बादलों पर बिजली की तरह चमक रही हैं।

2 आपकी ऐसी सुंदरता किस कारण है? आप यहाँ किस कारण समृद्ध हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख किस कारण उत्पन्न होते हैं?

3 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता ने प्रश्न के उत्तर में बताया कि यह किस कर्म का परिणाम था।

5 "मेरे एक छोटे से कर्म का यह फल है, जिसके कारण मेरी तेजस्वी महिमा इस प्रकार है। पिछले जन्म में जब मैं मनुष्य जगत में मनुष्य के रूप में जन्मा,

6 तब मैंने एक निर्मल भिक्षु को देखा, जिसे मैंने प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से आसन दिया।

7 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध हूँ, और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

8 हे महान भिक्षु, मैं आपको अपने उस पुण्य कर्म के बारे में बताता हूँ जो मैंने मनुष्य के रूप में जन्म लेकर किया था। इसी कारण मेरी तेजस्वी महिमा इस प्रकार है और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"

1.5 हाथी महल (5)
(कुंजर-विमान)

भगवान (बुद्ध) राजगृह में बांस के जंगल में गिलहरियों के भोजन स्थल पर निवास कर रहे थे। एक दिन राजगृह नगर में एक उत्सव की घोषणा की गई। सभी लोग अपने सर्वोत्तम वस्त्र धारण करके उत्सव में शामिल हुए।

महान राजा बिम्बिसार, जनता की प्रसन्नता के लिए, उस स्थान से निकले और बड़े धूमधाम और वैभव के साथ नगर का भ्रमण किया। उसी समय राजगृह की एक सुकुलित स्त्री ने राजा का वैभव देखा और आश्चर्यचकित होकर उसने विद्वानों से पूछा, "यह दिव्य वैभव और धन का प्रदर्शन आपने किस पुण्य कर्म से प्राप्त किया है?" उन्होंने उससे कहा, "हे प्रिय, पुण्य कर्म उस रत्न के समान है जो इच्छा पूरी करता है, उस वृक्ष के समान है जो मनोकामना पूरी करता है।" यह सुनकर उसने मन ही मन कहा, “मैं समझती हूँ कि दैवीय पुण्य (अनेक दान-पुण्यों से मिलने वाले प्रतिफल) से कहीं अधिक है,” और वह पुण्य कर्म करने में अत्यंत तत्पर हो उठी।

उसके माता-पिता ने उसके लिए नए वस्त्र, नई आसन, कमलों का गुच्छा, घी, शहद, चीनी, चावल और दूध भेजा। जब उसने ये सब देखा तो बोली, “मैं दान देना चाहती हूँ, और अब यह दान योग्य वस्तु मेरी हो गई है,” और प्रसन्न मन से उसने अगले दिन अपना दान-पुण्य, अपना घर और स्वयं को तैयार किया।

उसी समय, राजगृह में भिक्षा माँगते हुए आदरणीय भिक्षु सारिपुत्त एक गली में ऐसे आसीन हुए जैसे वे हजार सिक्कों से भरा थैला रख रहे हों। दासी ने भिक्षु को देखकर कहा, “आदरणीय महोदय, मुझे अपना भिक्षापात्र दीजिए,” और आगे कहा, “एक गृहस्थ अनुयायी होने के नाते, कृपया इधर आइए।” भिक्षु ने उसे अपना भिक्षापात्र दे दिया। वह उन्हें घर ले गई। फिर उस स्त्री ने वृद्ध भिक्षु का स्वागत किया और उनकी सेवा की। सेवा करते हुए उसने यह प्रार्थना की, “मेरे इस पुण्य कर्म के फलस्वरूप यहाँ देवदूतों के समान वैभव हो, देवदूतों के समान हाथी हों, शिखर वाले घर हों और दीवान हों, और यहाँ कभी कमल न खिलें।” जब वृद्ध भिक्षु ने भोजन कर लिया, तो उसने कटोरा धोकर उसमें घी, शहद, चीनी आदि भरकर आसन पर बिछे कपड़े की गठरी बनाई और उसे वृद्ध भिक्षु के हाथ में रख दिया। वृद्ध भिक्षु के विदा होने के बाद उसने दो पुरुषों को आदेश दिया, “यह पलंग और कटोरा मठ में ले जाओ, वृद्ध भिक्षु को दे दो और लौट आओ।” उन्होंने ऐसा ही किया। इसके बाद उसका निधन हो गया और वह तैंतीसवें लोक में सौ योजन ऊँचे स्वर्ण महल में पुनर्जन्म लेकर एक हजार अप्सराओं के दल के साथ रहने लगी। और उसकी आकांक्षा के कारण, उसके लिए पाँच योजन ऊँचा एक महान हाथी प्रकट हुआ। वह हाथी कमलों की मालाओं से सुशोभित था और सुनहरे अलंकृत वस्त्रों से लिपटा हुआ था।

अब एक उत्सव के दिन जब देव (देवदूत) अपनी-अपनी देव-समान शक्ति से नंदनवन (स्वर्ग) में आनंद लेने जा रहे थे... इसके आगे की कहानी प्रथम सिंहासन पर दिए गए विवरण के समान है। तो इसे उस कहानी के अनुसार ही समझा जाना चाहिए, लेकिन यहाँ इस बुजुर्ग (मोग्गलाना) ने निम्नलिखित पंक्तियाँ कही हैं:

1 "आपका हाथी, एक शानदार सवारी, विभिन्न रत्नों से सुशोभित, मनभावन, शक्तिशाली, तेज गति वाला, आकाश में सहजता से चलता है।

2 हे कमल की पंखुड़ियों जैसी आँखों वाले, नीले और लाल कमलों की चमक सुनने वाले, कमल के चूर्ण से ढके अंगों वाले, सुनहरे कमलों की मालाओं से सुशोभित, वह कमल के समान है।

3 कमलों से सजी, कमल की पंखुड़ियों से सुशोभित, दृढ़, मनमोहक, कष्टरहित सड़क पर, वह राजसी हाथी संयमित कदमों से चलता है।

4 जैसे ही वह आगे बढ़ता है, मधुर स्वर वाली सुनहरी घंटियाँ सुनाई देती हैं, उनकी ध्वनि पंचांग संगीत के समान है।

5 जब आप उस विशाल हाथी की पीठ पर बैठे हैं, तो आपका श्वेत वस्त्र, सुशोभित, अप्सराओं के विशाल समूह को भी सुंदरता में पार कर जाता है।

6 क्या यह आपके दान देने का परिणाम है, या फिर अभ्यास का?" क्या यह नैतिकता (शील) का परिणाम है, या हाथ जोड़कर खड़े होने का? जब आपसे यह प्रश्न पूछा जाए तो मुझे यह बता देना।

7 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का परिणाम है।

8 "विशेष गुणों से युक्त, सदा ध्यान में मग्न रहने वाले, सचेत ध्यानी को देखकर, मैंने उन्हें फूलों से ढकी और कपड़े की चटाई से आच्छादित कुर्सी भेंट की।

9 मैंने प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से कुर्सी के चारों ओर आधे कटे कमल के फूल और उनकी टूटी पंखुड़ियाँ बिखेर दीं।

10 मेरे इस परोपकार का यही फल है। मुझे देवताओं की सेवा और सम्मान प्राप्त हुआ है और मैं देवताओं द्वारा सम्मानित हूँ।

11 निश्चय ही जो प्रसन्नतापूर्वक समभाव से पूर्णतः प्रबुद्ध, संत और ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों को कुर्सी भेंट करे, वह मेरी ही तरह प्रसन्न होगा।

12 अतः अपने कल्याण की इच्छा रखने वाले, महानता की कामना करने वाले को अपने अंतिम शरीर धारण करने वालों को आसन देना चाहिए।" (अरिहंत, पूर्ण आध्यात्मिक जागृति और पुनर्जन्म रहित) कर्म/कारक)

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु1.6

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.6 -------------------------->>>> अगला

1.6 प्रथम नौका भवन (6)
(पथम-नव-विमान)

जब भगवान (भगवान बुद्ध) सावत्थी में निवास कर रहे थे, तब सोलह भिक्षु, जिन्होंने वर्षा ऋतु एक गाँव में बिताई थी, ग्रीष्म ऋतु में सावत्थी की ओर राजमार्ग पर यह कहते हुए चल पड़े, "हम भगवान (भगवान बुद्ध) के दर्शन करेंगे और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुनेंगे।" मार्ग में एक जलहीन रेगिस्तान था। और क्योंकि वे वहाँ गर्मी से बेहाल हो गए और उन्हें पानी नहीं मिला, इसलिए वे एक गाँव के आसपास के क्षेत्र में चले गए। वहाँ एक स्त्री पानी का घड़ा लिए कुएँ की ओर जा रही थी। भिक्षुओं ने उसे देखा और यह कहते हुए, "यदि हम वहाँ जाएँ जहाँ यह स्त्री जा रही है तो हमें पानी मिल जाएगा," वे उसके पीछे गए, कुआँ देखा और उसके पास रुक गए। उसने वहाँ से पानी निकाला और भिक्षुओं को देखा। "ये योग्य लोग प्यासे हैं," उसने मन ही मन कहा और अत्यंत आदरपूर्वक उन्हें पानी पीने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने अपने थैले से छलनी निकाली, पानी छाना और जितना चाहें उतना पिया, अपने हाथ-पैर ठंडे किए, पानी पिलाने

वाली स्त्री को धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गए। उस स्त्री ने उस पुण्य कर्म को अपने हृदय में संजोए रखा और समय-समय पर उसका स्मरण करती रही।

बाद में उसकी मृत्यु हो गई और उसका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में हुआ। उसके पुण्य कर्म के फलस्वरूप उसके लिए एक भव्य महल का निर्माण हुआ, जो मनोकामना पूरी करने वाले वृक्ष से सुशोभित था। उसके चारों ओर रत्नों के समान शुद्ध जल से भरी एक धारा बह रही थी, जिसके किनारे मोतियों और चांदी की माला के समान चमकते हुए सफेद रेत से ढके थे। उसके दोनों किनारों पर और महल के उद्यान के द्वार पर एक विशाल कमल का तालाब था, जो पांच रंगों के कमलों के समूह और एक सुनहरी नाव से सुशोभित था। देवी (देवदूत) वहां देव-आनंद का आनंद लेते हुए, नाव में क्रीड़ा और विश्राम कर रही थीं। फिर एक दिन पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना, जब देवियों के दर्शन के लिए यात्रा कर रहे थे, तब उन्होंने देवियों को इस प्रकार आनंदित होते देखा और कहा:

1 "हे देवी, आप एक सुनहरी छतरी वाली नाव में विराजमान हैं; आप कमल के तालाब में डुबकी लगाती हैं, अपने हाथ से एक कमल तोड़ती हैं।

2 आपके निवास शिखर वाले, विभाजित और सुनियोजित हैं। वे चारों दिशाओं में प्रकाशमान हैं।

3 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप यहाँ कैसे समृद्ध होती हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख कैसे प्राप्त होते हैं?

4 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेते समय आपने कौन सा पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा और सुंदरता सभी दिशाओं को कैसे प्रकाशित करती है?"

5 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर वह देवता प्रसन्न हुआ और जब उससे यह प्रश्न पूछा गया तो उसने बताया कि यह किस कर्म का परिणाम था।

6 "पिछले जन्म में जब मैं मनुष्य के रूप में मनुष्यों के बीच जन्मा, तो मैंने कुछ भिक्षुओं को प्यासा और थका हुआ देखा। मैंने उठकर उन्हें पानी पिलाया।"

7 निश्चय ही, जो व्यक्ति उठकर प्यासे और थके हुए लोगों को पानी पिलाता है, उसके लिए शीतल जल की धाराएँ बहुतायत से बहती हैं, फूलों से लदी रहती हैं और अनेक सफेद कमल खिलते हैं।

8 उसके पास सदा रेत से घिरी शीतल जल की धाराएँ बहती रहती हैं, वहाँ आम और साल के वृक्ष, तिलक और गुलाब के पेड़, कैसिया और तुरही के फूल पूर्ण रूप से खिले रहते हैं।

9 उसके लिए ऐसे परिवेश से उसकी सुंदरता और भी बढ़ जाती है, वह अपने उत्तम भवन में अत्यंत चमकता है। यह उसी कर्म का फल है। पुण्य कर्म करने वालों को ऐसा ही फल प्राप्त होता है।

10 मेरे निवास शिखर वाले, विभाजित और सुनियोजित हैं। वे चारों दिशाओं में चमकते हैं।

11 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होता हूँ, और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

12 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको अपने जन्म के समय किए गए पुण्य कर्मों के बारे में बताता हूँ। इसी कारण मेरा तेज और तेजस्वी रूप सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु1.7

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.7 -------------------------->>>> अगला

1.7 दूसरा नौका भवन (7)
(दुतिया-नव-विमान)

जब भगवान (बुद्ध) सावत्थी में निवास कर रहे थे, तब एक वृद्ध भिक्षु, जिनके सांसारिक विकार (इच्छाएँ) नष्ट हो गए थे, वर्षा ऋतु के आरंभ में किसी गाँव में निवास करना चाहते थे। दोपहर के भोजन के बाद वे सावत्थी से गाँव के लिए राजमार्ग पर निकल पड़े। यात्रा की थकान से थककर और प्यासे होकर वे एक गाँव में पहुँचे और एक मुखिया के द्वार पर रुके। वहाँ एक स्त्री ने उन्हें देखा और पूछा, "आप कहाँ से आए हैं, महोदय?" यह देखकर कि वे थके और प्यासे हैं, उन्होंने उनका घर में स्वागत किया और उन्हें बैठने के लिए कहा। उन्होंने उनके पैरों के लिए पानी और तेल दिया और उन्हें पंखा किया। जब उनकी गर्मी शांत हो गई, तो उन्होंने उनके लिए एक मीठा, ठंडा और सुगंधित पेय तैयार किया। वृद्ध भिक्षु ने उसे पिया और उनकी प्यास बुझ गई, उन्होंने स्त्री को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चले गए। बाद में उस स्त्री की मृत्यु हो गई और उसका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में हुआ। सब कुछ उसी प्रकार समझें जैसा कि पिछले लोक में बताया गया है। श्लोकों में भी कुछ नया नहीं है।

1 "हे देवी, आप सुनहरे चंदवा वाली नाव में विराजमान हैं; आप कमल के तालाब में डुबकी लगाती हैं, आप अपने हाथ से एक कमल तोड़ती हैं।

2 आपके निवास शिखर वाले, विभाजित, सुनियोजित अनुपात वाले हैं। वे चारों दिशाओं में चमकते हैं।

3 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप यहाँ कैसे समृद्ध होती हैं, और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख कैसे प्राप्त होते हैं?

4 हे देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी तेजस्वी महिमा ऐसी क्यों है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

5 मोग्गलाना द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर वह देवता प्रसन्न हुआ और जब उससे यह प्रश्न पूछा गया तो उसने बताया कि यह किस कर्म का परिणाम था।

6 पिछले जन्म में जब मैं मनुष्य के रूप में मनुष्यों के बीच जन्मा, तो मैंने एक भिक्षु को प्यासा और थका हुआ देखा। मैंने उठकर उसे पानी पिलाया।

7 निश्चय ही, जो उठकर प्यासे और थके हुए लोगों को पानी पिलाता है, उसके लिए फूलों से लदी ठंडी जलधाराएँ और अनेक सफेद कमल बहते

हैं। 8 उसके पास सदा बहती हुई जलधाराएँ, रेत से घिरी ठंडी जलधाराएँ, आम और साल के वृक्ष, तिलक और गुलाब, कैसिया और तुरही के फूल खिले रहते हैं। 9

ऐसे परिवेश से सुशोभित, उसके लिए वह सबसे सुंदर और चमकीला महल है। यह उसी कर्म का फल है। पुण्य कर्म करने वालों को ऐसा ही प्राप्त होता है।

10 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होता हूँ, और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

11 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको अपने जन्म के समय किए गए पुण्य कर्मों के बारे में बताता हूँ। इसी कारण मेरा तेज और तेजस्वी रूप सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.8

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.8 -------------------------->>>> अगला

1.8 तीसरा नौका भवन (8)
(तथ्य-नव-विमान)

जब भगवान (बुद्ध) भिक्षुओं के एक बड़े संघ के साथ प्रांत में यात्रा कर रहे थे, तब वे कोसल देश के थुना नामक एक ब्राह्मण गाँव में पहुँचे। थुना के ब्राह्मण (उच्च जाति के पुरोहित) गृहस्थों ने सुना, "वे कहते हैं कि संन्यासी गौतम (बुद्ध) हमारे गाँव के खेत में आए हैं।" अब ब्राह्मण गृहस्थ, जो अविश्वासी, भ्रामक मतों वाले और स्वभाव से लालची थे, कहने लगे, "यदि संन्यासी गौतम (बुद्ध) इस गाँव में प्रवेश करें और दो-तीन दिन ठहरें, तो वे इन सभी लोगों को अपने मार्ग पर स्थापित कर देंगे, तब ब्राह्मण धर्म का कोई आधार नहीं रह जाएगा।" और भगवान (बुद्ध) को वहाँ ठहरने से रोकने के प्रयास में उन्होंने नौकाओं को घाटों से हटा दिया और पुलों और मार्गों को अनुपयोगी बना दिया। उन्होंने एक को छोड़कर बाकी सभी कुओं को खरपतवारों आदि से भर दिया और पानी पीने के स्थानों, विश्राम गृहों और झोपड़ियों को छिपा दिया। उदाना में ऐसा ही बताया गया है।

भगवान बुद्ध को उनके कुकर्म का ज्ञान हुआ और उन पर दया करके वे भिक्षुओं के साथ वायु में उड़ते हुए नदी पार कर गए और कुछ समय बाद थुना नामक ब्राह्मण गाँव पहुँचे। उन्होंने मार्ग छोड़कर एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। उसी समय कई स्त्रियाँ पानी लेकर भगवान बुद्ध के पास से गुजर रही थीं। उस गाँव में एक नियम बना हुआ था, "यदि गौतम बुद्ध यहाँ आएँ, तो उनका कोई स्वागत या सत्कार नहीं किया जाएगा, और जब वे किसी घर में आएँ, तो न तो उन्हें और न ही उनके शिष्यों को भोजन दिया जाएगा।" तभी एक ब्राह्मण की दासी पानी का घड़ा लेकर जा रही थी, उसने देखा कि भगवान बुद्ध भिक्षुओं से घिरे हुए हैं। उसने देखा कि वे थके हुए और प्यासे हैं, और प्रसन्न मन से उन्हें पानी पिलाना चाहती थी। “यद्यपि इस गाँव के लोगों ने निश्चय किया है कि वे संन्यासी गौतम (बुद्ध) को कुछ भी नहीं देंगे और न ही उनका सम्मान करेंगे,” उसने मन ही मन कहा, “परन्तु, यदि इन सर्वोच्च पुण्य क्षेत्रों और पुण्य दान के योग्य प्राप्तकर्ताओं को पाकर भी मैं मात्र जल दान करके अपना भरण-पोषण न करूँ, तो अंततः कब इस दुःखमय जीवन से मुक्ति पाऊँगी? चाहे मेरे स्वामी और गाँव के सभी निवासी मुझे पीटें या बाँध दें, मैं फिर भी इस पुण्य क्षेत्र को जल दान करूँगी।” यह निश्चय करने के बाद, यद्यपि जल ढोने वाली अन्य स्त्रियों ने उसे रोकने का प्रयास किया, उसने अपने जीवन की परवाह किए बिना अपने सिर से जल का घड़ा नीचे उतारा, उसे एक तरफ रखा और प्रसन्नता से भगवान (बुद्ध) के पास पहुँची, पंचांग प्रणाम किया और उन्हें जल अर्पित किया। भगवान (बुद्ध) ने उसके मन की प्रसन्नता को पहचान लिया और उस पर कृपा करते हुए अपने हाथ-पैर धोए और जल ग्रहण किया। घड़े में पानी कम नहीं हुआ था। यह देखकर लड़की प्रसन्न हुई और उसने एक-एक करके सभी भिक्षुओं को पानी पिलाया। फिर भी पानी कम नहीं हुआ। प्रसन्न और उत्साहित होकर, और अपने घड़े को पहले की तरह भरा हुआ लिए वह घर चली गई।

उसके गुरु, ब्राह्मण (उच्च जाति के पुजारी), ने उसे पानी पिलाते हुए सुना। उन्होंने कहा, "इसने गाँव का नियम तोड़ा है और मेरा उपहास हुआ है।" क्रोध से आग बबूला होकर उन्होंने उसे ज़मीन पर पटक दिया और हाथों-पैरों से पीटा। उस पिटाई के कारण उसकी मृत्यु हो गई और वह तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लेकर आई, और उसके लिए प्रथम नौका भवन में वर्णित भवन के समान एक भवन का निर्माण हुआ।

अब भगवान बुद्ध ने आदरणीय भिक्षु आनंद को संबोधित करते हुए कहा, "आनंद, आओ, मेरे लिए कुएँ से पानी लाओ।" आनंद ने कहा, "हे पूज्यवर, यह कुआँ थून के लोगों द्वारा प्रदूषित हो गया है। मैं पानी नहीं ला सकता।" लेकिन भगवान बुद्ध ने उन्हें दूसरी और

तीसरी बार आज्ञा दी। तीसरी बार आनंद ने भगवान बुद्ध का कटोरा लिया और कुएँ की ओर चल पड़े। जैसे ही वे गए, कुएँ का पानी ऊपर तक भर गया, छलक कर चारों ओर बहने लगा।

सारा कूड़ा ऊपर तैरने लगा और बह गया। बढ़ते पानी से अन्य जलस्रोत भी भर गए, गाँव चारों ओर से घिर गया और गाँव के आसपास का क्षेत्र जलमग्न हो गया। ब्राह्मणों ने यह चमत्कार देखा और आश्चर्य और विस्मय से भर कर भगवान बुद्ध से क्षमा प्राप्त की। तुरंत ही बाढ़ का पानी गायब हो गया। उन्होंने भगवान बुद्ध और भिक्षु संघ के लिए ठहरने की व्यवस्था की, उन्हें अगले दिन के लिए आमंत्रित किया, और अगले दिन, बड़ी मात्रा में भिक्षा तैयार करके, बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षु संघ को उत्तम पौष्टिक और कोमल भोजन भेंट किया; और जब भगवान बुद्ध ने अपना भोजन समाप्त कर लिया और कटोरे से अपना हाथ हटा लिया, तो थून के सभी लोग उनके चारों ओर श्रद्धापूर्वक बैठ गए।

उसी क्षण देवी ने अपनी उपलब्धि पर विचार किया और महसूस किया कि इसका कारण उनका पीने का पानी दान करना था। प्रसन्नता से परिपूर्ण होकर उसने कहा, "अच्छा, अब मैं भगवान बुद्ध को प्रणाम करूंगी। मैं मनुष्यों के बीच यह बात प्रकट करूंगी कि सही मार्ग पर चलने वालों के लिए तुच्छ कर्म भी कितने फलदायी होते हैं।" और उत्साह से भरी हुई, अपने हजार अप्सराओं के दल, अपने उद्यान आदि और अपने महल के साथ, वह महान देवदूत-समान भव्यता से जनसमूह के समक्ष पहुंची। वह महल से उतरी, भगवान बुद्ध के पास पहुंची, उन्हें प्रणाम किया और श्रद्धापूर्वक खड़ी हो गई। तब भगवान बुद्ध ने अपने सामने उपस्थित जनसमूह को पुण्य का फल स्पष्ट करने की इच्छा से उनसे पूछा:

1 "हे देवी, आप स्वर्णिम चंदवा वाली नौका में विराजमान हैं; आप कमल-कुंड में डुबकी लगाती हैं और अपने हाथों से कमल तोड़ती हैं।

2 आपके घर शिखर वाले हैं, विभाजित हैं, अनुपात के अनुसार सुनियोजित हैं, और चारों दिशाओं में प्रकाश फैलाते हैं।

3 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप यहाँ कैसे समृद्ध होती हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख कैसे प्राप्त होते हैं?

4 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, आपने मनुष्य के रूप में जन्म लेकर कौन सा पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा और सुंदरता सभी दिशाओं को कैसे प्रकाशित करती है?"

5 स्वयं आत्मज्ञानी (बुद्ध) द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर वह देवता (देवदूत) प्रसन्न हुआ और जब उससे प्रश्न पूछा गया तो उसने बताया कि यह किस कर्म का परिणाम था।

6 "पिछले जन्म में जब मैं मनुष्य के रूप में मनुष्यों के बीच, मनुष्यों के संसार में जन्मा, तो मैंने प्यासे और थके हुए भिक्षुओं को देखा। मैंने उठकर उन्हें पानी पिलाया।

7 निश्चय ही, जो उठकर प्यासे और थके हुए लोगों को पानी पिलाता है, उसके लिए फूलों से लदे ठंडे जल के झरने और अनेक सफेद कमल बहेंगे।

8 उसके पास बहते जल, रेत से घिरे ठंडे जल के झरने सदा बहते रहेंगे; वहाँ आम के वृक्ष, साल के वृक्ष, तलक के वृक्ष, गुलाब के वृक्ष, कैसिया और तुरही के फूल पूरी तरह खिले रहेंगे। 9

उसके लिए, ऐसे परिवेश से उसकी सुंदरता और भी बढ़ जाती है, वह सबसे उत्तम, अत्यंत चमकीला महल है। यह उसी कर्म का फल है। पुण्य कर्म करने वालों को ऐसा ही प्राप्त होता है।

10 मेरे निवास शिखर वाले, विभाजित, सुनियोजित अनुपात वाले घर हैं। वे चारों दिशाओं में चमकते हैं।

11 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है।" इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होता हूँ, और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

12 इसी कारण मेरी तेजस्वी महिमा ऐसी है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है। यह मेरे उस कर्म का फल है जब जागृत बुद्ध ने मेरे द्वारा दिए गए जल को पिया।

फिर भगवान बुद्ध ने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देते हुए सत्यों की व्याख्या की। उपदेश के अंत में, सोतपान (आध्यात्मिक जागृति का पहला चरण) के फलस्वरूप उस देवता की स्थापना हुई।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु1.9

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- I.1.9 ------------------------->>>> अगला

1.9 दीप भवन (9)
(दीप-विमान)

जब भगवान (बुद्ध) श्रावस्ती में निवास कर रहे थे, एक व्रत दिवस (उपोसथ, पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) पर, अनेक गृहस्थ अनुयायियों, पुरुष और स्त्री दोनों ने, उस दिन के पालन में, सुबह के समय अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान किया, समय पर भोजन किया और स्वच्छ वस्त्र और चादर ओढ़कर, हाथों में इत्र और फूल लेकर दोपहर में मठ गए, मन को प्रेरित करने वाले भिक्षुओं की सेवा की और शाम को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना। जब वे अभी भी सुन ही रहे थे और मठ में रात बिताना चाहते थे, तभी अंधेरा हो गया। तब एक स्त्री ने सोचा, "यहाँ एक दीपक जलाना चाहिए" और वह अपने घर से एक दीपक और उसे जलाने की सामग्री लाई, दीपक जलाया, उसे धम्म आसन के सामने रखा और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना। दीपक के उपहार से प्रसन्न होकर वह आनंद और प्रसन्नता से भर उठी और प्रणाम करने के बाद अपने घर चली गई। बाद में उसका निधन हो गया और वह तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में रत्नजड़ित एक महल में पुनर्जन्म हुई। लेकिन उसके शरीर की चमक इतनी अधिक थी कि वह अन्य देवों (देवदूतों) को भी मात दे गई और दस दिशाओं में प्रकाश फैलाया। एक दिन पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा मोग्गलाना एक दावा यात्रा पर निकले... (जैसा कि पहले के वृत्तांतों में है)। लेकिन यहाँ उन्होंने तीन श्लोकों के साथ अपना प्रश्न पूछा;

1 “हे देवता, आप अतुलनीय सौंदर्य से परिपूर्ण हैं और समस्त दिशाओं को प्रकाशमान कर रही हैं, जैसे कोई दिव्य तारा।

2 आपका सौंदर्य ऐसा क्यों है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख क्यों प्राप्त होते हैं?

3 हे पवित्रता के तेज से परिपूर्ण, समस्त दिशाओं से परे चमकने वाली आप किस कारण से हैं? आपके सभी अंगों के कारण समस्त दिशाएँ किस कारण से प्रकाशमान हैं?

4 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपका तेजस्वी तेज ऐसा क्यों है और आपका सौंदर्य समस्त दिशाओं को प्रकाशित क्यों करता है?”

5 मोग्गलाना द्वारा पूछे गए प्रश्न से प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

6 "पिछले जन्म में, मैं मनुष्यों के बीच, मनुष्यों के संसार में एक मनुष्य के रूप में जन्मा। जब घोर अंधकार छाई हुई थी, एक काली रात में, मैंने उस समय एक दीपक जलाया जब उसे प्रकाश देने की आवश्यकता थी।

7 जो घोर अंधकार में, एक काली रात में, उस समय एक दीपक जलाता है जब उसे प्रकाश देने की आवश्यकता होती है, वह पुष्पों से परिपूर्ण, अनेक सफेद कमलों से युक्त, तेजस्वी रत्नों के महल में विराजमान होता है।

8 क्योंकि मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ-वहाँ समृद्ध होता हूँ और जो भी सुख मेरे हृदय को प्रिय हैं, वे सब उत्पन्न होते हैं।"

9 इसी कारण मैं पवित्रता के प्रकाश से परिपूर्ण, सभी देवताओं से अधिक तेजस्वी देवता हूँ। इसी कारण मेरे सभी अंगों से समस्त दिशाएँ प्रकाशित होती हैं।

10 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको अपने जन्म के समय किए गए पुण्य कर्मों के बारे में बताता हूँ। इसी कारण मेरा तेजस्वी तेज और मेरा सौंदर्य समस्त दिशाओं को प्रकाशित करता है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.10

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.10 --------------------------->>>> अगला

1.10 तिलदान गृह (10)
(तिल-दक्षिणा-विमान)

भगवान बुद्ध सावत्थी में, जेतवन में अनाथपिंडिका के उद्यान में ठहरे हुए थे। उसी समय राजगृह में एक गर्भवती स्त्री तिल धोकर धूप में सुखा रही थी क्योंकि वह थोड़ा सा तिल का तेल पीना चाहती थी। उसका जीवनकाल अब समाप्त हो चुका था और उसी दिन उसकी मृत्यु निश्चित थी, और उसके संचित कर्म नरक में पुनर्जन्म का कारण बन रहे थे। भोर के समय पृथ्वी का अवलोकन करते हुए भगवान बुद्ध ने उसे दिव्य दृष्टि से देखा और सोचा, "आज मरने वाली यह स्त्री नरक में पुनर्जन्म ले सकती है; इसलिए, मैं तिल भिक्षा ग्रहण करके उसे स्वर्ग पहुंचा दूं।" कुछ ही क्षणों में वे सावत्थी से राजगृह गए और राजगृह में भिक्षा मांगते हुए उसके घर के द्वार पर पहुंचे। उस स्त्री ने भगवान बुद्ध को देखा और आनंद से भर उठी, अचानक उठ खड़ी हुई, हाथ जोड़कर, और कुछ और देने के लिए उचित न देखकर, उसने अपने हाथ-पैर धोए और कुछ तिल इकट्ठा करके, दोनों हाथों को हथेली में भरकर, मुट्ठी भर तिल भगवान बुद्ध के कटोरे में डाल दिए। भगवान बुद्ध ने उस पर दया करते हुए कहा, "खुश रहो," और अपने मार्ग पर चले गए। उसी रात भोर के समय, उस स्त्री की मृत्यु हो गई और तैंतीसवें लोक में बारह योजन वाले स्वर्ण महल में उसका पुनर्जन्म हुआ। जैसा कि ऊपर वर्णित है, आदरणीय भिक्षु महा मोग्गलाना देव-यात्रा पर निकले हुए उस स्त्री से मिले और उससे पूछा:

1 हे देव-देवता, तुम अत्यंत सुंदर हो, तुम सभी दिशाओं को उपचार करने वाले तारे के समान प्रकाशमान कर रही हो।

2 तुम्हारी सुंदरता का कारण क्या है? आप यहाँ-वहाँ क्यों समृद्ध होती हैं और जब भी आपके मन को प्रिय सुख प्राप्त होते हैं, तो आप वहाँ प्रकट होती हैं?

3 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, आपने मनुष्य रूप में रहते हुए क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित क्यों करता है?

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "पिछले जन्म में जब मैं मनुष्य जगत में मनुष्य के रूप में जन्मा, तो मैंने निर्मल, शांत और विक्षिप्त बुद्ध को देखा।

6 उनसे मिलकर प्रसन्न होकर मैंने निःसंकोच अपने हाथों से तिल का दान दिया, जो बुद्ध के लिए सम्माननीय था।

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ-वहाँ समृद्ध होती हूँ और मेरे मन को प्रिय सुख प्राप्त होते हैं।

8 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको अपने जन्म के समय किए गए पुण्य कर्मों के बारे में बताता हूँ। इसी कारण मेरा तेज और तेज है, और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.11

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<------------------------ I.1.11 --------------------------->>>> अगला

1.11 प्रथम पवित्र पत्नी का निवास (11)
(पथम-पतिब्बत-विमान)

भगवान (बुद्ध) श्रावस्ती में निवास कर रहे थे। उस नगर में एक पवित्र पत्नी रहती थी। वह अपने पति के साथ सद्भावपूर्वक रहती थी, धैर्यवान और बुद्धिमान थी; क्रोध करने पर भी वह कठोर नहीं होती थी; उसकी वाणी मधुर थी, वह सत्यनिष्ठा से परिपूर्ण और आनंदित मन वाली थी, और वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान देती थी। किसी रोग से पीड़ित होकर उसकी मृत्यु हो गई और वह तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लेकर लौटी। शेष वर्णन पहले जैसा ही है।

1 "दिव्य बगुले, मोर, (सुनहरे) हंस और मधुर स्वर वाली कोयल इस रमणीय, रंग-बिरंगे फूलों से सजे महल के चारों ओर उड़ते हैं, जहाँ पुरुष और स्त्रियाँ आते-जाते रहते हैं।

2 हे महान महिमा की देवी, आप वहाँ अपनी मानसिक शक्ति से अनेक रूप धारण करके विराजमान हैं। और आपकी अप्सराएँ चारों ओर नाचती, गाती और आनंदित होती हैं।

3 हे महान महिमा की देवी, आपने देवों की मानसिक शक्ति प्राप्त कर ली है। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी किस तेजस्वी महिमा के कारण आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का परिणाम है।

5 "जब मैं मनुष्य के बीच जन्मी, तो मैं एक पवित्र पत्नी थी, जो किसी और (पुरुष) के बारे में नहीं सोचती थी। एक माँ की तरह जो अपने बच्चे की रक्षा करती है, मैं क्रोधित होने पर भी कठोर शब्द नहीं बोलती थी।

6 सत्य में दृढ़ रहकर, झूठ से दूर रहकर, दान देने में आनंदित होकर, दयालु स्वभाव की होकर, आनंदित मन से मैंने आदरपूर्वक भोजन और पेय दिया, और भरपूर दान दिया।

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होती हूँ, और वहाँ वे सभी चीजें उत्पन्न होती हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

8 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको अपने उस पुण्य कर्म के बारे में बताती हूँ जो मैंने मनुष्य के रूप में जन्म लेते समय किए थे। इसी कारण मेरा तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.12

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<----------------------- I.1.12 -------------------------->>>> अगला

1.12 दूसरी पवित्र पत्नी का निवास (12)
(दुतिया-पतिब्बत-विमान)

श्रावस्ती में कहा गया है कि वह एक और गृहस्थ महिला थीं, जो बुद्ध की अनुयायी थीं और पवित्र पत्नी थीं, जिनमें आस्था और आनंद था। उन्होंने पांच नियमों (शील, नैतिकता) का पालन किया, अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान दिया और मृत्यु के बाद तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लिया। शेष का वर्णन पहले ही किया जा चुका है।

1 "हे महान महिमावान देवी (देवदूत), आप बेरिल के स्तंभों से सजे, चमकते, तेजस्वी और विभिन्न रंगों वाले महल में विराजमान हैं। वहाँ आप निवास करती हैं।

2 और आपकी अप्सराएँ चारों ओर नृत्य, गायन और आनंद मनाती हैं। आप देवों की समान शक्ति से संपन्न हैं, महान महिमावान देवी। मनुष्य के रूप में जन्म लेने पर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी तेजस्वी महिमा और सुंदरता किस कारण से सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

3 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता (देवदूत) ने उस कर्म का उत्तर दिया जिसके फलस्वरूप यह हुआ।

4 "जब मैं मनुष्य के बीच एक मनुष्य के रूप में जन्मी, तो मैं दिव्यदर्शी की अनुयायी एक गृहस्थ स्त्री थी। मैं प्राणियों की हत्या से परहेज करती थी, इस संसार में जो कुछ मुझे नहीं दिया गया था, उसका त्याग करती थी।

5 मैं शराब नहीं पीती थी, न ही झूठ बोलती थी, मैं अपने पति से संतुष्ट थी। प्रसन्न मन से मैं आदरपूर्वक भोजन और पेय देती थी, उदारतापूर्वक दान करती थी।

6 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होती हूँ, और वहाँ वे सभी वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

7 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको बताती हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेने पर मैंने क्या पुण्य कर्म किए? इसी कारण मेरा तेजस्वी तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.13


पिछला <<<<----------------------- I.1.13 -------------------------->>>> अगला

1.13 प्रथम बहू का निवास (13)
(पथम-सुनीसा-विमान)

श्रावस्ती में एक घर में, एक अच्छे परिवार की बहू ने एक वृद्ध भिक्षु को, जिन्होंने सांसारिक इच्छाओं का नाश कर लिया था, भिक्षा मांगने घर आते देखा। प्रसन्नता और आनंद से भर कर, यह सोचकर कि "मेरे लिए सर्वोच्च पुण्य का क्षेत्र उत्पन्न हुआ है", उसने अपने लिए प्राप्त धान की रोटी का हिस्सा आदरपूर्वक उस वृद्ध भिक्षु को दे दिया। वृद्ध भिक्षु ने उसे स्वीकार किया, धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गए। बाद में बहू की मृत्यु हो गई और वह तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लिया। शेष सभी विवरण ऊपर बताए गए अनुसार ही है।

1 “हे देवता, आप अतुलनीय सौंदर्य से परिपूर्ण हैं और समस्त दिशाओं को प्रकाशमान कर रही हैं, जैसे कोई दिव्य तारा।

2 आपका सौंदर्य ऐसा क्यों है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख क्यों प्राप्त होते हैं?

3 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपका यह तेजस्वी स्वरूप ऐसा क्यों है और आपका सौंदर्य समस्त दिशाओं को प्रकाशित करता है?”

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे गए प्रश्न से प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "जब मेरा जन्म मनुष्य के रूप में हुआ, तब मैं अपने ससुर के घर में बहू थी। मैंने एक निर्मल, शांत और शांत मन वाले साधु को देखा।

6 मैंने प्रसन्न मन से उन्हें अपने हाथों से चावल की रोटी दी। उन्हें अपने भाग का आधा हिस्सा देकर मैं नंदनवन में आनंदित हुई।

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होती हूँ और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

8 इसी कारण मेरा तेज और तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.14

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.14 -------------------------->>>> अगला

1.14 दूसरी बहू का महल (14)
(दुतिया-सुनीसा-विमान)

पिछले महल के समान, सिवाय इसके कि यहाँ दान कुम्मस था।

1 "हे देवता (परी), आप अत्यंत सुंदर हैं और समस्त दिशाओं को उपचारक तारे के समान प्रकाशित कर रही हैं।

2 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख क्यों उत्पन्न होते हैं?

3 हे महान महिमा की देवी (परी), मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया था? आपकी तेजस्वी महिमा ऐसी क्यों है और आपकी सुंदरता समस्त दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता (परी) ने प्रश्न पूछे जाने पर बताया कि यह किस कर्म का परिणाम था।

5 "जब मेरा जन्म मनुष्य के रूप में हुआ, तो मैं अपने ससुर के घर में बहू थी। मैंने एक निर्मल, शांत और विक्षिप्त भिक्षु को देखा।

6 मैंने प्रसन्न मन से उन्हें अपने हाथों से कुम्मस का एक टुकड़ा दिया। कुम्मस का एक टुकड़ा देकर मैं नंदनवन में आनंदित होती हूँ।

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होती हूँ और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

8 इसी कारण मेरा तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु1.15

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.15 -------------------------->>>> अगला

1.15 उत्तरा का महल (15)
(उत्तरा-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में बांस के जंगल में गिलहरियों के चरने की जगह पर निवास कर रहे थे। उस समय पुन्ना नाम का एक गरीब आदमी राजगृह के एक साहूकार पर आश्रित था। उसकी पत्नी उत्तरा और बेटी उत्तरा ही उसके घर में दो ही लोग थे। एक दिन राजगृह में सात दिन का त्योहार था। साहूकार को इसकी सूचना मिली और जब पुन्ना सुबह जल्दी आया तो उसने कहा, "मेरे प्रिय, हमारे नौकर त्योहार मनाना चाहते हैं, क्या तुम त्योहार मनाओगे या मजदूरी के लिए काम करोगे?" पुन्ना ने कहा, "मालिक, त्योहार जैसी चीजें तो अमीरों के लिए होती हैं, और मेरे घर में तो कल के लिए दलिया बनाने के लिए चावल भी नहीं हैं। मेरे लिए त्योहार क्या मायने रखता है? अगर मुझे बैल मिल जाएं तो मैं हल चलाऊंगा।" मालिक ने कहा, "ठीक है, तो बैल ले लो।" पुन्ना ने बलवान बैल और एक उत्तम हल लिया और अपनी पत्नी से कहा, "मेरी प्रिय, नगरवासी एक त्योहार मना रहे हैं। हम गरीब हैं, इसलिए मैं मजदूरी करने जा रहा हूँ, लेकिन आज मेरे लिए दुगुना भोजन पकाकर ले आओ।" फिर वह खेत में चला गया।

अब बड़े सारिपुत्त, जो सात दिनों से निरोध समाधि में थे , वहाँ से निकले और संसार का अवलोकन करते हुए सोचने लगे, "आज मुझे किस पर कृपा करने का अवसर मिलेगा?" उन्होंने देखा कि पुन्ना उनकी दृष्टि में आ गया है, और आगे अवलोकन करते हुए उन्होंने सोचा, "क्या यह व्यक्ति विश्वासी है? क्या वह मुझ पर कृपा करेगा?" यह जानकर कि पुन्ना विश्वासी है और कृपा करने में सक्षम है, और इस कारण उसे महान प्राप्ति हुई, उन्होंने कुंड और वस्त्र लिया, उस खेत में गए जहाँ वे हल चला रहे थे, और खेत के किनारे एक झाड़ी को देखते हुए वहाँ खड़े हो गए।

पुन्ना ने जैसे ही बुजुर्ग को देखा, उसने हल चलाना रोक दिया, पांचों प्रकार से उनका अभिवादन किया और मन ही मन कहा, "इन्हें दाँत साफ करने के लिए लकड़ी चाहिए," और उन्हें एक लकड़ी दे दी, जिसका उपयोग वे कर सकते थे। तब बुजुर्ग ने अपने थैले से कटोरा और पानी छानने वाली छलनी निकाली और उन्हें देते हुए मन ही मन कहा, "इन्हें पीने का पानी चाहिए।" पुन्ना ने उसे लिया, पानी छानकर पुन्ना को दे दिया। बुजुर्ग ने सोचा, "यह आदमी सबसे आखिरी घर में रहता है। अगर मैं घर के दरवाजे पर जाऊँगा, तो उसकी पत्नी मुझे देख नहीं पाएगी। मैं यहीं रुकूँगा जब तक उसकी पत्नी भोजन लेकर मुख्य मार्ग पर नहीं निकल जाती।" वह थोड़ी देर वहीं रुका रहा, और जब उसे पता चला कि उसकी पत्नी रास्ते में है, तो वह शहर की ओर चल पड़ा। जब उस स्त्री ने सड़क पर उस बुजुर्ग को देखा, तो उसने सोचा, "कभी-कभी जब मेरे पास कुछ देने लायक होता है, तो मुझे कोई योग्य व्यक्ति नहीं मिलता; कभी-कभी जब मुझे कोई योग्य व्यक्ति दिखता है, तो देने लायक कुछ नहीं होता, लेकिन आज मुझे एक योग्य व्यक्ति दिख रहा है और साथ ही मेरे पास देने लायक एक उपहार भी है। ज़रूर वे मुझ पर कृपा करेंगे।" उसने भोजन से भरी थाली नीचे रख दी, पांच प्रकार के आदर के साथ बुजुर्ग का अभिवादन किया और कहा, "हे प्रभु, यह साधारण भोजन है या उत्तम, इस बात की परवाह किए बिना, अपनी सेविका पर कृपा कीजिए।" तब बुजुर्ग ने अपना कटोरा आगे बढ़ाया, और जब वह एक हाथ से थाली पकड़े हुए दूसरे हाथ से उन्हें चावल दे रही थी, तो ठीक आधी थाली परोसी जाने पर उन्होंने "बस करो" कहा और अपने कटोरे को हाथ से ढक लिया। उसने कहा, "महोदय, एक भाग को दो भागों में नहीं बाँटा जा सकता। यदि आप इस लोक में अपने सेवक पर कोई कृपा नहीं करेंगे, तो परलोक के लिए एक कृपा कीजिए। मैं सब कुछ देना चाहती हूँ, बिना कुछ भी शेष रखे।" ऐसा कहते हुए और सारा भोजन उनके कटोरे में डालते हुए उसने प्रार्थना की, "मुझे उस धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) में भागीदार बनने दीजिए जिसे आपने प्राप्त किया है।" बड़े ने कहा, "ऐसा ही हो।" खड़े-खड़े ही उन्होंने उसका धन्यवाद किया और जब वे पानी के पास एक सुविधाजनक स्थान पर बैठ गए, तो उन्होंने अपना भोजन किया। स्त्री घर गई, कुछ चावल ढूँढे और भोजन पकाया। इस बीच पुन्ना ने आधा करिसा भूमि जोत ली थी और भूख सहन न कर पाने के कारण बैलों को जोतकर एक पेड़ की छाया में जाकर सड़क को देखने के लिए बैठ गया। अब जब उनकी पत्नी भोजन लेकर जा रही थीं और उन्होंने उन्हें देखा तो उन्होंने सोचा, "वह भूख से व्याकुल होकर मेरा इंतजार कर रहे हैं। अगर वह मुझे कोसते हुए कहें, 'वह बहुत देर से आई है', और मुझे अंकुश से मारें, तो मेरा

किया हुआ कर्म व्यर्थ हो जाएगा। मैं पहले उनसे बात कर लूँगी ताकि ऐसा न हो।" इसी विचार से उन्होंने कहा, "गुरुजी, आज केवल एक दिन के लिए हृदय में उत्साह जगाइए, मेरे किए हुए कर्म को व्यर्थ न होने दीजिए। मैं आपका भोजन सुबह-सुबह ला रही थी, रास्ते में मुझे धर्म के सरदार मिले। मैंने उन्हें आपका भोजन दिया, फिर मैं घर जाकर भोजन पकाया।"और आ गए हैं। हे स्वामी, उत्साह बढ़ाओ।" उसने पूछा, "पत्नी, तुम क्या कह रही हो?" और जब उसने कहानी दोबारा सुनी तो उसने कहा, "पत्नी, तुमने बिल्कुल सही किया कि मेरा भोजन इस योग्य व्यक्ति को दिया। मैंने भी आज सुबह-सुबह उसे दाँत साफ करने के लिए एक स्टिक और मुँह के लिए पानी दिया।" और प्रसन्न मन से वह उसकी कहानी सुनकर संतुष्ट हो गया और दिन में देर से भोजन करने के कारण थका हुआ होने के कारण उसने अपना सिर उसकी गोद में रख दिया और सो गया।

सुबह-सुबह जोती गई सारी ज़मीन, यहाँ तक कि कुटी हुई मिट्टी भी, सुनहरी चमक उठी और कनिकारा फूलों के ढेर की तरह दमक उठी। जब पुन्ना जागा तो उसने देखा और अपनी पत्नी से कहा, "पत्नी, ये सारी जोती हुई ज़मीन मुझे सोने जैसी लग रही है। अब बताओ, क्या मेरी आँखें इसलिए धुंधली हो रही हैं क्योंकि मैंने दोपहर में देर से खाना खाया?" "स्वामी," उसने कहा, "मुझे भी ऐसा ही लग रहा है।" वह उठा, वहाँ गया, एक मिट्टी का ढेला उठाया, उसे हल के सिर पर मारा, देखा कि वह सोने का है, और चिल्लाया, "आहा, धर्म के पूजनीय सरदार को दिए गए दान का फल आज ही प्रकट हो गया है। लेकिन इतनी दौलत का छुपकर आनंद लेना मुमकिन नहीं है।" उसने अपनी पत्नी द्वारा लाए गए थाले को सोने से भर दिया, राजा के महल में गया और राजा (बिम्बिसार) से अनुमति लेकर अंदर प्रवेश किया और प्रणाम किया। जब राजा ने पूछा, "क्या बात है मेरे जन?" तो उसने कहा, "महाराज, आज मैंने जिस भूमि को जोता था, वह पूरी तरह से सोने के ढेर से भर गई है और वैसी ही पड़ी है। सोना मंगवाना चाहिए।" "तुम कौन हो?" राजा ने पूछा। पुन्ना ने कहा, "मेरा नाम पुन्ना है।" राजा ने पूछा, "लेकिन आज तुमने क्या किया है?" पुन्ना ने कहा, "आज सुबह बहुत जल्दी मैंने धम्म के सेनापति को दाँत साफ करने के लिए टॉफी और मुँह के लिए पानी दिया, और मेरी पत्नी ने भी उन्हें वह भोजन दिया जो मेरे लिए लाया गया था।" यह सुनकर राजा ने कहा, "आज ही दिए गए दान का फल मिलेगा," और उन्होंने पूछा, "हे मेरे जन, हम क्या करें?" पुन्ना ने कहा, "हजारों गाड़ियाँ भेजो और सोना मंगवाओ।" राजा ने गाड़ियाँ भेज दीं। जब राजा के सैनिक सोना उठाते हुए कह रहे थे, "यह राजा का है," तो हर टुकड़ा उठाते ही मिट्टी बन गया। जब वे राजा के पास गए और उन्हें बताया तो राजा ने पूछा, "हे मेरे जन, तुमने इसे उठाते समय क्या कहा था?" और उन्होंने उत्तर दिया, "कि यह आपका है।" राजा ने कहा, "तो फिर, हे मेरे जन, फिर जाओ और इसे उठाते समय कहो, यह पुन्ना का है।" उन्होंने ऐसा ही किया। उठाया गया हर टुकड़ा सोना ही रहा। वे सब कुछ लाकर राजमहल के प्रांगण में ढेर लगा दिया। ढेर 80 हाथ ऊंचा था। राजा ने नगरवासियों को बुलाया। उन्होंने उनसे पूछा, "क्या इस नगर में किसी के पास इतना सोना है?" उत्तरदाताओं ने कहा, "कोई नहीं, महाराज।" "लेकिन इस आदमी को क्या दिया जाना चाहिए?" उत्तरदाता ने कहा, "एक सेठी (धनी व्यक्ति) का छाता, महाराज।" राजा ने कहा, "उसे महान धनवान सेठी होने दो," और उसे एक सेठी का छाता और बहुत सारा धन दे दिया। तब पुन्ना ने राजा से कहा, "महाराज, हम इतने समय से किसी और के घर में रह रहे हैं। हमें रहने के लिए जगह दीजिए।" राजा ने कहा, "तो फिर, देखिए। यह जंगल जैसा दिखता है। इसे साफ कीजिए और एक घर बनाइए," और उन्होंने उसे एक पूर्व सेठी के घर की जगह दिखाई।कुछ ही दिनों के भीतर उन्होंने उस स्थान पर एक घर बनवा लिया, और घर में प्रवेश करने की रस्म और अपने पद की दीक्षा समारोह, दोनों को एक साथ संपन्न करते हुए, उन्होंने बुद्ध के नेतृत्व वाले भिक्षु संघ को सात दिनों तक दान दिया।

इसके बाद राजगाह के धनाधिपति ने अपने पुत्र के लिए पुन्ना की पुत्री का विवाह मांगा। पुन्ना ने कहा, "मैं उसे नहीं दूंगा।" धनाधिपति ने कहा, "ऐसा मत करो, तुम्हें अपना सौभाग्य उसी समय मिला जब तुम हमारे साथ रह रहे थे। अपनी पुत्री को मेरे पुत्र को दे दो। मेरी पुत्री तीन रत्नों (बुद्ध में आस्था, धम्म/मार्ग और संघ) के बिना नहीं रह सकती। इसलिए मैं अपनी पुत्री उसे नहीं दूंगा।" तब कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने उनसे विनती की, "इस व्यक्ति से अपनी मित्रता मत तोड़ो। उसे अपनी पुत्री दे दो।" उन्होंने उनकी विनती मान ली और आषाढ़ माह की पूर्णिमा के दिन अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। वह अपने पति के घर चली गई।

उसके जाने के बाद से उसे भिक्षु या भिक्षुणी के पास जाने, भिक्षा देने या धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुनने की अनुमति नहीं थी। जब ढाई महीने बीत गए, तो उसने अपने सेवकों से पूछा, "अब बरसात का मौसम कितना बचा है?" उन्होंने कहा, "आधा महीना, महोदया।" उसने अपने पिता को संदेश भेजा, "उन्होंने मुझे ऐसी कैद में क्यों डाल दिया है? मुझे इस तरह के अविश्वासी परिवार में सौंपने से बेहतर होता कि आप मुझे दाग लगाकर दूसरों की दासी घोषित कर देते। जब से मैं यहाँ आई हूँ, मुझे एक भी पुण्य कर्म करने की अनुमति नहीं दी गई है, यहाँ तक कि किसी भिक्षु को देखने तक की भी नहीं।" अब उसके पिता ने अपना दुख व्यक्त करते हुए कहा, "हाय, मेरी बेटी

कितनी अभागी है!" फिर उन्होंने उसे पंद्रह हजार कहपना (कांस्य के सिक्के) भिजवाए और संदेश भेजा: "इस शहर में एक वेश्या है, जिसका नाम सिरीमा है। वह प्रतिदिन एक हजार (कांस्य के सिक्के) लेती है। इस धन से उसे अपने पास बुलाओ, उसे अपने पति को सौंप दो, और तुम अपने पुण्य कर्म अपनी इच्छानुसार करो।" उत्तरा ने ऐसा ही किया, और जब उसके पति ने सिरीमा को देखा तो उसने कहा, "यह क्या है?" उसने उत्तर दिया, "पतिदेव, इस आधे महीने के लिए मेरी यह सहेली आपकी देखभाल करे, लेकिन इस आधे महीने के लिए मैं केवल भिक्षा देना और धर्म का पाठ करना चाहती हूँ।" उसने उस सुंदर स्त्री को अभिमानी दृष्टि से देखा और सहमति जताते हुए कहा, "ठीक है।" उत्तरा ने बुद्ध के नेतृत्व में संघ को निमंत्रण भेजा, "आदरणीय महोदय, इस आधे महीने के लिए कहीं और न जाइए, केवल यहीं भिक्षा ग्रहण कीजिए।" और जब उसे गुरु (बुद्ध) की सहमति मिल गई, तो उसने कहा, "अब से लेकर पवार्ना (वर्षा ऋतु के बाद होने वाला महान निमंत्रण समारोह) तक, मैं गुरु (बुद्ध) की सेवा कर सकूँगी और धर्म का पाठ कर सकूँगी।" और इससे तृप्त होकर वह रसोई में सभी आवश्यक कार्य व्यवस्थित करने लगी, और बोली, "दलिया इस तरह पकाएँ, केक इस तरह पकाएँ।"

अब उसके पति ने सोचा, "कल पवार्ना (वर्षा के बाद का महान निमंत्रण समारोह) है," और रसोई की खिड़की से झांकते हुए सोचने लगे, "यह मूर्ख स्त्री क्या कर रही है?" उन्होंने देखा कि वह पसीने से भीगी हुई, राख से सनी हुई, और अपनी तैयारियों के कोयले और कालिख से लिपटी हुई इधर-उधर घूम रही थी। उन्होंने कहा, "इस मूर्ख स्त्री को इस जगह पर विलासिता और आराम नहीं मिलता। वह केवल मुंडे हुए भिक्षुओं की सेवा करने की इच्छा से प्रसन्न होकर घूम रही है।" यह कहकर वह हँसे और चले गए।

उनके जाते ही सिरिमा उनके पास खड़ी थीं और मन ही मन सोचने लगीं, "उन्होंने ऐसा क्या देखा कि उन्हें हंसी आ गई?" और उसी खिड़की से बाहर देखते हुए उन्होंने उत्तरा को देखा और सोचा, "उन्होंने उसे देखा और हँसे। उनके बीच ज़रूर कोई घनिष्ठता है।" अब कहानी यह है कि यद्यपि यह स्त्री आधे महीने से इस घर में परदेसी थी, फिर भी, घर के सुख-सुविधाओं का आनंद लेते हुए, वह अपनी परदेसी होने की स्थिति से अनभिज्ञ थी और सोचती थी, "मैं ही इस घर की मालकिन हूँ।" उसने उत्तरा पर अपना द्वेष ठान लिया और मन ही मन सोचने लगी, "मैं उसे मुसीबत में डालूँगी," और छत से नीचे उतरकर रसोई में गई, जहाँ केक पक रहे थे, वहाँ से एक करछी में उबलता हुआ घी लेकर उत्तरा की ओर बढ़ी। उत्तरा ने उसे आते देखा और सोचा, "मेरी सहेली ने मुझ पर उपकार किया है, पृथ्वी का दायरा बहुत छोटा है, ब्रह्मा (देवदूतों) का लोक बहुत छोटा है, परन्तु मेरी सहेली का पुण्य महान है क्योंकि उसकी सहायता से मैं दान देने और धर्म (मार्ग) सुनने में सक्षम हुई हूँ। यदि मैं उससे क्रोधित हूँ, तो यह घी मुझे जला दे, यदि नहीं, तो न जलाए।" घी (शुद्ध मक्खन), हालांकि उसके सिर पर डाला गया था, प्रेम और करुणा से परिपूर्ण होने के कारण ठंडे पानी के समान था। फिर जब उत्तरा की दासियों ने देखा कि सिरिमा एक और करछुल भरकर उनकी ओर आ रही है और मन ही मन सोच रही है, "क्या यह भी ठंडा होगा?" तो उन्होंने उसे धमकाते हुए कहा, "अरे, दुष्ट स्त्री! हमारी स्वामिनी के सिर पर उबलता तेल डालने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?" और रसोई में जहाँ भी वे थीं, वहाँ से उस पर हमला करते हुए, उन्होंने उसे हाथों और पैरों से मारा और जमीन पर पटक दिया। उत्तरा ने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन वह उन्हें रोक नहीं सकी। फिर वह सिरिमा के ऊपर खड़ी हो गई, सभी दासियों को दूर रखा और सिरिमा को फटकारते हुए कहा, "तुमने ऐसा घिनौना काम क्यों किया?" फिर उसने उसे गर्म पानी से नहलाया और उसके सिर पर सौ गुना शुद्ध तेल से लेप किया।

उस क्षण सिरिमा को एहसास हुआ कि वह एक पराया व्यक्ति है, और उसने सोचा, "मैंने उसके पति की एक मुस्कान मात्र पर उसके सिर पर उबलता पानी छिड़क कर बहुत बड़ा पाप किया है। उसने अपनी नौकरानियों को 'उसे पकड़ो' तक का आदेश दिए बिना, यहाँ तक कि जब वे मुझे चोट पहुँचा रही थीं, तब भी उन्हें रोका और मेरे लिए वही किया जो किया जाना चाहिए था। अगर मैं उससे क्षमा नहीं माँगूँगी, तो मेरा सिर सात टुकड़ों में फट जाएगा।" वह उत्तरा के चरणों में गिर पड़ी और बोली, "देवी, मुझे क्षमा कर दीजिए।" "मैं एक ऐसी पुत्री हूँ जिसके पिता जीवित हैं। अगर मेरे पिता मुझे क्षमा कर देंगे, तो मैं भी आपको क्षमा कर दूँगी," उत्तरा ने कहा। सिरिमा ने कहा, "ठीक है, देवी, मैं आपके पिता पुन्ना, जो एक धनाढ्य हैं, से भी क्षमा माँगूँगी।" उत्तरा ने कहा, "पुन्ना मेरे पिता हैं जिन्होंने मुझे जन्म के चक्र में जन्म दिया है, लेकिन अगर मेरे पिता, जिन्होंने मुझे उस चक्र में जन्म दिया है जो घूमता नहीं है, आपको क्षमा कर देंगे, तो मैं आपको क्षमा कर दूँगी।" सिरिमा ने कहा, "तो फिर उस चक्र में आपके पिता कौन हैं जो घूमता नहीं है?" उत्तरा ने कहा, "पूर्णतः प्रबुद्ध (बुद्ध)।" सिरिमा ने कहा, "मैं उनसे परिचित नहीं हूँ। मैं क्या करूँ?" उत्तरा ने कहा, "गुरु (बुद्ध) कल अपने भिक्षु संघ के साथ यहाँ आएँगे। तुम जो भी भेंट ला सको, ले आओ और यहाँ आकर उनसे क्षमा माँग लो।" "ठीक है, महोदया," सिरिमा ने कहा और वह उठकर अपने घर चली गई। उसने पाँच सौ महिला परिचारिकाओं को कई प्रकार के कठोर और नरम भोजन तैयार करने का आदेश दिया और अगले दिन, आतिथ्य भेंट लेकर उत्तरा के घर गई और प्रतीक्षा करने लगी। वह बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षु संघ के कटोरे में कुछ भी डालने का साहस नहीं कर रही

थी। उत्तरा ने स्वयं सब कुछ संभाला और व्यवस्था की। लेकिन भोजन समाप्त होने पर सिरिमा अपने परिचारिकाओं के साथ गुरु (बुद्ध) के चरणों में गिर पड़ी। तब गुरु (बुद्ध) ने उससे पूछा, "तुम्हारा क्या दोष है?" सिरीमा, "महाराज, कल मैंने ऐसा किया, लेकिन मेरी सहेली ने अपनी उन दासियों को रोक लिया जो मुझे चोट पहुँचा रही थीं। उसने मुझ पर दया की। मैंने उसके सद्गुण को पहचाना, मैंने उससे क्षमा माँगी, लेकिन उसने मुझसे कहा कि जब मुझे तुम्हारी क्षमा मिल जाएगी, तब मैं तुम्हें क्षमा कर दूँगी।" बुद्ध, "क्या उसने ऐसा कहा, उत्तरा?" "जी हाँ, पूज्यवर। सहेली ने मेरे सिर पर खौलता तेल डाल दिया।" बुद्ध, "फिर तुमने क्या सोचा?" उत्तरा, "मैंने सोचा, 'पृथ्वी का दायरा बहुत छोटा है, ब्रह्मा (प्रधान देवदूतों) का लोक बहुत नीचा है, लेकिन सहेली का सद्गुण महान है, क्योंकि उसकी सहायता से मैं दान दे पा रही हूँ और धर्म सुन पा रही हूँ। अगर मैं उससे क्रोधित हूँ, तो यह घी मुझे जला दे; अगर नहीं, तो न जलाए।' ऐसा सोचकर मैंने उस पर प्रेम बरसाया।" गुरु (बुद्ध) ने कहा, "शाबाश, शाबाश, उत्तरा, इस प्रकार क्रोध पर विजय प्राप्त की जा सकती है।" और इस अर्थ को समझाते हुए उन्होंने कहा, "क्रोधहीनता से क्रोधित व्यक्ति पर विजय प्राप्त की जा सकती है, अपशब्द बोलने वाले को अनुशासित करके, और अपशब्द बोलने वाले को अनुशासित करके।"अपने पास जो कुछ है उसे देकर, जो अत्यंत लालची है, उसे बचाया जा सकता है, और झूठ बोलने वाले को सच्चाई से भी नहीं बचाया जा सकता," उन्होंने यह श्लोक कहा:

"क्रोधहीनता से क्रोध पर विजय प्राप्त की जा सकती है,

अच्छाई से बुराई पर विजय प्राप्त की जा सकती है।"

उदारता से लोभियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है,

और सत्य से असत्य के वक्ता को हराया जा सकता है।"

इस श्लोक को कहने के बाद, उन्होंने अंत में चार सत्यों (चार मूलभूत सिद्धांतों) के बारे में बात की। सत्यों के समापन पर उत्तरा को एक बार लौटकर आने वाले (सकदागामी) का फल प्राप्त हुआ। और उनके पति, ससुर और सास ने सोतपण (आध्यात्मिक जागृति का पहला चरण) का फल प्राप्त किया। सिरिमा, अपने साथ पाँच सौ वेश्याओं का दल लेकर, सोतपण (आध्यात्मिक जागृति का पहला चरण) प्राप्त कर चुकी थीं। उत्तरा की मृत्यु के बाद, वे तैंतीसवें (स्वर्ग) में विराजमान हुईं।

और पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मग्गलाना, जैसा कि ऊपर वर्णित है, देव-यात्रा पर निकले हुए, उन्होंने देव-निर्मित उत्तरा को देखा और उनसे उन श्लोकों के साथ प्रश्न पूछा जो इस प्रकार शुरू होते हैं, हे अतुलनीय सौंदर्य से परिपूर्ण देवी:

1 हे अतुलनीय सौंदर्य से परिपूर्ण देवी, आप समस्त दिशाओं को उपचारक तारे के समान प्रकाशित कर रही हैं।

2 आपका सौंदर्य ऐसा क्यों है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख क्यों प्राप्त होते हैं?

3 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया था? आपकी तेजस्वी महिमा किस कारण है, और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का परिणाम है।

5 "जब मैं क्रोध रहित घर में रहती थी, अपने पति की आज्ञा मानती थी, और पाक्षिक व्रतों का पालन करती थी, तब मुझमें कभी ईर्ष्या, कंजूसी और लालच नहीं था।

6 शुक्ल पक्ष के चौदहवें, पंद्रहवें और आठवें दिन, और पाक्षिक व्रतों से संबंधित एक विशेष दिन, मैं पाक्षिक व्रतों का

पालन करती थी। 7 मैं सदा नैतिकता के अभ्यास द्वारा संयमित रहकर पाक्षिक व्रतों का पालन करती थी। और इस प्रकार संयमित और उदार होकर मैं अपने घर में निवास करती हूँ।"

8 प्राणियों की हत्या से परहेज करते हुए, झूठ बोलने, चोरी करने, ब्रह्मचर्य का उल्लंघन करने और शराब पीने से दूर रहकर,

9 पाँच नैतिक नियमों (शील) में आनंद लेते हुए, आर्य सत्यों में निपुण होकर, मैं गौतम (बुद्ध) का गृहस्थ अनुयायी था, जो दूरदर्शी और विख्यात थे।

10 मैं अपनी नैतिकता और प्रसिद्धि के कारण प्रसिद्ध हूँ, अपने पुण्य का अनुभव करता हूँ; मैं सुखी और स्वस्थ हूँ।

11 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं उसे समृद्ध करता हूँ, और मेरे हृदय को प्रिय सभी सुख उत्पन्न होते हैं।

12 हे परम पूज्य भिक्षु, मैं आपको अपने जन्म के समय किए गए कार्यों के बारे में बताती हूँ। इसी कारण मेरी तेजस्वी महिमा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।

हे पूज्यवर, क्या आप मेरी ओर से भगवान के चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम करेंगे और कहेंगे, "उत्तरा नामक गृहस्थ अनुयायी भगवान के चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम करती है? वास्तव में, हे पूज्यवर, यदि भगवान मेरे लिए भिक्षु जीवन के फलों में से एक की घोषणा करें तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी।" भगवान ने उनके लिए एक ही जन्म का लाभ घोषित किया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.16

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.16 --------------------------->>>> अगला

1.16 सिरीमा का महल (16)
(सिरीमा-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में, बाँस के जंगल में गिलहरियों के भोजन स्थल पर निवास कर रहे थे। उस समय, पिछली कथा में वर्णित वेश्या सिरीमा ने आध्यात्मिक जागृति के प्रथम चरण, सोतपान (स्वर्गीय ज्ञानोदय का फल) की प्राप्ति के कारण अपने अपवित्र पेशे को त्याग दिया था और टिकट द्वारा चुने गए भिक्षुओं के आठ सदस्यों को प्रतिदिन भिक्षा देने लगी थी। आरंभ से ही, आठ भिक्षु प्रतिदिन उसके घर आते थे और "थोड़ा घी लो, थोड़ा दूध लो" कहकर वह उनके कटोरे भर देती थी। एक व्यक्ति को मिलने वाला भोजन तीन या चार लोगों के लिए पर्याप्त होता था। प्रतिदिन सोलह कहपना (कांस्य के सिक्के) मूल्य का भोजन भिक्षा के रूप में दिया जाता था। एक दिन एक भिक्षु ने उसके घर पर आठ लोगों के भोजन का आनंद लिया और तीन योजन दूर स्थित एक मठ में चला गया। उस शाम जब वह भिक्षुओं की सेवा में बैठे थे, तो उन्होंने उनसे पूछा, "मित्र, यहाँ आने से ठीक पहले आपको भोजन कहाँ से मिला?" भिक्षु ने उत्तर दिया, "मैंने सिरीमा के आठ लोगों के भोजन में भाग लिया।" भिक्षुओं ने पूछा, "क्या सिरीमा ने स्वादिष्ट भोजन दिया था?" भिक्षु ने उत्तर दिया, "मैं उनके भोजन का वर्णन नहीं कर सकता। उन्होंने बहुत ही भव्य भोजन दिया था। एक व्यक्ति को जो मिला, वह तीन-चार लोगों के लिए पर्याप्त था। लेकिन उनके दिए गए दान से भी अधिक उत्तम उनका रूप था, क्योंकि वे अमुक प्रकार की सुंदरता रखती थीं..." और उन्होंने उनके आकर्षण का वर्णन किया।

अब जब भिक्षुओं में से एक ने उनके आकर्षण का वर्णन सुना, यद्यपि उसने उन्हें देखा नहीं था, केवल उनके बारे में सुनकर ही वह उनसे प्रेम करने लगा, और मन ही मन सोचने लगा, "मैं जाकर उन्हें देखना चाहता हूँ," तो उसने अपने द्वारा बिताए वर्षावासों की संख्या का उल्लेख किया, और एक भिक्षु से भिक्षु संघ में उसकी स्थिति के बारे में पूछा। जब उसने उसे यह कहते सुना, "कल, मित्र, क्योंकि तुम

सबसे वरिष्ठ बुजुर्ग हो, तुम्हें आठ लोगों का भोजन मिलेगा," तो उसने उसी क्षण कटोरा और वस्त्र उठाया और भोर में निकल पड़ा, और उस टिकट-कक्ष में प्रवेश किया, और सबसे वरिष्ठ बुजुर्ग होने के नाते उसने सिरिमा के घर में आठ लोगों का भोजन प्राप्त किया।

लेकिन जिस क्षण परसों भोजन करने वाला भिक्षु चला गया, ठीक उसी समय सिरिमा के शरीर में एक रोग उत्पन्न हो गया। इसलिए उसने अपने गहने उतार दिए और लेट गई। तब उसकी सेविकाओं ने देखा कि भिक्षु आठों के लिए भोजन ग्रहण करने आए हैं, और उन्होंने उसे बताया। अपने हाथों से कटोरे उठाने या भिक्षुओं को बैठने के लिए आमंत्रित करने में असमर्थ होने के कारण, उन्होंने अपनी सेविकाओं को आदेश दिया, "स्त्रियों, कटोरे ले आओ, आदरणीय भिक्षुओं को बैठने के लिए आमंत्रित करो, उन्हें दलिया पिलाओ, उन्हें ठोस भोजन परोसो और जब मुख्य भोजन का समय हो जाए, तो उनके कटोरे भरकर उन्हें दे दो।" उन्होंने वैसा ही किया। उन्होंने कहा, "मुझे अपनी बाहों में भर लो और मुझे अंदर ले चलो। मैं आदरणीय भिक्षुओं का अभिवादन करूंगी।" और उनके सहारे से वह भिक्षुओं के समक्ष गईं और कांपते शरीर के साथ उनका अभिवादन किया। जब भिक्षु (जो उनसे प्रेम करने लगा था) ने उन्हें देखा तो उसने सोचा, "बीमार होने पर भी इस स्त्री में कितनी चमक है, तो जब वह स्वस्थ होगी, अपने सभी आभूषणों से सजी होगी, तो उसकी सुंदरता कैसी होगी?" और कई करोड़ों वर्षों से संचित अपवित्रता ने उसे घेर लिया। वह व्याकुल हो गया, और चावल खाने में असमर्थ होकर, अपना कटोरा उठाया और मठ में चला गया, कटोरे को ढक दिया। एक तरफ लेटकर, उसने अपने वस्त्र का एक कोना फैलाया और लेट गया। फिर भले ही एक साथी भिक्षु ने उससे विनती की, वह खा नहीं सका, वह बिना भोजन के ही रहा।

उसी दिन शाम को सिरीमा का निधन हो गया। राजा (बिम्बिसार) ने गुरु (बुद्ध) को संदेश भेजा, “आदरणीय महोदय, जीवक की सबसे छोटी बहन सिरीमा का निधन हो गया है।” गुरु (बुद्ध) ने यह सुनकर राजा को संदेश भेजा, “सिरीमा के शरीर का दाह संस्कार न किया जाए। उसे बिना दहे हुए शरीरों के स्थान पर रख दें और पहरा दें ताकि कौवे आदि उसे न खा जाएं।” राजा ने वैसा ही किया। लगातार तीन दिन बीत गए और चौथे दिन शरीर फूल गया। नौ छिद्रों से कीड़े निकलने लगे। पूरा शरीर टूटे हुए चावल के बर्तन जैसा हो गया था। राजा ने नगर में ढोल बजवाकर घोषणा करवाई, “जो भी सिरीमा के दर्शन करने नहीं जाएगा, सिवाय उन बच्चों के जिन्हें घर के अंदर सुरक्षित रखा जाना चाहिए, उस पर आठ कहपना (कांस्य के सिक्के) का जुर्माना लगाया जाएगा।” और उन्होंने गुरु (बुद्ध) को संदेश भेजा, “बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षु संघ सिरीमा के दर्शन करने आए।” गुरु (बुद्ध) ने भिक्षुओं से कहा, "हम श्रीमा के दर्शन करने जा रहे हैं।" युवा भिक्षु चार दिनों से किसी की बात सुने बिना और बिना कुछ खाए-पिए लेटा हुआ था। उसके कटोरे में रखा भोजन सड़ गया था, फिर भी वह नहीं उठा। तभी एक साथी भिक्षु उसके पास गया और बोला, "मित्र, गुरु (बुद्ध) श्रीमा के दर्शन करने जा रहे हैं।" श्रीमा शब्द सुनते ही, भूख से बेहाल युवा भिक्षु तुरंत उठ खड़ा हुआ। उसके साथी भिक्षु ने पूछा, "गुरु (बुद्ध) श्रीमा के दर्शन करने जा रहे हैं, क्या तुम भी चलोगे?" उसने कहा, "मैं चलूँगा," और चावल फेंककर उसने कटोरा धोया और भिक्षुओं के साथ चल दिया। गुरु (बुद्ध) भिक्षुओं से घिरे एक समूह में खड़े थे। भिक्षुणियों का संघ, राजा का दरबार और गृहस्थ भक्तों की भीड़, सभी अलग-अलग समूहों में खड़े थे। गुरु (बुद्ध) ने राजा से पूछा, "महाराज, वह कौन हैं?" राजा ने कहा, "महाराज, ये जीवक की बहन हैं, इनका नाम सिरीमा है।" बुद्ध ने पूछा, "क्या ये सिरीमा हैं?" राजा ने कहा, "जी हां, महाराज।" बुद्ध ने आगे कहा, "तो फिर पूरे नगर में ढोल बजवाकर यह घोषणा करवा दीजिए कि कोई भी एक हजार काहपना (कांस्य के सिक्के) देकर सिरीमा को ले जा सकता है।" राजा ने ऐसा ही करवाया। लेकिन किसी ने भी 'हां' या 'ना' तक नहीं कहा। राजा ने गुरु (बुद्ध) से कहा, "आदरणीय महाराज, कोई भी इसे स्वीकार नहीं कर रहा है।" बुद्ध ने कहा, "तो फिर, महाराज, कीमत कम कर दीजिए।" राजा ने ढोल बजवाकर घोषणा करवाई, "पांच सौ में ले जाइए!" जब उसे कोई खरीदार नहीं मिला, तो उसने ढोल बजवाकर घोषणा करवाई, "सिरिमा को ढाई सौ में ले लो," "दो सौ में," "एक सौ में," "पचास में," "पच्चीस कहपना (कांस्य के सिक्के) में," "दस में," "एक में," "आधे में," "एक चौथाई में," "एक मसाका में," "एक ककनिका में," और अंत में उसने ढोल बजवाकर घोषणा करवाई, "उसे मुफ्त में ले लो।"तब भी इस प्रस्ताव पर किसी ने "हाँ" या "ना" तक नहीं कहा। राजा ने कहा, "आदरणीय महोदय, कोई भी उसे मुफ्त में भी नहीं लेगा।" गुरु (बुद्ध) ने कहा, "देखो, हे भिक्षुओं, यह स्त्री संसार की प्रिय है। इसी नगर में पहले लोग उसके साथ एक दिन बिताने के लिए एक हजार कहपना (कांस्य के सिक्के) देते थे, अब कोई भी उसे मुफ्त में भी नहीं लेना चाहता। ऐसी है सुंदरता, जो भ्रष्टाचार और क्षय से भरी है, केवल आभूषणों से ही आकर्षक लगती है, नौ मवाद भरे छिद्रों के कारण घावों का ढेर है, तीन सौ हड्डियों से बंधी है, सदा पीड़ित है, मूर्ख संसार के चिंतन के कारण अनेक विचारों का विषय है, एक नश्वर शरीर है।" और इसे समझाने के लिए उन्होंने यह श्लोक सुनाया:

"इस चित्रित कठपुतली (मानव शरीर) को देखो, घावों का ढेर, एक जटिल वस्तु, बीमार, अनेक विचारों का विषय। इसमें कोई स्थायी स्थिरता नहीं है।"

उपदेश के अंत में, जो भिक्षु सिरीमा से प्रेम करता था, उसका प्रेम-प्रसंग समाप्त हो गया। उसने अंतर्दृष्टि प्राप्त की और अर्हंतत्व (बुद्ध के समान अंतिम ज्ञान) प्राप्त किया। चौरासी हजार मनुष्यों ने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का ज्ञान प्राप्त किया।

(सिरीमा स्वर्ग चली गईं)। उस समय सिरीमा, देवदूत कन्या बनकर, अपनी सफलता और समृद्धि पर विचार कर रही थीं, और जिस स्थान से वे आई थीं, उस पर विचार करते हुए उन्होंने भगवान (भगवान बुद्ध) को भिक्षुओं के संघ और अपने शरीर के पास एकत्रित लोगों की भीड़ से घिरा हुआ देखा। पांच सौ देवियों और पांच सौ रथों से घिरी हुई, वह प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हुईं, अपने रथ से उतरीं, अपने अनुयायियों के साथ भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और भक्ति भाव से खड़ी हो गईं। उस समय पूज्य भिक्षु वनगीसा भगवान बुद्ध के पास खड़े थे। उन्होंने भगवान बुद्ध से कहा, "हे भगवान बुद्ध, मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ।" भगवान बुद्ध ने कहा, "पूछो, वनगीसा।" आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु वंगीसा ने देव-कन्या सिरीमा से निम्नलिखित प्रश्न पूछा:

1 "आपके उत्तम रूप से सुसज्जित घोड़े आकाश से नीचे की ओर शक्तिशाली और तीव्र गति से जा रहे हैं, और आपके कर्मों से निर्मित पाँच सौ रथ सारथियों द्वारा प्रेरित होकर आपके साथ चल रहे हैं।

2 आप एक तेजस्वी, चमकते हुए, दोषरहित और तेजस्वी रथ में विराजमान हैं, आप किस श्रेणी के प्राणियों में से हैं जो अतुलनीय (बुद्ध) के पास आ रही हैं?"

इस प्रकार, गुरुजी द्वारा पूछे जाने पर, देवी ने अपने बारे में बताया:

3 "वे कहते हैं कि जो लोग इच्छा की ऊँचाइयों तक पहुँच चुके हैं, उनमें सर्वोच्च (श्रेणी) के देवता कहाँ हैं जो सदा सृजन में आनंद लेते हैं, उसी श्रेणी से, मैं एक अप्सरा जो इच्छा अनुसार कोई भी रूप धारण कर सकती है, यहाँ अतुलनीय (बुद्ध) का आदर करने आई हूँ।"

जब देवी ने सृजन में आनंद लेने वाले देवताओं के बीच अपने प्रकट होने

का इस प्रकार वर्णन कर दिया, तब गुरुजी ने उनसे उनके पूर्व जीवन, उनके द्वारा किए गए पुण्य कर्म और उनके धार्मिक विश्वास के बारे में बताने को कहा। 4 "आपने पूर्व में यहाँ कौन सा अच्छा आचरण किया था? आप असीम महिमावान, सुख में विराजमान और वायु में विचरण करने की अतुलनीय मानसिक शक्ति से संपन्न क्यों हैं और आपकी सुंदरता दस दिशाओं में कैसे चमकती है?

5 आप देवताओं से घिरी हुई और उनके द्वारा सम्मानित हैं।" हे देवदूत, आप कहाँ से आए हैं कि आपको एक अच्छा गंतव्य मिला? या आप किसके निर्देशों का पालन करते थे? मुझे बताइए कि क्या आप बुद्ध के शिष्य थे।

बड़े ने जिस विषय के बारे में पूछा है, उसी के संदर्भ में... देवता ने ये श्लोक कहे:

6 एक भव्य, सुनियोजित नगर (राजगृह) में, जो एक पर्वत पर स्थित था, मैं एक तेजस्वी और विख्यात राजा (बिम्बिसार) की परिचारिका थी। मुझे नृत्य और गीत का उच्च प्रशिक्षण प्राप्त था। राजगृह में लोग मुझे सिरिमा के नाम से जानते थे।

7 और बुद्ध, जो ऋषियों में श्रेष्ठ और मार्गदर्शक हैं, ने मुझे दुख के कारण के बारे में सिखाया, जो क्षणिक हैं; अप्रतिबंधित और अपरिवर्तनीय, दुखों के निवारण के बारे में, जो शाश्वत हैं, और इस मार्ग के बारे में, जो कुटिल नहीं, सीधा और शुभ है।

8 जब मैंने अमर अवस्था (निर्वाण की शाश्वत अवस्था), अप्रतिबंधित और अपरिवर्तनीय, और अतुलनीय तथागत (बुद्ध) के उपदेशों के बारे में सुना, तो मैं नैतिकता (शील) के अभ्यास में अत्यंत संयमित हो गई, और बुद्ध द्वारा सिखाए गए धम्म (शाश्वत सत्य/धर्म के मार्ग) में स्थापित हो गई।

9 जब मैंने उस निर्मल अवस्था (निर्वाण की) के बारे में जाना, जो अप्रतिबंधित और अपरिवर्तनीय है, और बुद्ध द्वारा सिखाई गई है, जब मैंने अतुलनीय तथागत (बुद्ध) का दर्शन किया, तब मैं स्वयं समभाव समाधि की अवस्था में पहुँच गया। मुझे सर्वोच्च विश्वास प्राप्त हुआ।

10 जब मैंने निर्वाण की शाश्वत अवस्था प्राप्त कर ली, जो स्पष्ट, आश्वस्त, गहन ज्ञान से परिपूर्ण और भ्रम रहित थी, तब मुझे अनेकों द्वारा सम्मानित किया गया, और मुझे स्वर्ग में अनेक आनंद और सुख प्राप्त हुए।

11 इस प्रकार मैं निर्वाण को देखने वाला देवता हूँ, अतुलनीय तथागत (बुद्ध) का शिष्य हूँ, जो धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का दर्शन करता है, प्रथम फल (लाभ) में स्थापित हूँ, (जो कि आध्यात्मिक जागृति का प्रथम चरण, सोतपान है), और मेरे लिए फिर कभी कोई बुरा गंतव्य नहीं है।

12 धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के अंतर्गत प्रख्यात राजा के प्रति आदर के साथ, मैं अतुलनीय को सम्मान देने और धार्मिक कार्यों में आनंदित होने वाले कृपालु भिक्षुओं का आदर करने के लिए एक शुभ सभा में उपस्थित हुआ। भिक्षुओं के।

13 जब मैंने ऋषि तथागत (बुद्ध) को देखा, जो तेजस्वी पुरुष, वश में करने योग्य सारथी, व्यथा का नाश करने वाले, धर्म में प्रसन्न होने वाले और मार्गदर्शक हैं, तो मेरा हृदय आनंदित और प्रसन्न हुआ। मैं परम दयालु, करुणामय (बुद्ध) का आदर करता हूँ।

इस प्रकार, देव कन्या सिरीमा ने अपने द्वारा स्वीकार किए गए विश्वास की औपचारिक घोषणा करते हुए, तीन रत्नों (त्रिमूर्ति, बुद्ध, धम्म (मार्ग), भिक्षु संघ) में अपनी आस्था प्रकट की; उन्होंने भगवान (भगवान बुद्ध) और भिक्षु संघ को प्रणाम किया और उनके चारों ओर विधिपूर्वक परिक्रमा करने के बाद, देवलोक में लौट गईं। भगवान (भगवान बुद्ध) ने उनके (देवलोक से) अवतरण को प्रवचन का अवसर बनाया और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया। प्रवचन के अंत में, सिरीमा के लिए तरस रहे भिक्षु ने अरहंतत्व (अंतिम ज्ञान) प्राप्त किया। (बुद्ध को संबोधित करते हुए), और यह प्रवचन वहां उपस्थित सभी लोगों के लिए भी लाभदायक था।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 1.17

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.1.17 -------------------------->>>> अगला

1.17 केशकारी का महल (17)
(केशकारी-विमान)

भगवान बुद्ध इसिपताना के हिरण उद्यान में स्थित बरनासी में निवास कर रहे थे। सुबह भिक्षुओं ने वस्त्र धारण किए, भिक्षापात्र लिए और बरनासी में प्रवेश किया। वे एक ब्राह्मण के घर के द्वार के पास पहुँचे। उस घर में ब्राह्मण की पुत्री, केशकारी, जो द्वार के पास अपनी माता के सिर से जुएँ निकाल रही थी, ने भिक्षुओं को जाते हुए देखा और अपनी माता से कहा, "माँ, सांसारिक जीवन का त्याग करने वाले ये पुरुष मुझे अपनी युवावस्था में ही कोमल, अत्यंत सुंदर और देखने में आकर्षक प्रतीत होते हैं। अब वे इस उम्र में संसार का त्याग क्यों कर रहे हैं?"

उनकी माता ने उनसे कहा, "पुत्री, शाक्य वंश में एक पुत्र है; वह शाक्य वंश से भिक्षु बन गया है और बुद्ध नामक गुरु के रूप में संसार में प्रकट हुआ है। वह धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देता है, जो आरंभ, मध्य और अंत में अर्थ और अक्षर दोनों से परिपूर्ण है;

वह ब्रह्मचर्य के ऐसे अभ्यास का प्रचार करता है जो पूर्णतः शुद्ध और पवित्र है। इन पुरुषों ने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, इसलिए वे भिक्षु बन गए हैं।”

उसी समय एक गृहस्थ अनुयायी, जिसने फल प्राप्त कर लिया था और उपदेश को समझ लिया था, उस गली से गुजरते हुए यह बातचीत सुन रहा था और उन दोनों स्त्रियों के पास आया। तब ब्राह्मण स्त्री ने उससे कहा, “देखो, गृहस्थ अनुयायी, शाक्य वंश में अनेक अच्छे कुल के पुरुष अपार धन और रिश्तेदारों के समूह का त्याग कर भिक्षु बन जाते हैं। वे किस कारण से भिक्षु बनते हैं?” उस गृहस्थ अनुयायी ने उसकी बात सुनी और कहा, "इंद्रिय सुखों में निहित खतरे और त्याग में निहित लाभ के कारण," और उसने अपनी समझ के अनुसार इस कारण का विस्तारपूर्वक वर्णन किया, तीन रत्नों (त्रिमूर्ति, बुद्ध, धम्म (मार्ग), भिक्षु संघ) के गुणों को समझाया और इस संसार और परलोक के संबंध में पांच उपदेशों (शील, नैतिकता) के लाभ और फायदे को स्पष्ट किया।

तब ब्राह्मण की पुत्री ने उनसे पूछा, “क्या हमारे लिए भी उन लाभों और सुखों को प्राप्त करना संभव है जिनके बारे में आपने बताया है, शरणों (बुद्ध; धम्म-मार्ग; संघ-सम्पत्ति) और उपदेशों (शील, नैतिकता) पर निर्भर रहने के द्वारा?” उन्होंने कहा, “क्यों नहीं? ये वे चीजें हैं जो भगवान (बुद्ध) ने कही हैं, और उन्होंने उसे शरण और उपदेश दिए। जब उसने शरण स्वीकार कर ली और उपदेशों का पालन करने का वचन दिया, तो उसने पूछा, “इसके अलावा और क्या करना है?” उसकी बुद्धिमत्ता को देखकर उन्होंने मन ही मन सोचा, “वह उन लोगों में से एक होगी जिनमें योग्यताएं हैं,” और शरीर की प्रकृति को समझाते हुए, उन्होंने ध्यान के विषयों के बारे में बताया जो इसके बत्तीस घटक हैं; उन्होंने उसके मन में शरीर के प्रति अरुचि उत्पन्न की, और इसके अलावा, अनित्यता आदि से संबंधित धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर प्रवचन देकर उसे प्रभावित किया, और फिर उन्होंने अंतर्दृष्टि का मार्ग बताया और उसे छोड़कर चले गए। उसने उसकी कही हर बात को दिल से ग्रहण किया और शरीर की अशुद्धता के अहसास से शांत होकर उसने अंतर्दृष्टि प्राप्त की और शीघ्र ही आध्यात्मिक जागृति के प्रथम चरण, सोतपना का फल प्राप्त किया। बाद में

उसकी मृत्यु हो गई और वह सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) की सेविका के रूप में पुनर्जन्म लेकर लौटी। उसके साथ एक लाख अप्सराएँ थीं। जब सक्का ने उसे देखा, तो वह आश्चर्यचकित और प्रशंसनीय होकर उससे पूछने लगा कि उसने कौन सा पुण्य कर्म किया है:

1 "यह महल, मेरा निवास, चमकीला, प्रकाशमान, बेरिल के स्तंभों से सुगठित, सदा के लिए बना हुआ, चारों ओर सुनहरे वृक्षों से छायादार, मेरे कर्म के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ है।

2 जो यहाँ पहले उत्पन्न हुई थीं, वे एक लाख अप्सराएँ थीं; तुम्हारे कर्म के कारण तुमने यह पद प्राप्त किया है, तुम गौरवशाली हो। तुम प्रकाशमान खड़ी हो, एक श्रेष्ठ देवता।

3 जिस प्रकार नक्षत्रों का राजा चंद्रमा सभी तारों से बढ़कर चमकता है, उसी प्रकार तुम अप्सराओं के इस समूह में चकाचौंध कर चमक रही हो।

4 अब तुम कहाँ से आई हो, हे निर्दोष रूप वाली, मेरे इस निवास में उत्पन्न हुई? जिस प्रकार इंद्र के साथ तैंतीस देवदूत ब्रह्मा को देखकर तृप्त हो जाते हैं, उसी प्रकार कोई भी तुम्हारे दर्शन से नहीं थकेगा। प्रकट होना।

इस प्रकार सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर, देवता (देवदूत) ने ये दो श्लोक कहे:

5 "चूंकि आपने कृपापूर्वक मुझसे पूछा है, सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा); 'आप कहाँ से आकर यहाँ आए हैं?' - वहाँ काशी लोगों का नगर था, जिसका नाम बनारसी था। वहाँ, उस नगर में, मैं पूर्व में केश-कारिका था।

6 मैं परमानंद की अवस्था में था, बुद्ध और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) और भिक्षु संघ के प्रति पूर्णतः समर्पित था, बिना किसी दुविधा के, प्रशिक्षण के नियमों का पालन करते हुए, ज्ञानोदय के फल प्राप्त कर चुका था, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) में आश्वस्त था, स्वस्थ था।"

तब सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा), उनके पुण्य प्राप्ति और देव-समान गुणों से प्रसन्न होकर उनसे बोले:

7 "इस कारण हम अत्यंत प्रसन्न हैं और आपका स्वागत करते हैं; आप धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के माध्यम से महिमा से प्रकाशित हो रही हैं। आप विश्वासयोग्य हृदय की हैं, बुद्ध, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) और भिक्षु संघ के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं, विवशता रहित हैं, प्रशिक्षण के नियमों का पालन करती हैं, फल प्राप्त कर चुकी हैं, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) या ज्ञान में आश्वस्त हैं, स्वस्थ हैं।"

और सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) ने इस घटना के बारे में आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना को बताया; वरिष्ठ भिक्षु ने इसे भगवान (भगवान बुद्ध) को बताया। भगवान (भगवान बुद्ध) ने इस विषय को प्रवचन का अवसर बनाया और एकत्रित जनसमूह को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया। वह उपदेश देव-लोक सहित पूरे संसार के लिए लाभकारी था।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.1

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.1 -------------------------->>>> अगला

2.1 दासी का महल (18)
(दासी-विमान)

जब भगवान (भगवान बुद्ध) जेतवन में निवास कर रहे थे, तब श्रावस्ती में रहने वाला एक गृहस्थ अनुयायी कई अन्य अनुयायियों के साथ संध्याकाल में मठ गया, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना, और जब सभा समाप्त हुई, तो वह भगवान (भगवान बुद्ध) के पास जाकर बोला, "आदरणीय महोदय, अब से मैं चार निरंतर भोजन दूंगा।" तब भगवान (भगवान बुद्ध) ने उस अवसर के अनुरूप उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर प्रवचन दिया और उन्हें विदा कर दिया। उन्होंने भोजन अधीक्षक से कहा, "आदरणीय महोदय, मैंने भिक्षु संघ के लिए चार निरंतर भोजन निर्धारित किए हैं। कल से सभी आदरणीय सज्जन मेरे घर आएं," और घर चले गए। उन्होंने उस दासी को यह बात समझाई और कहा, "इस मामले में तुम्हें निरंतर लगन रखनी होगी।" "ठीक है," उसने उत्तर दिया। स्वभाव से वह आस्थावान, पुण्य की इच्छुक और गुणी थीं, इसलिए वह प्रतिदिन सुबह बहुत जल्दी उठतीं, उत्तम भोजन और पेय तैयार करतीं, बैठने की जगह को अच्छी तरह साफ करतीं और इत्र लगातीं; वह आसन तैयार करतीं और भिक्षुओं के आने पर उन्हें वहाँ बैठातीं, आदरपूर्वक प्रणाम करतीं, उन्हें इत्र, फूल, धूप और दीपक भेंट करतीं और आदरपूर्वक उनकी सेवा करतीं। एक दिन जब भिक्षुओं ने भोजन कर लिया, तो वह उनके पास गईं, प्रणाम किया और बोलीं, "हे आदरणीय महोदय, जन्म-मृत्यु आदि के इन कष्टों से पूर्ण मुक्ति कैसे प्राप्त की जा सकती है?" भिक्षुओं ने उन्हें शरण (बुद्ध, धम्म-मार्ग, संघ-सम्ध्यापन) और पाँच उपदेश (शील, नैतिकता) दिए, शरीर की (दुष्प्रचार) प्रकृति समझाई और उन्हें नश्वरता पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। इसके बाद उन्होंने उन्हें अनित्यता के बारे में सिखाया। सोलह वर्षों तक उपदेशों का पालन करते हुए, समय-समय पर ध्यानपूर्वक चिंतन करते हुए, एक दिन उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपनी परिपक्व समझ के कारण उन्होंने अंतर्दृष्टि विकसित की और सोतपान (आध्यात्मिक जागृति का पहला चरण) के फल (लाभ) को जाना। इसके तुरंत बाद उनका निधन हो गया और वे सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) की प्रिय परिचारिका के रूप में पुनर्जन्म लेकर लौटीं। वे साठ हजार वाद्ययंत्रों की संगति में उद्यानों आदि में विचरण करती रहीं, देवदूतों के परमानंद का आनंद लेती रहीं और अपने दल के साथ समय व्यतीत करती रहीं। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उन्हें ऊपर वर्णित रूप में देखा और उनसे पूछा:

1 "सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) की तरह, रमणीय चित्तलता वन में, आप चारों ओर स्त्रियों के समूह से घिरी हुई विचरण करती हैं, जिससे सभी दिशाएँ उपचार करने वाले तारे की तरह चमक उठती हैं।

2 आपकी ऐसी सुंदरता का कारण क्या है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध होती हैं, और वहाँ आपके हृदय को प्रिय आनंद किस कारण उत्पन्न होते हैं?

3 मैं आपसे पूछता हूँ, हे महान महिमा की देवी,आपने मनुष्य के रूप में जन्म लेते समय कौन सा गुण दिखाया? आपकी इस तेजस्वी महिमा के कारण ही आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?

4 मोग्गलाना द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का फल है:

5 "जब मैं मनुष्य के रूप में जन्मा, तो मैं एक दासी थी, एक गृहस्थी थी, दूरदर्शी, गौतम (बुद्ध) की अनुयायी थी, जो सर्वप्रसिद्ध हैं।

6 परिश्रम से मैं उस स्थिर गुरु के मार्गदर्शन में आई। चाहे यह शरीर कितना भी टूट जाए, मैं इसमें (प्रयास में) कोई शिथिलता नहीं रखती।

7 पांच नियमों का मार्ग, सुरक्षित, शुभ, बुद्धिमानों द्वारा कांटों रहित, उलझन रहित, सीधा बताया गया है।

8 एक नन्ही स्त्री द्वारा प्राप्त परिश्रम के फल को देखो। मैं सर्वोच्च शक्ति वाले राजा, सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) की सहेली हूँ।

9 साठ हजार वाद्ययंत्र मुझे मेरी नींद से जगाते हैं: आलमबा, गग्गरा, भीम, साधुवादिन और संशय,

10 पोक्खरा और सुफस्सा; विनमोक्खा और अन्य (स्त्रियाँ): नंदा, सुनंदा, सोनादिना, सुचिंहिता,

11 अलम्बुसा, मिसाकेसी, और निर्दयी पुंडारिका, एनीफस्सा, सुफस्सा, और सुभद्दा, मुदुवादिनी-

12 ये और अन्य अधिक सुंदर (देवता (देवदूत)) अप्सराओं को (नींद से) जगाते हैं। सुबह वे मेरे पास आती हैं और कहती हैं, आओ, हम नाचेंगे, हम गाएँगे, आओ, हम तुम्हें आनंदित करेंगे।

13 यह नंदन (स्वर्ग), शोक रहित, आनंदमय, तैंतीस (स्वर्ग) का महान उपवन, उन लोगों के लिए नहीं है जिन्होंने कोई पुण्य कर्म नहीं किया है, बल्कि केवल उन लोगों के लिए है जिन्होंने पुण्य कर्म किए हैं।

14 न तो यहाँ और न ही परे उन लोगों के लिए कोई आनंद है जिन्होंने कोई पुण्य कर्म नहीं किया है, परन्तु जिन लोगों ने पुण्य कर्म किए हैं, उनके लिए यहाँ और परे आनंद है।

15 जो संगति की लालसा रखते हैं, उन्हें इनके द्वारा बहुत अधिक धार्मिकता का पालन करना चाहिए, क्योंकि वे जिन्होंने पुण्य कर्म किए हैं, वे स्वर्ग में आनंदित होते हैं।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.2

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.2 -------------------------->>>> अगला

2.2 लखुम का महल (19)
(लखुम-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध) बनारस में निवास कर रहे थे। बनारस नगर में एक द्वार था जिसे मछुआरा द्वार कहा जाता था। इसके पास ही एक गाँव भी था जिसका नाम भी मछुआरा द्वार था। वहाँ लखुमा नाम की एक स्त्री, जो आस्थावान, आनंदित और बुद्धिमान थी, उस द्वार से प्रवेश करने वाले भिक्षुओं का अभिवादन करती, उन्हें अपने घर ले जाती, उन्हें भोजन कराती और उनकी आस्था एवं आनंद में वृद्धि होते ही, उन्होंने एक मंडप बनवाया और वहाँ भिक्षुओं का आतिथ्य सत्कार किया, उनके साथ धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना और शरण (बुद्ध; धम्म-मार्ग; संघ-सम्बद्धता) तथा उपदेश (शील, नैतिकता) में दृढ़ होकर, उन्होंने गहन ध्यान से अंतर्दृष्टि-ध्यान के उन विषयों का गहन अध्ययन किया जो उन्होंने सीखे थे और अपनी योग्यताओं के कारण, आध्यात्मिक जागृति के प्रथम चरण (सोतापना) के फल (लाभ) को प्राप्त किया।

बाद में उनका निधन हो गया और उनका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में एक विशाल महल में हुआ। और उनके साथ एक हजार अप्सराएँ थीं। देवीय आनंद में डूबी हुई वे वहाँ प्रसन्नतापूर्वक निवास कर रही थीं। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना, जो देवीय दर्शन के भ्रमण पर थे, ने उनसे इस प्रकार प्रश्न किया:

1 "हे देवीय, आप अत्यंत सुंदर हैं और सभी दिशाओं को प्रकाशमान तारे के समान चमका रही हैं।

2 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप यहाँ-वहाँ किस कारण से विराजमान हैं और आपके हृदय को जो भी आनंद प्रिय है, वह किस कारण से उत्पन्न होता है?

3 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण से है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवीय ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 मछुआरे के द्वार से निकलते हुए, मेरा निवास स्थान था। वहाँ से गुजरते हुए शिष्यों, महान ऋषियों को,

6 मैं श्रद्धापूर्वक चावल, कुम्मस, साग और नमकीन खट्टी दलिया देता था।

7 शुक्ल पक्ष के चौदहवें, पंद्रहवें और आठवें दिन, और पखवाड़े के एक विशेष दिन, जो अष्टांगिक नियमों से भलीभांति जुड़ा हुआ था,

8 मैं सदा नैतिकता के अभ्यास द्वारा आत्मसंयमित रहते हुए उपोसथा (पखवाड़े का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन करता था। और (इस प्रकार) संयमित और उदार होकर मैं उस निवास स्थान में रहता था।

9 प्राणियों की हत्या से परहेज करते हुए, झूठ बोलने, चोरी करने और शराब पीने से दूर रहते हुए,

10 प्रशिक्षण के पाँच नियमों में आनंद लेते हुए, आर्य सत्यों में निपुण होकर, मैं गौतम (बुद्ध) का गृहस्थ अनुयायी था, जो दूरदर्शी और व्यापक ज्ञान रखने वाले थे। प्रसिद्ध।

11 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।

और, पूज्यवर, मेरी ओर से, क्या आप भगवान बुद्ध के चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम करेंगे? यह कहते हुए: "लखुमा नाम की गृहस्थ अनुयायी भगवान बुद्ध के चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम करती है। वास्तव में, पूज्यवर, यह आश्चर्य की बात नहीं होगी कि भगवान बुद्ध उसके लिए पुन: जन्म के फल की घोषणा करें।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.3

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.3 -------------------------->>>> अगला

2.3 चावल की भूसी देने वाले का घर (20)
(आचमदयिक-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में, बांस के जंगल में गिलहरियों के चरने की जगह पर निवास कर रहे थे। उस समय राजगृह के एक परिवार में हैजा की महामारी फैल गई। एक स्त्री को छोड़कर सभी लोग मर गए। मृत्यु के भय से भयभीत होकर उसने घर और उसमें रखा सारा धन-अनाज छोड़ दिया और दीवार में बने एक छेद से भाग गई (महामारी के समय ऐसा करना एक प्रथा थी)। उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं था, इसलिए वह एक दूसरे परिवार के घर गई और उसके पीछे रहने लगी। उस घर के लोगों ने उस पर दया करके उसे चावल का दलिया, उबले हुए चावल, चावल की भूसी आदि दी जो चावल के बर्तन और अन्य खाना पकाने के बर्तनों में बची हुई थी। उनकी उदारता के कारण वह वहाँ रह सकी।

उस समय पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-कस्सपा सात दिनों तक ध्यान की अवस्था में लीन रहे, उससे बाहर निकले और सोच रहे थे, "आज मैं किसका भोजन ग्रहण करके उपकार करूँ? किसे कष्ट और दुख से मुक्त करूँ?" तभी उन्होंने देखा कि यह स्त्री मृत्यु के निकट है और उसके कर्म नरक की ओर ले जाने वाले प्रतीत हो रहे हैं। उन्होंने सोचा, "जब मैं उसके पास जाऊँगा, तो वह मुझे अपने लिए प्राप्त चावल का छिलका दे देगी: इसी कर्म के कारण वह सृजन में आनंदित होने वाले देवों के लोक में पुनर्जन्म लेगी। इस प्रकार उसे नरक में पुनर्जन्म से मुक्त करके, मैं निश्चय ही उसके लिए देव-आनंद का सृजन करूँगा।" और सुबह जल्दी उठकर, उन्होंने कुंड और वस्त्र लेकर उस स्थान की ओर प्रस्थान किया जहाँ वह स्त्री निवास कर रही थी।

अब सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) ने भेष बदलकर उन्हें अनेक स्वादों और अनेक प्रकार के सूपों और करी से युक्त देव-भोजन भेंट किया। वृद्ध ने उन्हें पहचान लिया और यह कहते हुए मना कर दिया, "कोसिया, तुम, जिसके अच्छे कर्म सिद्ध हो चुके हैं, ऐसा क्यों कर रहे हो? दुखी प्राणियों का भाग्य मत बिगाड़ो," और आकर उस स्त्री के सामने खड़े हो गए। स्त्री ने उन्हें कुछ भेंट करने की इच्छा से सोचा: इस महान देवदूत को देने के लिए यहाँ कुछ भी उपयुक्त नहीं है, और उसने कहा, "कृपया आगे बढ़िए!" वृद्ध एक कदम पीछे हट गए और दूसरों द्वारा दी गई किसी भी भेंट को स्वीकार नहीं किया। स्त्री ने यह समझकर कि वे उसकी सहायता करना चाहते हैं, उन्हें अपनी चावल की रोटी दे दी, जिसे उन्होंने वहीं खा लिया और कहा: "इस जन्म से पहले अपने तीसरे जन्म में तुम माता थीं," और चले गए। उसी रात उनका निधन हो गया और वे सृजन में आनंदित होने वाले देवों के बीच पुनर्जन्म लेकर पुनर्जन्म लिया। तब सक्का को उसकी मृत्यु का ज्ञान हुआ और जब उसने उसे तैंतीस (स्वर्ग) में नहीं देखा, तो वह रात के मध्य पहर में आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-कस्सपा के पास गया और उनसे पूछा:

1 "जब आप भिक्षा मांगने के लिए टहल रहे थे, तब आप वहाँ चुपचाप खड़े थे, वहाँ एक दुखी भिखारी स्त्री दूसरे के घर के पीछे रहती थी।

2 जिसने प्रसन्नता से अपने हाथों से आपको चावल की रोटी दी और अपना शरीर त्याग दिया, वह किस अवस्था में गई है?"

तब बड़े ने उसे उत्तर देते हुए पुनर्जन्म के स्थान के बारे में बताया:

3 "जब मैं भिक्षा मांगने जा रहा था, तब चुपचाप खड़ा था, तभी एक दीन-हीन स्त्री दूसरे के घर के पीछे रहने लगी।

4 उसने प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से मुझे चावल की रोटी दी, और मानव शरीर को त्यागकर, यहाँ से पूर्णतः मुक्त हो गई।

5 वहाँ महान मानसिक शक्ति वाले देव (देवदूत) हैं, जो सृजन में आनंदित होते हैं। वह आनंदित स्त्री, जो प्रसन्नतापूर्वक चावल की रोटी देती है, वहाँ विराजमान है।"

और जब सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) ने उसके दान के महान परिणाम, महान लाभों के बारे में सुना, तो उन्होंने कहा:

6 “अरे, कश्यप को निर्धन का दान, उत्तम स्थान पर दिया गया। दूसरे से भीख माँगकर दिए गए भोजन के साथ दिया गया दान वास्तव में फलदायी रहा।

7 जो स्त्री चक्र चलाने वाले राजा (विश्व के शासक) की संगिनी बनेगी, जो अपने स्वामी की दृष्टि में हर अंग से सुंदर और आकर्षक है—(वह भी) इस चावल की रोटी के दान के सोलहवें भाग के बराबर नहीं है।

8 सौ निक्खाएँ, सौ घोड़े, सौ खच्चरों द्वारा खींचे जाने वाले रथ, रत्नजड़ित झुमके पहने एक लाख कन्याएँ—(वे भी) इस चावल की रोटी के दान के सोलहवें भाग के बराबर नहीं हैं।

9 रथ के खंभों के समान दाँतों वाले सौ हिमालयी हाथी, सोने के कवच और अलंकरणों से सुसज्जित भारी और राजसी हाथी—(वे भी) इस चावल की रोटी के दान के सोलहवें भाग के बराबर नहीं हैं।

10 नहीं "चारों महाद्वीपों पर प्रभुत्व रखने वाला भी इस चावल के छिलके के उपहार के सोलहवें भाग के बराबर ही मूल्यवान है।"

वृहत्तर महा-कस्सपा ने भगवान बुद्ध को वह सब बताया जो उन्हें यहाँ सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) ने कहा था। इसे विषय बनाकर भगवान ने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.4

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- I.2.4 ------------------------->>>> अगला

2.4 चांडाली का महल (21)
(चांडाली-विमान)

जब भगवान (बुद्ध) राजगृह में निवास कर रहे थे, तब उन्होंने बुद्धों द्वारा अभ्यास की जाने वाली महान करुणा की प्राप्ति की। वे उठे और संसार का अवलोकन करते हुए देखा कि उसी नगर में, चांडाल (निम्न जाति) बस्ती में, एक वृद्ध स्त्री रहती थी जिसका जीवन समाप्त होने वाला था, और उसके कर्मों के कारण उसे नरक में जाना पड़ रहा था। बड़ी करुणा से उन्होंने उसे स्वर्ग के लिए अनुकूल कर्म करने को प्रेरित किया और यह सोचकर कि "मैं उसे स्वर्ग में स्थापित करूँगा", भिक्षुओं के एक बड़े समूह के साथ भिक्षा मांगने के लिए राजगृह में प्रवेश किया। उसी क्षण चांडाल (निम्न जाति) स्त्री छड़ी के सहारे नगर से बाहर आ रही थी; उसने भगवान (बुद्ध) को आते देखा और जब वह उनके सामने पहुँची तो रुक गई। भगवान (बुद्ध) भी रुक गए और उसके सामने इस प्रकार खड़े हो गए मानो उसे आगे बढ़ने से रोक रहे हों। तब पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-गोग्गलाना, क्योंकि वे गुरु (बुद्ध) के मन को जानते थे और जानते थे कि स्त्री का जीवनकाल समाप्त हो चुका है, ने उन्हें भगवान (बुद्ध) के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए कहा:

1 "चंडाली, सर्वप्रसिद्ध गौतम (बुद्ध) के चरणों का आदर करो। तुम पर दया करके परम द्रष्टा तुम्हारे सामने खड़े हुए थे।

2 उनके समान योग्य और स्थिर बुद्ध की ओर अपना मन लगाओ। शीघ्र करो, हाथ जोड़कर उनका आदर करो, क्योंकि तुम्हारा जीवन क्षणभंगुर है।"

और उसने उनकी बात सुनी, और भाव से प्रेरित होकर उसने गुरु (बुद्ध) में आस्था रखी, पंच प्रकार से आदर किया, और बुद्ध में आनंदित होकर एकाग्र मन से सिर झुकाकर खड़ी रही। भगवान (बुद्ध) ने कहा, "यह उसके स्वर्ग प्राप्ति के लिए पर्याप्त है," और भिक्षु संघ के साथ नगर में प्रवेश किया। इसके तुरंत बाद, एक बछड़े सहित एक भागती हुई गाय, उस स्त्री की ओर दौड़ी और अपने सींगों से उस पर हमला करके उसे मार डाला। इस सब की व्याख्या करने के लिए, संशोधनकारों ने दो श्लोक कहे:

3 स्वयंभू सिद्ध पुरुष द्वारा प्रेरित होकर, अपने अंतिम शरीर को धारण किए हुए, चांडाली ने सर्वप्रसिद्ध गौतम (बुद्ध) के चरणों का आदर किया।

4 उस गाय ने उस चांडाली को मार गिराया, जब वह हाथ जोड़कर स्वयंभू बुद्ध, अंधकार में प्रकाश लाने वाले, का आदर कर रही थी।

और उसका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्ग) में हुआ। और उसके साथ एक लाख अप्सराओं का दल था। और उसी दिन जब वह आई, एक देवदूत अपने महल के साथ उतरी, आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना के पास गई और उन्हें प्रणाम किया। इसे समझाने के लिए उसने कहा:

5 "हे महान स्वामी, मैं जिसने देवों (देवदूतों) की मानसिक शक्ति प्राप्त कर ली है, आपके पास आती हूँ और आपको प्रणाम करती हूँ, जिनके सांसारिक विकार (इच्छाएँ) नष्ट हो गए हैं, जो निष्कलंक, अविचलित हैं और वन में एकांत में बैठे हैं।"

बड़े ने उससे पूछा:

6 "हे स्वर्ण रंग की, तेजस्वी, महान ख्याति प्राप्त, अनेक आभूषणों से सुशोभित, एक महल से उतरी हुई, अप्सराओं के समूह से घिरी हुई, हे सुंदर देवी, आप कौन हैं जो मुझे सम्मान दे रही हैं?"

बड़े ऋषि द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने चार श्लोक कहे:

7 "हे पूज्यवर, मैं एक चांडाली हूँ: आपके द्वारा, उस वीर के द्वारा प्रेरित होकर, मैंने गौतम (बुद्ध) के चरणों को प्रणाम किया, जो सर्वप्रसिद्ध और योग्य हैं।

8 उनके चरणों को प्रणाम करने के बाद, चांडाली के रूप में जन्म लेकर, मैं नंदन (स्वर्ग) में एक सर्वगुणपूर्ण, सुंदर महल में अवतरित हुई।

9 एक लाख अप्सराएँ मेरी सेवा में खड़ी हैं। उन सब में मैं सौंदर्य, यश और दीर्घायु में सर्वोपरि और श्रेष्ठ हूँ।

10 सचेत और संयमी, बहुत से अच्छे कर्म करके, मैं हे पूज्यवर, संसार के प्रति दयालु ऋषि को सम्मान देने आई हूँ।"

पुन: संशोधकों द्वारा एक श्लोक जोड़ा गया:

11 यह सुनकर, चंडाली ने कृतज्ञतापूर्वक, किए गए कार्य को स्वीकार करते हुए, उस योग्य व्यक्ति के चरणों का आदर करके, वहीं अंतर्धान हो गई।

और आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने इस घटना का वर्णन भगवान बुद्ध को किया। इसे विषय बनाकर भगवान ने अपने अनुयायियों को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया, जिससे उन्हें अत्यंत लाभ हुआ।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.5

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.5 -------------------------->>>> अगला

2.5 सुंदर स्त्री का निवास (22)
(भद्धिति-विमान)

भगवान बुद्ध जेतवन के श्रावस्ती में अनाथपिंडिका के मठ में निवास कर रहे थे। उस समय किंबिला नगर में रोहका नाम का एक गृहस्थ पुत्र था, जो श्रद्धा और आनंद से परिपूर्ण, नैतिक आचरण में निपुण था। उसी प्रकार के परिवार में भद्दा नाम की एक युवती रहती थी, जो श्रद्धा और आनंद से परिपूर्ण थी, क्योंकि उसका स्वभाव अच्छा था। रोहका के माता-पिता ने अपने पुत्र के लिए भद्दा का विवाह मांगा और उचित समय पर उसे लाकर विवाह संपन्न कराया। दोनों ने सौहार्दपूर्ण जीवन व्यतीत किया। अपने उत्तम आचरण के कारण भद्दा सुंदर स्त्री के नाम से प्रसिद्ध हो उठी। उस समय दो प्रमुख शिष्य और पांच सौ भिक्षुओं का एक दल देश का भ्रमण कर रहा था और किंबिला पहुंचा। रोहका को उनके आगमन की सूचना मिली और वह प्रसन्नतापूर्वक वृहदों और उनके दल के पास गया। रोहका ने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ उनकी शिक्षाएँ सुनीं, शरण लीं (बुद्ध, धम्म-मार्ग, संघ-सम्पत्ति) और पाँच नियमों (शील, नैतिकता) का पालन करने का संकल्प लिया। उसकी पत्नी ने उपोसथ (पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन किया और नैतिकता के अभ्यास में पूर्णतः परिपूर्ण थी। उसे देवों का अनुग्रह प्राप्त था। उसी अनुग्रह से उसने अपने ऊपर लगे एक झूठे आरोप को व्यर्थ कर दिया और उसकी महान पवित्रता और नैतिकता की ख्याति पृथ्वी के कोने-कोने तक फैल गई। क्योंकि वह किंबिला नगर में अकेली रह रही थी जबकि उसका पति व्यापारिक उद्देश्यों से तकशिला में ठहरा हुआ था, एक अवकाश के दिन जब मनोरंजन का मन हुआ, तो अपने साथियों के प्रोत्साहन से वह अपने पति से (तकशिला में) मिल गई, जब गृहस्थ देव (देवदूत) उसे अपनी शक्ति से वहाँ ले गया था। उसी मुलाकात के बाद वह गर्भवती हो गई और उसे किंबिला नगर वापस ले जाया गया। समय बीतने पर जब उसकी गर्भावस्था का पता चला, तो उसकी सास और अन्य लोगों को उस पर व्यभिचारिणी होने का संदेह हुआ। लेकिन स्वयं उस देवता की कृपा से, जब किंबिला नगर गंगा की बाढ़ में डूबा हुआ प्रतीत हुआ, तब उसने अपने दृढ़ निश्चय और सत्य के प्रति दृढ़ संकल्प से, जो उसकी पवित्रता का प्रतीक था, अपने ऊपर लगे कलंक को गंगा की प्रचंड बाढ़ की तरह दूर कर दिया। अपने पति से विवाह करने पर और उसके द्वारा दिए गए चिन्ह और प्रतीक को प्रदर्शित करने पर, उसने सभी के संदेह को दूर कर दिया और अपने पति, रिश्तेदारों और समस्त संसार में सम्मानित हो गई। इसलिए कहा जाता है कि उसकी महान पवित्रता और नैतिकता की ख्याति पृथ्वी के कोने-कोने तक फैल गई।

इसके बाद उनकी मृत्यु हो गई और उनका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में हुआ। जब भगवान (बुद्ध) श्रावस्ती से वहाँ (स्वर्ग) गए और मूंगा वृक्ष के चरणों में स्थित पांडुकम्बाला चट्टान पर विराजमान हुए, और जब देवों का समूह भगवान (बुद्ध) के पास आया और आदरपूर्वक उनका अभिवादन किया, तो सुंदर स्त्री भी उनके पास आकर एक तरफ खड़ी हो गईं। तब भगवान बुद्ध ने उनसे उनके कर्मों के बारे में पूछा:

1 "नीले, पीले, काले, गहरे लाल और लाल रंग के, अनेक रंगों के तंतुओं से ढके हुए (ये मंदारवा वृक्ष हैं)।

2 आपने अपने सिर पर मंदारवा के फूलों की माला धारण की है। हे परम ज्ञानी देवी, ये वृक्ष किसी अन्य लोक में नहीं पाए जाते।

3 हे सर्वप्रसिद्ध, आप तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में क्यों अवतरित हुई हैं? हे देवदूत, पूछे जाने पर बताइए कि यह किस कर्म का फल है।"

भगवान बुद्ध द्वारा इस प्रकार प्रश्न पूछे जाने पर उस देवता (देवदूत) ने इन श्लोकों में उत्तर दिया:

4 "किम्बिला में वे मुझे 'सुंदर स्त्री' के नाम से जानते थे, मैं एक गृहस्थ अनुयायी थी। मेरा विश्वास था, मैं नैतिकता (शील) का अभ्यास करती थी, और हमेशा उदारता में प्रसन्न रहती थी।

5 मैंने धर्मपरायण लोगों को वस्त्र, भोजन, आवास और प्रकाश दिया।

6 शुक्ल पक्ष के चौदहवें, पंद्रहवें और अष्टम तिथि को तथा पखवाड़े के एक विशेष दिन, जो अष्टांग (उपदेशों) से भलीभांति जुड़ा था,

7 मैंने उपोसथ (पखवाड़े का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन किया, हमेशा नैतिकता (शील) के अभ्यास द्वारा आत्मसंयमित रही, प्राणियों की हत्या से परहेज किया और झूठ बोलने से परहेज किया।

8 मैंने चोरी, व्यभिचार और मादक पदार्थों के सेवन से पूरी तरह परहेज किया, पाँच नियमों में प्रसन्न रही, आर्य सत्यों में निपुण रही,

9 एक गृहस्थ महिला। दिव्य दृष्टि वाले बुद्ध के अनुयायी के रूप में, मेरा जीवन परिश्रममय रहा। अवसर प्राप्त करके और अच्छे कर्म करके मैं अपने प्रकाश से नंदनवन (स्वर्ग) में विचरण करता रहा।

10 मैंने अत्यंत दयालु और करुणामय भिक्षुओं को भोजन दिया और तपस्वियों और महान ऋषि को भी, अवसर प्राप्त करके और अच्छे कर्म करके मैं अपने प्रकाश से नंदनवन (स्वर्ग) में विचरण करता रहा।

11 मैंने सदा अष्टांग तपस्या का पालन किया जिससे असीम आनंद प्राप्त हुआ। अवसर प्राप्त करके और अच्छे कर्म करके मैं अपने प्रकाश से नंदनवन (स्वर्ग) में विचरण करता रहा।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.6

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.6 --------------------------->>>> अगला

2.6 सोनादिन्ना का निवास (23)
(सोनादिन्ना-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती, जेतवन में निवास कर रहे थे। उस समय नालंदा में सोनादिन्ना नाम की एक गृहस्थ अनुयायी, श्रद्धा और आनंद से भरी, आतिथ्य सत्कारपूर्वक और नैतिकता (शील) के निरंतर अभ्यास और महान पवित्रता के साथ, चार आवश्यक तत्वों के साथ भिक्षुओं की सेवा करती थी और अष्टांगिक (उपोसथ, पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन करती थी। उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और यद्यपि उनमें चार सत्यों को ध्यान का विषय बनाकर विकसित करने की योग्यता थी, इसलिए वे आध्यात्मिक जागृति की प्रथम अवस्था (सोतपना) की प्रवेशिका बनीं। फिर, एक विशेष रोग से पीड़ित होकर, उनका निधन हो गया और वे तैंतीस (स्वर्ग) में पुनरागमन हुईं। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे इन श्लोकों में प्रश्न किया:

1 "हे देवी, आप अत्यंत सुंदर हैं और सभी दिशाओं को उपचार करने वाले तारे के समान प्रकाशित कर रही हैं।

2 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख क्यों उत्पन्न होते हैं?

3 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवी ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "नालंदा में लोग मुझे सोनदिन्ना के नाम से जानते थे, मैं एक गृहस्थ अनुयायी थी। मुझे आस्था थी, मैं सदाचारी थी और उदारता से प्रेम करती थी।"

6 मैंने धर्मपरायण लोगों को वस्त्र, भोजन, आवास और प्रकाश दिया।

7 शुक्ल पक्ष के चौदहवें, पंद्रहवें और अष्टम तिथि को तथा पखवाड़े के एक विशेष दिन, जो अष्टांगिक नियमों से भलीभांति जुड़ा हुआ था,

8 मैंने उपोसथ (पखवाड़े का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन किया, सदा शील के अभ्यास द्वारा आत्मसंयमित रहते हुए, प्राणियों की हत्या से परहेज करते हुए और झूठ बोलने से बचते हुए।

9 चोरी, व्यभिचार और मादक पदार्थों के सेवन से दूर रहकर, पाँच नियमों में प्रसन्नता का अनुभव करते हुए, आर्य सत्यों में निपुण होकर, मैं गौतम बुद्ध की एक गृहस्थ अनुयायी थी, जो दूरदर्शी और विख्यात थे।

10 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होती हूँ, और वहाँ जो भी सुख मुझे भाते हैं, वे सब मुझे प्राप्त होते हैं।

11 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको अपने जन्म के समय किए गए पुण्य कर्मों के बारे में बताता हूँ। इसी कारण मेरा तेज और तेजस्वी रूप सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.7

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.7 -------------------------->>>> अगला

2.7 उपोसथा का निवास (24)
(उपोसथा-विमान)

यह पिछले निवास के समान है, अंतर यह है कि यहाँ उपोसथा साकेत में एक गृहस्थ महिला अनुयायी थीं, और आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना को यह समझाने के बाद कि उनकी सुंदरता अब सभी दिशाओं को कैसे प्रकाशित करती है, उन्होंने अपने एक दोष के बारे में बताया:

12 "मैंने अक्सर नंदन (स्वर्ग) के बारे में सुना और मेरे मन में लालसा उत्पन्न हुई; मेरा मन उस पर तड़पते हुए नंदन (स्वर्ग) में उठा।

13 मैंने गुरु, प्रबुद्ध (बुद्ध), सूर्य के सगे संबंधियों से प्रार्थना नहीं की; मेरा मन निम्न (स्वर्ग, निर्वाण के बजाय) पर लगा हुआ था जिसके लिए मैं बाद में पश्चाताप करती हूँ।"

वृहद ने कहा:

14 “हे उपोसथ, तुम इस महल में कितने समय तक रहोगे? हे देवदूत, यदि तुम जानते हो, तो बताओ तुम्हारा जीवनकाल कितना होगा?”

15 “हे महान ऋषि, मैं यहाँ साठ हजार वर्ष और तीन करोड़ वर्ष तक रहूँगा; यहाँ से मृत्यु के बाद मैं मनुष्यों के साथ संगति में रहूँगा।”

वृहद ने कहा:

16 "हे उपोसथ, भयभीत मत हो; स्वयंजागृत (बुद्ध) ने तुम्हें एक प्रख्यात षट्पन्न (सोटापना, आध्यात्मिक जागृति का प्रथम चरण) घोषित किया है; तुम्हारे लिए बुरे जन्मों का भय समाप्त हो गया है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.8,2.9

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.8 और I.2.9 -------------------------->>>> अगला

2.8, 2.9 निद्दा और सुनीद्दा के निवास (25, 26)
(निद्दा-सुनीद्दा-विमान)

आठवें और नौवें निवास की उत्पत्ति राजगृह में हुई है। और यह समझना आवश्यक है (कि वहाँ ये श्लोक हैं):

"गौतम (बुद्ध) की एक गृहस्थ अनुयायी निद्दा... जो बहुत प्रसिद्ध है। इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है।" और सुनीद्दा के लिए भी यही बात है, जैसा कि कहा गया है। श्लोक में भी कुछ नया नहीं है। इसलिए कुछ पुस्तकों से इन्हें पंक्तियों की पुनरावृत्ति के कारण हटा दिया गया है: जैसा कि कहा गया है: "(आप जो खड़ी हैं) असाधारण सुंदरता के साथ... और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है। वह देवता प्रसन्न हुए... यही फल (लाभ) था। राजगृह में, वे मुझे निद्दा, एक गृहस्थ अनुयायी (संख्या 8), सुनीद्दा (संख्या 9) के रूप में जानते थे... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.10

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.10 -------------------------->>>> अगला

2.10 प्रथम भिक्षादाता का निवास (27)
(पथम-भिक्खदायिक-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध) श्रावस्ती में निवास कर रहे थे। उस समय उत्तरमधुरा में एक स्त्री थी जिसका जीवनकाल समाप्त हो चुका था और वह दुखद जन्म (पशु, प्रेत या नरक) के लिए जन्म लेने वाली थी। भोर होते समय जब भगवान (भगवान बुद्ध) महान करुणा की प्राप्ति से उभर रहे थे और संसार का अवलोकन कर रहे थे, तब उन्होंने उस स्त्री को देखा। उसे अच्छे पुनर्जन्म में स्थापित करने की इच्छा से, वे अकेले मथुरा गए और भिक्षा की तलाश में शहर के बाहरी इलाके में प्रवेश किया। उस समय स्त्री ने अपने घर में भोजन तैयार कर लिया था, उसे एक तरफ रख दिया था, एक घड़ा लेकर जलस्रोत पर गई थी और स्नान किया था। वह घड़ा भरकर घर लौट रही थी जब उसने भगवान (भगवान बुद्ध) को देखा और कहा, "शायद पूज्यवर ने पहले ही भिक्षा ग्रहण कर ली है?" जब भगवान बुद्ध ने कहा, "हम ग्रहण करेंगे", तो वह जान गई कि उन्होंने अभी तक भिक्षा ग्रहण नहीं की है। इसलिए उसने अपना घड़ा नीचे रखा, भगवान बुद्ध के पास गई, उन्हें प्रणाम किया और कहा, "आदरणीय महोदय, मैं भिक्षा देना चाहती हूँ। कृपया मुझे अनुमति दें।" भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति दे दी। उनकी सहमति जानकर वह आगे बढ़ी, एक साफ-सुथरी जगह पर आसन तैयार किया और उनके आने की प्रतीक्षा करने लगी। वे अंदर आए और बैठ गए। उसने उन्हें भोजन दिया और स्वयं बैठ गई। जब उनका भोजन समाप्त हो गया और उन्होंने कटोरे से हाथ हटा लिया, तो भगवान बुद्ध ने उसे धन्यवाद दिया और अपने मार्ग पर चल दिए। उसने उनका आशीर्वाद सुना और अपार आनंद और प्रसन्नता का अनुभव करते हुए, बुद्ध के कारण प्राप्त आनंद को न खोते हुए, उनके ओझल होने तक प्रणाम करती रही। कुछ ही दिनों के बाद, उसका निधन हो गया और वह तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में पुनर्जन्म ले लिया। अब पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना, जब देवताओं के बीच भ्रमण कर रहे थे, तब उन्होंने एक ऐसी देवदूत को देखा जो देवताओं की महान मानसिक शक्ति और महान महिमा से परिपूर्ण थी

और देवदूतों के समान ही अपार वैभव का आनंद ले रही थी, जिसकी सीमा बुद्ध के ज्ञान से भी निर्धारित नहीं की जा सकती। उन्होंने इन श्लोकों में उस देवदूत द्वारा किए गए पुण्य कर्म के बारे में पूछा। श्लोक पिछले श्लोकों के समान हैं:

1 "हे देवता, आप अत्यंत सुंदर हैं और समस्त दिशाओं को प्रकाशमान कर रही हैं, जैसे कोई चमत्कारी तारा।

2 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप यहाँ कैसे समृद्ध होती हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख कैसे प्राप्त होते हैं?

3 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता समस्त दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "पिछले जन्म में, मनुष्य जगत में मनुष्य के रूप में मेरा जन्म हुआ था।"

6 मैंने निर्मल, शांत और भ्रममुक्त बुद्ध को देखा, जिन्हें मैंने प्रसन्न मन से अपने हाथों से दान दिया।

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, और इसी कारण मेरे हृदय को प्रिय सभी सुख यहाँ-वहाँ उत्पन्न होते हैं।

8 इसी कारण मेरी तेजस्वी महिमा ऐसी है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु2.11

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.2.11 -------------------------->>>> अगला

2.11 द्वितीय भिक्षादाता का महल (28)
(दुतिया-भिक्खदायिका-विमान)

पिछले महल के समान, सिवाय इसके कि यहाँ भगवान (भगवान बुद्ध) राजगृह में थे, और स्त्री ने एक निर्मल, शांत मन वाले, भ्रम रहित भिक्षु को भिक्षा दी।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु3.1.

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.1 -------------------------->>>> अगला

3.1. भव्य महल (29)
(उलर-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में, बाँस के वन में निवास कर रहे थे। उस समय राजगृह में, आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना की सेवा करने वाले एक परिवार में एक युवती रहती थी, जो दान देने में लीन और प्रेम रखती थी। उस घर में मुख्य भोजन से पहले कठोर और नरम भोजन आदि तैयार किया जाता था। फिर वह युवती अपने हिस्से का आधा भाग दान कर देती थी। दान दिए बिना वह भोजन नहीं करती थी। यहाँ तक कि जब उसे कोई दान ग्रहण करने योग्य नहीं दिखता था, तब भी वह कुछ भोजन अलग रख देती थी, जब तक कि उसे

कोई योग्य व्यक्ति न मिल जाए। वह भिखारियों को भी दान देती थी। अब उसकी माता प्रसन्न और प्रसन्न हुई और उसने मन ही मन कहा, "मेरी बेटी दान देने में लीन और प्रेम रखती है," और उसने उसे दुगुना भाग दिया। जब उसका एक भाग बाँट दिया गया, तो माता ने उसे एक और भाग दिया। उसने उसमें से भी बाँटना शुरू कर दिया। समय बीतने पर, जब वह बालिग हुई, तो उसके माता-पिता ने उसे उसी शहर के एक दूसरे परिवार के बेटे को दे दिया। परन्तु वह परिवार पाखंडी और अविश्वासी था। तभी आदरणीय भिक्षु महा-मोग्गलाना भिक्षा मांगते हुए घर-घर गए और उस युवती के ससुर के घर के द्वार पर रुके। उन्हें देखकर युवती प्रसन्न होकर बोली, "प्रभुत्वपूर्वक अंदर आइए," और उन्हें अंदर ले जाकर आदरपूर्वक प्रणाम किया। उसने अपनी सास द्वारा अलग रखी हुई रोटी ले ली। अपनी सास को देख न पाने के कारण उसने मन ही मन कहा, "मैं उन्हें इसके बारे में (बाद में) बताऊंगी और उन्हें (अपने इस नेक काम से) प्रसन्न करूंगी।" और उसने रोटी भिक्षु को दे दी। भिक्षु ने उसका धन्यवाद किया और अपने मार्ग पर चल दिए। युवती ने अपनी सास से कहा, "मैंने वह रोटी जो आपने अलग रखी थी, भिक्षु महा-मोग्गलाना को दे दी है।" यह सुनकर सास रो पड़ी, "यह कैसी गुस्ताखी है! तुमने बिना पूछे ही एक भिक्षु को मेरी कोई चीज़ दे दी!" और क्रोध से आग बबूला होकर, सही-गलत का ध्यान रखे बिना, उसने मूसल का एक टूटा हुआ टुकड़ा उठाया और लड़की के कंधे पर मार दिया। क्योंकि लड़की का पालन-पोषण बहुत कोमल तरीके से हुआ था और उसकी उम्र समाप्त हो चुकी थी, उसे असहनीय पीड़ा हुई और कुछ ही दिनों में उसकी मृत्यु हो गई और वह तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लेकर लौटी। यद्यपि उसने अन्य अच्छे कर्म भी किए थे, परन्तु उस विशेष दान को करना सर्वोपरि था। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने ऊपर वर्णित अनुसार जाकर उनसे प्रश्न किया:

1 "आपका दल (परिचारकों का समूह) भव्य है, आपकी सुंदरता सभी दिशाओं में चमक रही है। स्त्रियाँ नाच-गा रही हैं, देव-युवतों की पूजा की जा रही है।

2 हे देव-देवता, वे आपको आनंदित करते हैं, वे आदरपूर्वक आपकी सेवा करते हैं; ये आपके स्वर्णिम महल हैं, आप जो देखने में सुंदर हैं।"

3 और आप उन पर स्वामिनी हैं, हर तरह के सुख से परिपूर्ण हैं, कुलीन कुल की हैं, शक्तिशाली हैं; देवों की सभा में आप आनंदित होती हैं। हे देवदूत, जब पूछा जाए, तो बताइए कि यह किस कर्म का फल है?

इस प्रकार बड़े ने पूछे जाने पर देवदूत ने समझाया:

4 "जब मैं मनुष्य के रूप में पैदा हुई, तो मैं एक ऐसे परिवार में बहू थी जो नैतिकता (शील) के पालन में गरीब था।

5 अविश्वासियों और कंजूस लोगों के बीच, मैं विश्वासी होते हुए भी नैतिकता (शील) का पालन करती थी। जब आप भिक्षा मांगने जा रही थीं, तो मैंने आपको एक रोटी दी।

6 मैंने अपनी सास से कहा, 'क्या यहाँ कोई साधु आया था, जिसे मैंने प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से रोटी दी?'

7 इस पर सास ने ताना मारते हुए कहा, 'बहू, तुम्हारी परवरिश ठीक से नहीं हुई है। तुमने मुझसे यह कहकर पूछना भी नहीं चाहा कि तुम किसी साधु को देना चाहती हो।'

8 तब मेरी सास क्रोधित होकर मुझ पर मूसल से प्रहार करने लगीं। वह मेरे कंधे पर लगा और मुझे चोट लगी। मैं अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकी।

9 और शरीर के चूर्ण होने पर, मैं पूर्णतः मुक्त होकर वहाँ से विदा होकर तैंतीसवें स्वर्ग के देवदूतों के साथ अवतरित हुई।

10 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ-वहाँ समृद्धि प्राप्त करती हूँ और जो भी सुख मुझे प्रिय हैं, वे सब उत्पन्न होते हैं।

11 इसी कारण मेरा तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु3.2

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.2 --------------------------->>>> अगला

3.2 गन्ना महल (30)
(उच्चुदैका-विमान)

भगवान (बुद्ध) राजगृह में निवास कर रहे थे... इत्यादि, जैसा कि पहले बताया गया है। परन्तु इसमें अंतर यह है: उन्होंने गन्ना दान किया, उन पर एक गोबर गिरा, वे उसी क्षण मर गईं और तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लिया। उसी रात वे वृद्ध के समक्ष आईं और चंद्रमा और सूर्य के समान, गिद्ध शिखर को प्रकाशमान करते हुए, उन्होंने उन्हें प्रणाम किया और भक्ति भाव से एक तरफ खड़ी रहीं। तब वृद्ध ने उनसे प्रश्न किया:

1 "देवताओं के साथ पृथ्वी को प्रकाशमान करके, आप चंद्रमा और सूर्य के समान अपनी चमक और सौंदर्य से प्रकाशमान हैं, आपकी महिमा ब्रह्मा के समान है, जो इंद्र सहित तैंतीस स्वर्गों के देवदूतों को भी क्षीण कर देती है।

2 मैं आपसे पूछता हूँ, जो नीले कमलों की माला धारण करती हैं, माथे पर मालाएँ पहनती हैं, जिनकी त्वचा स्वर्णमय है, जो सुशोभित हैं, उत्तम वस्त्र धारण करती हैं: हे सुंदर देवदूत, आप कौन हैं जो मुझे आदर दे रही हैं?

3 आपने अपने पूर्व जन्म में मनुष्य के रूप में कौन सा कर्म किया था? क्या आपने पुण्य कर्मों का दान किया था, या शील का अभ्यास किया था? हे महान ख्यातिप्राप्त, आप किस कर्म के फल से पुनर्जन्म प्राप्त कर रही हैं? हे देवदूत, पूछे जाने पर, समझाएँ कि यह किस कर्म का फल है।"

इस प्रकार बड़े बुजुर्ग द्वारा पूछे जाने पर, देवता (देवदूत) ने समझाया:

4 "हे पूज्यवर, अभी इसी गाँव में आप भिक्षा मांगने हमारे घर आए थे। इसलिए मैंने आपको अत्यंत प्रसन्नता और असीम आनंद के साथ गन्ने का एक छोटा टुकड़ा दिया।

5 और उसके बाद मेरा गन्ना, बहू?' 'मैंने न तो उसे फेंका और न ही खाया। मैंने उसे स्वयं एक संत भिक्षु को दे दिया।'

6 'अब यहाँ अधिकार आपका है या मेरा?' इस प्रकार मेरी सास ने मुझे धिक्कारते हुए कहा। कुर्सी उठाकर उसने मुझे एक प्रहार किया। वहीं से मेरा प्राण समाप्त हो गया और मैं एक देवता (देवदूत) बन गया।

7 यही वह पुण्य कर्म है जो मैंने किया, और मैं स्वयं उस कर्म का सुखद फल भोगता हूँ। मैं देवताओं (देवदूतों) के साथ आनंद लेता हूँ: मुझे पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों में आनंद मिलता है।

8 यही वह पुण्य कर्म है जो मैंने किया, और मैं उस कर्म का सुखद फल भोगता हूँ, देवताओं (देवदूतों) के मुखिया द्वारा संरक्षित, तैंतीस (स्वर्ग) द्वारा सुरक्षित, पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों से सुसज्जित।

9 यही पुण्य का फल है, छोटा नहीं। गन्ने का मेरा दान महान फलदायी है। मैं देवताओं (देवदूतों) के साथ आनंद लेता हूँ; मुझे पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों में आनंद मिलता है।

10 यही पुण्य का फल है। पुण्य का, छोटा नहीं। गन्ने के प्रति मेरी आस्था का उपहार महिमा में महान है; देवताओं के मुखिया (देवदूतों) द्वारा संरक्षित, तैंतीस (स्वर्ग) द्वारा संरक्षित, मैं नंदनवन (स्वर्ग) में हजार नेत्रों वाले के समान निवास करता हूँ।

11 हे पूज्यवर, दयालु और बुद्धिमान, मैंने आपके पास आकर आपके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। फिर मैंने आपको प्रसन्नता और असीम आनंद के साथ गन्ने का छोटा टुकड़ा भेंट किया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु3.3

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.3 -------------------------->>>> अगला

3.3 देवमहल (31)
(पल्लंक-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती, जेतवन में निवास कर रहे थे। उसी समय श्रावस्ती में एक गृहस्थ अनुयायी की पुत्री का विवाह उसी नगर के एक अन्य परिवार के पुत्र से हुआ, जो समान वंश और परिस्थितियों का था। वह सौम्य स्वभाव की, नैतिकता में परिपूर्ण, अपने पति का आदर करने वाली, पाँचों नियमों (शील, नैतिकता) का पालन करने वाली और विधिपूर्वक पालन करने वाली (उपोसथ, पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) पुत्रियों का भी पालन करती थी। बाद में उनकी मृत्यु हो गई और वे तैंतीस (स्वर्ग) में अवतरित हुईं। जैसा कि ऊपर वर्णित है, आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना वहाँ गए और उनसे प्रश्न किया:

1 "हे महान महिमा की देवी, आप अनेक रूप धारण करके, रत्नों और सोने से सजे, पुष्पों से अलंकृत, उत्तम दीवान पर विराजमान हैं।

2 और आपकी अप्सराएँ चारों ओर नृत्य करती हैं, गाती हैं और आनंद मनाती हैं। आप देवों की समान मानसिक शक्ति से परिपूर्ण हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेने पर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी इस तेजस्वी महिमा और सुंदरता से सभी दिशाएँ प्रकाशित क्यों होती हैं?"

उसने इन श्लोकों में उसे समझाया:

3 "जब मैं मनुष्य के रूप में पैदा हुई, तो मैं एक धनी परिवार में बहू थी। मैं क्रोध रहित, अपने पति की आज्ञाकारी, और पाक्षिक व्रत एवं पश्चात्ताप के दिन (उपोसथा, पखवाड़े का उपवास और पश्चात्ताप) में सजग थी।

4 जब मैं मनुष्य के रूप में पैदा हुई, तो मैं युवा और निर्दोष थी, और मेरा मन आनंद से परिपूर्ण था। मैंने अपने पति को प्रसन्न किया। दिन-रात मैंने उन्हें प्रसन्न करने के लिए कार्य किया। मैं प्राचीन काल से ही नैतिकता का पालन करने वाली थी।

5 प्राणियों की हत्या न करने वाली, चोर न होने वाली, ब्रह्मचर्य का पालन करने में पूर्णतः पवित्र; शराब न पीने वाली और झूठ न बोलने वाली, मैं प्रशिक्षण के नियमों का पालन करने

वाली थी। 6 शुक्ल पक्ष के चौदहवें, पंद्रहवें और आठवें दिन तथा पाक्षिक व्रतों से सुसंगत एक विशेष दिन, मैंने परमानंदित मन से पाक्षिक व्रत एवं पश्चात्ताप के दिन (उपोसथा, पखवाड़े का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन किया, और मैं नियमों के अनुसार चलने वाली थी।" मैंने अपने हृदय में उत्साह के साथ धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का अनुसरण किया।

7 और इस आर्य (महान) परोपकार का कार्य करते हुए, जो कि गौरवशाली अष्टलोक (उपदेशों) से जुड़ा हुआ है, मैं, जो पूर्व में शुभचिंतक (बुद्ध) की शिष्या थी, फलस्वरूप प्रसन्न, मनमोहक और अपने स्वामी (पति) की आज्ञाकारी थी।

8 क्योंकि मैंने सजीव जगत में ऐसे धार्मिक कर्म किए, इसलिए मुझे विशिष्टता प्राप्त हुई। शरीर के टूटने पर, देवों (देवदूतों) की मानसिक शक्ति (शक्ति) से अगली अवस्था प्राप्त करके, मैंने एक शुभ पुनर्जन्म लिया।

9 एक भव्य, आनंदमय महल में, अप्सराओं के समूह से घिरी हुई, तेजस्वी देवों (देवदूतों) का एक समूह मुझे प्रसन्न करता है, जो दीर्घायु होकर देव-महल में आए हैं।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु3.4

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.4 --------------------------->>>> अगला

3.4 लता का निवास (32)
(लता-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती, जेतवन में निवास कर रहे थे। उस समय श्रावस्ती में रहने वाली एक गृहस्थ अनुयायी की पुत्री, लता, जो एक विद्वान, निपुण और बुद्धिमान कन्या थी, अपने पति के घर गई। वह अपने पति, अपने सास-ससुर को प्रिय थी, उसकी वाणी मधुर थी, वह नौकरों के प्रति दयालु और भली थी, घर के कामकाज को संभालने में सक्षम थी, उसका स्वभाव सौम्य था, वह नैतिकता के पूर्ण अभ्यास में निपुण थी और उदारता में आनंदित रहती थी; वह पांच नियमों (शील, नैतिकता) का पालन करने और व्रत के दिनों (उपोसथ, पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) के अनुष्ठानों का पालन करने में तत्पर थी। कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गई और वह महान राजा वेसवना की पुत्री के रूप में पुनर्जन्म लिया (स्वर्ग में)। लेकिन उसका नाम फिर भी लता ही रहा। उसके अलावा उसकी चार अन्य बहनें भी थीं; सज्जा, पवारा, अच्चिमति और सूत। इन पाँचों को देवों के राजा सक्का ने लाया था और उन्हें नर्तकियों के रूप में अपने परिचारिकाओं के पद पर नियुक्त किया था। लेकिन लता अपनी गायन, नृत्य आदि कलाओं में निपुणता के कारण सबकी प्रिय थीं। जब वे सब एकत्रित हुईं तो संगीत में निपुणता को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ। वे सब महान राजा वेसवना के पास गईं और उनसे पूछा, "पिताजी, हम में से नृत्य आदि में सर्वश्रेष्ठ कौन है?" उन्होंने कहा, "पुत्रियों, अनोटत्ता झील के किनारे देवों की सभा में जाकर अपना संगीत प्रदर्शन करो। वहाँ तुम्हारी प्रतिभा प्रकट होगी।" उन्होंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा। वहाँ लता के नृत्य को देखकर देव-युवक अपनी हंसी नहीं रोक पाए। हँसी से लोटपोट, विस्मय से भरे हुए, लगातार तालियाँ बजाते और वस्त्र लहराते हुए उन्होंने ऐसा शोर मचाया कि मानो हेमवंत (हिमालय) कांप उठा। लेकिन जब बाकी लोग नाचने लगे तो वे सर्दी के मौसम में कोयल की तरह चुपचाप बैठे रहे। इस प्रकार सभा में लता की विशेषता स्पष्ट हो गई। तब देव-देवी सूता के मन में यह विचार आया; “अब किस कर्म के कारण इस लता ने हम सब को यश और वैभव में पीछे छोड़ दिया है? आइए, मैं लता के कर्म के बारे में पूछती हूँ।” उसने पूछा। दूसरी ने उसे समझाया कि महान राजा वेसवना ने वही कहानी आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना को तब सुनाई थी जब वे देव-देवी यात्रा पर आए थे। प्रश्न के मूल कारण से भगवान बुद्ध को यह बात बताते हुए, वरिष्ठ ने कहा:

1 "लता, सज्जा, पवारा, अच्चिमति और सूता, हे देवता, हे राजा वेसवना की पुत्रियाँ, हे महान राजा, हे गुणधर्मों से परिपूर्ण।

2 यहाँ पाँचों स्त्रियाँ ठंडे जल में, कमलों से भरी पवित्र नदी में स्नान करने आईं। जब इन देवताओं ने वहाँ स्नान किया, खेला, नृत्य किया और गीत गाए, तो सूता ने लता से कहा:

3 हे नीले कमलों की माला धारण करने वाली, माथे पर माला धारण करने वाली, सुनहरे रंग की त्वचा वाली, गहरे तांबे जैसी आँखों वाली, आकाश के समान चमकने वाली, दीर्घायु, आपकी प्रसिद्धि किस कारण से है?"

4 हे प्रियतम, तुम अपने स्वामी की सबसे प्रिय क्यों हो, सचमुच अत्यंत सुंदर और मनमोहक, नृत्य, गायन और वाद्य संगीत में निपुण क्यों हो? हे पुरुष और स्त्रियों द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर हमें बताओ।

सुता द्वारा पूछे जाने पर लता ने कहा:

5 "जब मैं मनुष्य के रूप में पैदा हुई, तो मैं एक बहुत ही समृद्ध परिवार में बहू थी। मैं क्रोध रहित, अपने पति की आज्ञाकारी और पाक्षिक व्रतों (उपोसथ, पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन करने वाली थी।

6 जब मैं मनुष्य के रूप में पैदा हुई, तो मैं युवा और भोली थी, मेरा मन आनंद से भरा हुआ था, मैंने अपने पति, देवर, सास-ससुर और नौकरों को प्रसन्न किया। इसी से मेरी प्रतिष्ठा बनी।

7 मैंने स्वयं उन धार्मिक कर्मों से चार रूपों में विशिष्टता प्राप्त की है: (दीर्घ) आयु, सौंदर्य, सुख और बल। मैं खूब खेलकूद और आनंद का अनुभव करती हूँ।

8 क्या तुमने सुना है कि यह लता क्या कहती है? हमने जो पूछा, उसने उसका उत्तर दिया। 'पति हम स्त्रियों के लिए सर्वोपरि गंतव्य हैं, वे हमारे लिए महिमामय देवता हैं।

9 हम सभी धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) पर चलकर अपने पति की सेवा करें, जहाँ भी स्त्रियाँ पवित्र पत्नियाँ हों। धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) पर चलने वाली सभी महिलाएं अपने पति की सेवा करती हैं, उन्हें वह सब प्राप्त होगा जिसके विषय में लता ने कहा था।

10 ठीक इसी प्रकार, श्रेष्ठ जनों की एक स्त्री शिष्या, जो विश्वास रखती है, अपने पति पर निर्भर रहती है, अपने स्वामी (पति) के प्रति पवित्र है, क्रोध का नाश करती है, लोभ पर विजय प्राप्त करती है, वह जो धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) पर चलती है, स्वर्ग में आनंदित होती है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु3.5

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.5 --------------------------->>>> अगला

3.5 गुट्टिला का महल (33)
(गुट्टिला-विमान)

जब भगवान (भगवान बुद्ध) राजगृह में निवास कर रहे थे, तब पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना, जैसा कि ऊपर वर्णित है, देव-यात्रा पर तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में गए। वहाँ उन्होंने क्रमानुसार छत्तीस महलों में छत्तीस देव-कन्याओं को देखा, जिनमें से प्रत्येक एक हजार अप्सराओं के दल के साथ महान देव-आनंद का आनंद ले रही थी। उन्होंने क्रमानुसार ("आप जो असाधारण सुंदरता से सुसज्जित हैं") श्लोकों से उनके द्वारा पहले किए गए (अच्छे) कर्म के बारे में पूछा। उनके प्रश्न के उत्तर में उन्होंने श्लोकों से उत्तर दिया, जिनमें से पहला है: "मैं वह थी जिसने सबसे सुंदर वस्त्र दिए।" तब वरिष्ठ भिक्षु वहाँ से मनुष्यलोक में आए और भगवान (भगवान बुद्ध) को यह कथा सुनाई। यह सुनकर भगवान बुद्ध ने कहा, "मोग्गलाना, न केवल तुम्हारे द्वारा देवताओं से प्रश्न पूछे गए हैं और उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिए हैं, बल्कि वास्तव में अतीत में मैंने भी उनसे प्रश्न पूछे थे और उन्होंने इसी प्रकार उत्तर दिए थे।" बड़े गुरु के आग्रह पर उन्होंने गुट्टिला का जीवन वृत्तांत सुनाया, जो उनके अपने अतीत की कहानी थी।

1 "मैंने सात तारों वाला वीणा, मधुर और सुरीली ध्वनि उत्पन्न की। कोई मुझे नृत्य मंच पर बुलाता है। कोसिया, मेरी शरण बनो।"

2 "मैं तुम्हारी शरण हूँ। मैं गुरुओं का आदर करने वाला हूँ। शिष्य तुम्हें पराजित नहीं कर सकता; गुरु, तुम शिष्य को पराजित करोगे।"

ऐसा कहा जाता है कि कश्यप (पूर्व बुद्ध) के समय में मनुष्य रूप में विद्यमान छत्तीस स्त्रियों ने अमुक कर्म किए थे। उनमें से एक ने वस्त्र दिए; एक ने चमेली की माला; एक ने इत्र; एक ने उत्तम फल; एक ने गन्ने का रस दिया। एक ने पूर्व बुद्ध के चैत्य (ध्यान कक्ष वाले मंदिर) पर पाँच उंगलियों का इत्र का निशान लगाया; एक ने उपोसथ (पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन किया; एक ने भोजन के समय भिक्षु को पानी पिलाया; एक ने क्रोधहीन होकर चिड़चिड़े सास-ससुर की सेवा की; एक ने दास की तरह परिश्रम किया; एक ने भिक्षा मांगने वाले भिक्षु को दूध-चावल दिया; एक ने गुड़ दिया; एक ने गन्ने का एक टुकड़ा; एक ने तिम्बारू फल; एक ने मीठा खीरा; एक ने लता का फल; एक ने फरुसक (फूल); एक ने मिट्टी का कोयला दिया; एक ने कमल की जड़ों का एक मुट्ठी भर हिस्सा; एक ने मुट्ठी भर फूल; एक ने कमल की जड़ों का एक गुच्छा; एक ने निम के पत्तों का एक मुट्ठी भर हिस्सा दिया; एक ने खट्टी दलिया दी; एक ने तिल का केक दिया; एक ने कमरबंद दिया; एक ने कंधे का पट्टा दिया; एक ने बैज दिया; एक ने पंखा दिया। एक ताड़ के पत्ते का पंखा; एक मोर पंख का चंवर; एक छाता; एक चप्पल; एक केक; एक मिठाई; एक मीठा केक। वे प्रत्येक हजार अप्सराओं के दल के साथ तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) की सेविकाओं के रूप में पुनर्जन्म लेकर आईं। गुरु गुट्टिला द्वारा पूछे जाने पर, उन्होंने बारी-बारी से अपने-अपने अच्छे कर्मों का वर्णन किया।"एक महिला जिसने बेहद खूबसूरत पोशाकें दीं..." से शुरू होकर आगे भी।

3 हे देवदूत, आप अतुलनीय सौंदर्य से परिपूर्ण हैं और समस्त दिशाओं को प्रकाशमान कर रही हैं, जैसे कोई दिव्य तारा।

4 आपका सौंदर्य ऐसा क्यों है? आप किस कारण से समस्त दिशाओं को समृद्ध कर रही हैं और आपके द्वारा प्रज्वलित सभी सुखों का उद्‌भव हो रहा है?

5 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, आपने मनुष्य के रूप में जन्म लेकर कौन सा पुण्य कर्म किया था? आपका यह तेजस्वी सौंदर्य ऐसा क्यों है और आपका सौंदर्य समस्त दिशाओं को प्रकाशित कर रहा है?

6 मोग्गलाना द्वारा पूछे गए प्रश्न से प्रसन्न होकर उस देवदूत ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

7 "जिस स्त्री ने सबसे उत्तम वस्त्र दिए, वह पुरुषों और स्त्रियों में यशस्वी थी। इस प्रकार, जिसने इतनी मनभावन वस्तुएँ दीं, वह एक आकर्षक देवलोक में पहुँची और उसे प्राप्त हुई।

8 मुझ जैसी स्त्री के निवास को देखो। मैं एक अप्सरा हूँ जो इच्छा अनुसार कोई भी रूप धारण कर सकती है। मैं हजार अप्सराओं में सबसे यशस्वी हूँ। पुण्य के फल को देखो।

9,10 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है... और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"

वस्त्र देने वाली स्त्री के इस निवास की तरह, अगले चार निवासों का भी विस्तार किया जाना चाहिए। श्लोक 3-10 को चार बार दोहराया जाना है, जिसमें निम्नलिखित परिवर्तन होंगे: (1) सबसे उत्तम फूल देने वाली स्त्री (2) सबसे उत्तम इत्र देने वाली स्त्री (3) सबसे उत्तम फल देने वाली स्त्री (4) सबसे उत्तम व्यंजन देने वाली स्त्री (सबसे उत्तम वस्त्र देने वाली स्त्री के स्थान पर)।

18 "मैंने भगवान कश्यप (पूर्व बुद्ध) के स्तूप (पवित्र स्मारक) पर पंच उंगलियों का इत्र चिह्न लगाया।"

पंच उंगलियों के इत्र चिह्न के इस भाग का वर्णन करते हुए, अगले चार भागों का भी वर्णन करते हुए श्लोकों को दोहराया जाना चाहिए, लेकिन श्लोक 18 के स्थान पर निम्नलिखित परिवर्तन के साथ:

19 "मैंने भिक्षुओं और भिक्षुणियों को मार्ग पर यात्रा करते देखा। जब मैंने उनसे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना, तो मैंने एक दिन (उपोसथ, पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) किया..."

20 "जल में खड़े होकर, श्रद्धापूर्वक मैंने एक भिक्षु को जल पिलाया..."

21 एक सास और ससुर, जो चिड़चिड़े, गुस्सैल और कठोर थे, उनकी मैंने निर्दयता से, अपने नैतिक आचरण में सचेत रहते हुए सेवा की..." 22

मैं दूसरों के लिए काम करने वाली, कर्तव्यनिष्ठ दासी, क्रोध रहित, अभिमान रहित, और अपनी कमाई दूसरों के साथ बाँटने वाली थी।

23 इस प्रकार कर्म करके, अच्छे पुनर्जन्म में मुझे आनंद मिलता है।

24 मैंने भिक्षा माँग रहे एक भिक्षु को दूध-चावल दिए, मेरे महल को देखो...

जिस प्रकार दूध-चावल देने वाले के इस महल का विस्तार किया जाना चाहिए, 25 ऐसे महल हैं;

25 मैंने गुड़ दिया... 26

मैंने गन्ने का एक छोटा टुकड़ा दिया...

27 मैंने तिम्बारू फल दिया...

28 मैंने एक मीठा खीरा (कक्करिका) दिया...

29 मैंने एक खीरा (एललुका) दिया...

30 मैंने लता का फल दिया...

31 मैंने फरुसक (फूल) दिया...

32 मैंने हाथों के लिए अग्नि पात्र दिया...

33 मैंने मुट्ठी भर हरी सब्जियां दीं...

34 मैंने मुट्ठी भर छोटे फूल दिए...

35 मैंने कमल की कलियों का एक गुच्छा दिया...

36 मैंने मुट्ठी भर नीम दिया...

37 मैंने आम का दलिया दिया...

38 मैंने खली दी... 39

मैंने कमरबंद दिया...

40 मैंने कंधे का पट्टा दिया... 41

मैंने पट्टी दी ... 42

मैंने पंखा दिया...

43 मैंने ताड़ के पत्ते का पंखा दिया...

44 मैंने मोर पंख का चिराग दिया...

45 मैंने एक छाता दिया...

46 मैंने चप्पलें दीं...

47 मैंने एक केक दिया...

48 मैंने एक मिठाई दी...

49 मैंने भिक्षा मांगने जा रहे एक भिक्षु को एक मीठा केक दिया।

50 मेरे जैसे इस महल को देखो। मैं एक अप्सरा हूँ जो इच्छा अनुसार कोई भी रूप धारण कर सकती है, हजार अप्सराओं में सबसे तेजस्वी। पुण्य के फल को देखो।

51 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।

52 "यह मेरा आज का दिन होना सौभाग्य की बात है। शुभ सूर्योदय हुआ, शुभ उदय हुआ, क्योंकि मैंने देवताओं, इच्छा अनुसार कोई भी रूप धारण करने वाली अप्सराओं को देखा है।

53 उनके धर्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) के बारे में सुनकर मैं भरपूर धार्मिक कार्य करूंगी। दान देकर, समभाव का अभ्यास करके, आत्म-संयम और मन को वश में करके मैं स्वयं वहाँ जाऊँगा जहाँ जाने वाले शोक नहीं करते।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु3.6

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.6 -------------------------->>>> अगला

3.6 तेजस्वी महल (34)
(दद्दलगा-विमान)

भगवान बुद्ध जेतवन के श्रावस्ती में निवास कर रहे थे। उस समय नालका नामक छोटे से गाँव में, आदरणीय भिक्षु रेवता के एक धनी व्यक्ति की दो पुत्रियाँ थीं। उनमें से एक का नाम भद्दा और दूसरी का नाम सुभद्दा था। भद्दा, जो दोनों में बड़ी थी, अपने पति के घर गई। वह आस्था, सुख और ज्ञान से परिपूर्ण थी, परन्तु बांझ थी। उसने अपने पति से कहा, "मेरी एक छोटी बहन है जिसका नाम सुभद्दा है। उसे ले लो। यदि वह पुत्र को जन्म दे, तो वह मेरा भी पुत्र होगा और हमारी वंश-परंपरा समाप्त नहीं होगी।" उसके पति ने "ठीक है" कहकर सहमति दी और उसकी बात मान ली। भद्दा ने सुभद्दा को सलाह दी, “सुभद्दा, दान देने में आनंद लो और सही मार्ग पर चलने में तत्पर रहो, इससे तुम्हें इस संसार में और आने वाले संसार में भी लाभ होगा।”

एक दिन सुभद्दा ने अपनी बहन की सलाह पर और उसके कहे अनुसार कार्य करते हुए, आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु रेवता को अपने साथ सात अन्य लोगों को भोजन पर आमंत्रित किया। वे सब उसके घर गए। प्रसन्न मन से, अपने हाथों से सेवा करते हुए, उसने आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु रेवता और अन्य भिक्षुओं को स्वादिष्ट भोजन, कठोर और नरम, से तृप्त किया। वरिष्ठ भिक्षु ने धन्यवाद दिया और चले गए। इसके बाद सुभद्दा की मृत्यु हो गई और उनका पुनर्जन्म सृजन में आनंदित होने वाले देवों (देवदूतों) के साथ हुआ। लेकिन भद्दा ने व्यक्तियों में दान देने के कारण, सक्का (देवदूतों के राजा इंद्र) की सेविका के रूप में पुनर्जन्म लिया। अब सुभद्दा अपनी सफलता पर विचार करते हुए आश्चर्यचकित हुई, “अब मैं किस पुण्य कर्म के फल से यहाँ जन्मी हूँ?” उसे अहसास हुआ कि उसने भद्दा की सलाह पर भिक्षु संघ को दान देकर यह उपलब्धि प्राप्त की है, और जब वह सोच रही थी, "अब भद्दा कहाँ है?" तो उसने देखा कि उसका पुनर्जन्म सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) की परिचारिका के रूप में हुआ है, और उस पर दया करके वह उसके महल में प्रवेश कर गई। तब भद्दा ने उससे पूछा:

1 "हे तेजस्वी, तुम सौंदर्य और तेज से भरपूर हो, तुम तैंतीस स्वर्गों के सभी देवों (देवदूतों) को भी अपनी सुंदरता से मात देती हो।

2 मुझे तुम्हारा दर्शन याद नहीं है, यह तुम्हारा पहला दर्शन है। तुम किस देवों (देवदूतों) के समूह से यहाँ आई हो और मुझे नाम से पुकार रही हो?"

दो श्लोकों में उत्तर देते हुए उसने समझाया:

3 "मैं भद्दा, पिछले जन्म में सुभद्दा थी। मैं तुम्हारी सहपत्नी और तुम्हारी छोटी बहन थी।

4 शरीर के विखंडन के समय, मैं स्वयं मुक्त होकर वहाँ से सृष्टि में आनंदित होने वाले देवों (देवदूतों) के साथ उत्पन्न हुई।"

भद्दा ने फिर उससे प्रश्न किया:

5 "हे सुंदर प्राणियों, जिन्होंने बहुत से अच्छे कर्म किए हैं, इन देवों (देवदूतों) के पास जाओ, जिनके बीच तुम्हारा जन्म हुआ है, सुभद्दा, तुम इसका बखान करती हो।

6 परन्तु तुम कैसे, किस साधन से, किसके द्वारा प्रेरित होकर, किस प्रकार के दान से, किस उत्तम कर्म से तेजस्वी हो?"

7 हे देवदूत, इतनी प्रसिद्धि और अपार विशिष्टता प्राप्त करके, जब मुझसे पूछा गया, तो बताइए कि यह किस कर्म का फल है?

तब सुभद्दा ने कहा:

8 "प्राचीन काल में मैंने प्रसन्न मन से अपने हाथों से आठ दान दिए थे, जो योग्य संघ को प्राप्त हुए थे।

9 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ-वहाँ समृद्ध होती हूँ और जो भी सुख मुझे प्रिय हैं, वे सब उत्पन्न होते हैं।

10 हे महान महिमावान देवी, मैं आपको बताती हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मैंने क्या किया था? इसी कारण मेरा तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"

तब भद्दा ने पूछा:

11 "मैंने अपने हाथों से, प्रसन्न मन से, आपसे अधिक संयमी और ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले भिक्षुओं को भोजन और पेय से संतुष्ट किया।

12 आपसे अधिक देने के बावजूद मैं निम्न वर्ग में आ गया। यह कैसे संभव है कि आपने कम देकर भी इतनी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली? हे देवदूत, जब पूछा जाए तो समझाइए कि यह किस कर्म का फल है। "

तब सुभद्दा ने कहा:

13 "पुराने समय में मैंने एक भिक्षु को देखा, जो मन को प्रेरित करने वाला था। मैंने उसे, रेवता को, और सात अन्य लोगों को भोजन पर आमंत्रित किया।

14 रेवता ने, मेरे कल्याण की चिंता करते हुए और करुणावश मुझसे कहा, 'भिक्षुओं के संघ को दान दें।' मैंने उनकी बात मान ली।

15 भिक्षुओं के संघ को दिया गया वह दान अतुलनीय फलदायी सिद्ध हुआ। व्यक्तियों को दिया गया आपका दान आपके लिए उतना फलदायी नहीं रहा।"

जब सुभद्दा ने ऐसा कहा, तो भद्दा ने अर्थ समझकर और भविष्य में उनका अनुकरण करने की इच्छा रखते हुए यह श्लोक कहा:

16 "अब मैं जान गया हूँ कि संन्यासियों के संघ को दान देना बहुत फलदायी होता है। जब मैं फिर से मनुष्य के रूप में निःसंकोच और उदार बन जाऊँगा, तो मैं संन्यासियों के संघ को बार-बार लगन से दान दूँगा।"

और सुभद्दा अपने देवलोक में चली गईं। तब जब सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) ने तैंतीस लोकों के सभी देवों से भी अधिक तेजस्वी देव-कन्या को देखा और उन दोनों के बीच की बातचीत सुनी, तो सुभद्दा तुरंत गायब हो गईं। चूंकि उन्हें पता नहीं था कि यह कौन हो सकता है, इसलिए उन्होंने भद्दा से पूछा।

17 "भद्दा, यह कौन सी देवी हैं जिन्होंने आपसे इतनी गंभीरता से बात की? वे तैंतीस स्वर्गों के सभी देवों से अधिक सुंदर हैं।"

तब उन्होंने उनसे कहा:

18 "देवताओं के स्वामी, जब वे पिछले जन्म में मनुष्य के रूप में जन्मी थीं, तब वे मेरी सहपत्नी और मेरी छोटी बहन थीं। भिक्षु संघ को दान देकर वे पुण्य कर्मों से चमक रही हैं।"

तब सक्का (देवताओं के राजा इंद्र) ने धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर प्रवचन दिया और भिक्षु संघ को दिए गए उनके योग्य दान के महान फल का वर्णन किया।

19 “जो पूर्व में तुम्हारी बहन भद्दा थीं, वे धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) के माध्यम से प्रकाशमान हैं, क्योंकि उन्होंने भिक्षु संघ को असीम दान दिया।

20 क्योंकि गिद्ध पर्वत शिखर (गिज्जाकूट) पर मैंने बुद्ध से उदारता के फल के बारे में पूछा, जहाँ दान का बड़ा फल (लाभ) होता है;

21 “मनुष्यों, प्राणियों के लिए, जो पुण्य की आशा में दान देते हैं, जिनके लिए पुण्य पुनर्जन्मों में उपयोगी होता है जहाँ दान का बड़ा फल (लाभ) होता है।

22 तब बुद्ध, जो स्वयं कर्मों के फल (लाभ) और उदारता के फल (लाभ) को जानते थे, जहाँ दान का बड़ा फल (लाभ) होता है, ने मुझे समझाया:

23 'और वे चार हैं जो मार्ग पर हैं और चार इसके फलों में स्थापित हैं। यह भिक्षु संघ धर्मी है और शील (नैतिकता), समाधि (ध्यानमग्न अवस्था) और पन्ना (दिव्य ज्ञान) से युक्त है।

24 हे मनुष्यों, जो पुण्य कमाने की आशा में दान देते हैं, उनके लिए भिक्षु संघ को दिया गया दान पुण्यदायी होता है और जन्म-जन्मों में उपयोगी होता है; यह दान अत्यंत फलदायी होता है।

25 यह भिक्षु संघ व्यापक और विशाल है, सागर के समान असीम है। महान गुरु के शिष्य मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ हैं, जो धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का पाठ करके प्रकाश फैलाते हैं।

26 जो भिक्षु संघ को समर्पित दान देते हैं, उनका दान उचित रूप से दिया गया, उचित रूप से अर्पित किया गया और उचित रूप से बलिदान किया गया होता है। भिक्षु संघ को दिया गया वह दान अत्यंत फलदायी होता है और संसार के ज्ञेयियों द्वारा उसकी प्रशंसा की जाती है।

27 इस प्रकार के पुण्य का स्मरण करते हुए, संसार में आनंदित रहने वाले लोग कंजूसी के कलंक को जड़ से नष्ट करके निर्दोष रूप से स्वर्गलोक प्राप्त करते हैं। "

सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) ने यह सारी घटना आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना को बताई और भगवान (बुद्ध) को इसके बारे में बताया। उन्होंने इसे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाने का अवसर बनाया।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु3.7

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- I.3.7 -------------------------->>>> अगला

3.7 पेशावती का निवास (35) - सारिपुत्त का निर्वाण प्राप्ति
(पेशावती-विमान)

भगवान (बुद्ध) जेतवन के सावत्थी में निवास कर रहे थे। उस समय मगध देश के नालक गाँव में एक धनी गृहस्थ परिवार में पेशावती नाम की एक बहू रहती थी। कथा के अनुसार, जब भगवान कश्यप के लिए एक योजन विशाल स्वर्ण स्तूप (पवित्र स्मारक) बनाया जा रहा था, तब वह छोटी बच्ची अपनी माँ के साथ स्मारक स्थल पर गई और अपनी माँ से पूछा, "माँ, मेरे गले में यह छोटा सा स्वर्ण आभूषण है। मैं इसे चैत्य (मंदिर) को देना चाहती हूँ।" उसकी माँ ने कहा, "ठीक है, दे दो," और बेटी के गले से अंगूठी उतारकर एक सुनार के हाथ में देते हुए कहा, "यह इस लड़की की भेंट है। इसे ईंट बनाते समय उसमें शामिल कर लेना।" सुनार ने वैसा ही किया। बाद

में लड़की की मृत्यु हो गई और उस पुण्य कर्म के कारण, देवलोक में उसका पुनर्जन्म हुआ, और एक के बाद एक अच्छे जन्म लेते हुए, हमारे भगवान (भगवान बुद्ध) के समय में नलका में उसका पुनर्जन्म हुआ। समय बीतने पर वह बारह वर्ष की हो गई।

एक दिन उसकी माँ ने उसे एक काम से भेजा, और वह कुछ पैसे लेकर तेल खरीदने एक दुकान पर गई। दुकान में एक गृहस्थ अपने पिता द्वारा दफनाए गए सिक्कों, सोने, मोतियों, रत्नों और आभूषणों की बड़ी मात्रा को खोदकर निकाल रहा था। दुकानदार ने देखा कि उसके कर्मों के फल के कारण वे कंकड़, चट्टान के छोटे टुकड़े और बजरी के रूप में दिखाई दे रहे थे। फिर उसने उन्हें एक जगह इकट्ठा करके जांचने के लिए रख दिया और मन ही मन कहने लगा, "योग्य लोगों की शक्ति से ये सिक्के, सोना आदि बन जाएंगे।"

लड़की ने यह देखा और कहा, "ये कांसे के सिक्के और रत्न इस तरह ढेर क्यों लगे हैं? इन्हें तो ठीक से रखना चाहिए।" दुकानदार ने यह सुना और सोचा, "यह लड़की सचमुच गुणी है। इसी की वजह से ये सब सोना आदि बन गए हैं और हमारे लिए मूल्यवान होंगे। मैं इसके साथ अच्छा व्यवहार करूंगा।" वह उसकी मां के पास गया और उससे विवाह का प्रस्ताव रखते हुए कहा, "इस लड़की को मेरे बेटे के लिए दे दो।" उसने बहुत धन दिया, विवाह भोज मनाया और लड़की को अपने घर ले आया।

फिर उसके नेक आचरण को देखकर उसने अपना भंडारगृह खोला और पूछा, "यहाँ क्या है?" और जब उसने कहा, "मुझे यहाँ सिक्कों, सोने और रत्नों के सिवा कुछ नहीं दिख रहा है," और जब उसने कहा, "ये हमारे बुरे कर्मों के फल के कारण नष्ट हो रहे थे, लेकिन तुम्हारे उत्तम कर्मों के कारण इनका मूल्य बढ़ गया है, इसलिए अब से इस घर में सब कुछ तुम ही संभालोगी। हम केवल वही उपयोग करेंगे जो तुम हमें दोगी" -

तब से लोग उसे पेशावती के नाम से जानने लगे।

और उस समय आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु, धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) के सरदार (सारिपुत्त) को पता चला कि उनके जीवनकाल के सभी कर्म समाप्त हो गए हैं। यह सोचकर कि "मैं अपनी माता, ब्राह्मण स्त्री रूपासरी को उनके भरण-पोषण के लिए धन दूंगा और अंतिम निर्वाण प्राप्त करूंगा," वे भगवान (बुद्ध) के पास गए, उन्हें अपने (निकटतम) अंतिम निर्वाण के बारे में बताया, और गुरु (बुद्ध) के आदेश पर एक अद्भुत चमत्कार दिखाया; उन्होंने हजारों स्तुतियों के साथ भगवान (बुद्ध) की प्रशंसा की, और भगवान (बुद्ध) की ओर सीधे मुख करके अपने मार्ग पर चल पड़े, जब तक कि वे उनकी दृष्टि से ओझल नहीं हो गए; दृष्टि से ओझल होने पर उन्होंने एक बार फिर प्रणाम किया, और भिक्षुओं के संघ से घिरे हुए मठ से निकल पड़े; उन्होंने भिक्षु संघ को उपदेश दिया, आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु आनंद को सांत्वना दी, चारों वर्गों के लोगों को अपने साथ आने से रोका, और उचित समय पर नालक पहुंचे, जहां उन्होंने अपनी माता को सोतपान (आध्यात्मिक जागृति का पहला चरण) का फल प्राप्त कराया और भोर में उसी भीतरी कक्ष में अंतिम निर्वाण प्राप्त किया जहां उनका जन्म हुआ था। तब देवदूतों और मनुष्यों ने सात दिन उनके पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने अगरबत्ती, चंदन और इसी प्रकार की सामग्री से सौ हाथ ऊंची चिता बनाई।

पेशावती ने भी वरिष्ठ भिक्षु के अंतिम निर्वाण के बारे में सुनकर कहा, "मैं उनका सम्मान करूंगी।" उन्होंने सोने के फूलों और सुगंधित वस्तुओं से भरे ताबूत मंगवाए और जाने की इच्छा से अपने ससुर से अनुमति मांगी। यद्यपि उन्होंने उससे कहा, "तुम गर्भवती हो और वहाँ लोगों की भीड़ है, अपने फूल और इत्र भेजो और यहीं रहो," फिर भी आस्था से परिपूर्ण होकर उसने सोचा, "यद्यपि वहाँ मेरे जीवन को खतरा हो, मैं जाऊंगी और सम्मान समारोह संपन्न करूंगी।" और उनकी सलाह न मानते हुए वह अपनी सेविकाओं के साथ वहाँ गई, इत्र और फूलों से सम्मान अर्पित किया और भक्ति भाव से हाथ जोड़कर खड़ी हो गई।

उसी समय, बुजुर्ग को सम्मान देने आए राजकवि का एक मदमस्त हाथी वहाँ आ गया। जैसे ही लोगों ने उसे देखा और मृत्यु के भय से भागने लगे, भीड़ ने पेसावती को कुचल दिया, जो लोगों की भीड़ में गिर गई थी। उसने सम्मान समारोह संपन्न किया था, और बुजुर्ग में आस्था और आनंदित मन से मृत्यु को प्राप्त हुई, और तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लिया। अपनी सफलता का आकलन करते हुए और उसके कारण का अनुमान लगाते हुए, उन्होंने पाया कि यह गुरु को दिया जाने वाला सम्मान समारोह था, और तीन रत्नों (बौद्ध त्रिमूर्ति,

बुद्ध, धम्म और भिक्षुओं का संघ) में आनंदित मन से वे अपने निवास स्थान से गुरु (बुद्ध) का आदर करने आईं, वहां से उतरीं और भक्ति भाव से हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं।

उस समय भगवान बुद्ध के निकट बैठे आदरणीय भिक्षु वंगीसा ने कहा, "हे भगवान बुद्ध, मैं इस देवदूत से उसके पुण्य कर्म के बारे में प्रश्न करना चाहता हूँ।" "ऐसा ही करो वंगीसा," भगवान बुद्ध ने कहा। तब आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु वंगीसा ने सर्वप्रथम उनके महल की प्रशंसा करते हुए कहा:

1 "क्रिस्टल चांदी और सोने की चमक से परिपूर्ण, अनेक रंगों से सुशोभित, यह सुंदर महल मुझे दिखाई देता है, एक रमणीय, सुगठित निवास, मेहराबों से सुसज्जित, सुनहरी रेत से सजा हुआ।

2 और जैसे शरद ऋतु में हजार किरणों वाला सूर्य अंधकार को दूर करते हुए दस दिशाओं में आकाश में चमकता है, वैसे ही आपका यह महल रात में धधकती हुई आग की तरह उच्चतम स्वर्ग में जगमगाता है।

3 यह आकाश में स्थापित बिजली की तरह आंखों को चकाचौंध कर देता है, मानो मोहक हो। वीणा, ढोल और झांझ की ध्वनि से गूंजता हुआ, इंद्र के नगर के समान भव्य है आपका यह महल। 4

यहां लाल, सफेद और नीले कमल हैं, योधिका, गंडिका और अनोजका, खिलते हुए साल के वृक्ष और फूलदार अशोक के वृक्ष हैं। यह अनेक उत्कृष्ट वृक्षों की मनमोहक सुगंध से भरा हुआ है।

5 सलाला, लबुजा और भुजका से, खजूर के पेड़ों पर लटकती लताओं से, रत्नों जैसे कमलों से लदे फूलों से, हे तेजस्वी, आपके लिए एक रमणीय कमल-कुंड प्रकट होता है।

6 जल में उगने वाले सभी फूल, भूमि पर उगने वाले सभी प्रकार के वृक्ष, चाहे वे मनुष्य के हों, प्राणी के हों या देवदूत के, सभी आपके निवास में उगते हैं।

7 यह किस आत्मसंयम और मन के वशीकरण का परिणाम है? आप किस कर्म के फल से यहाँ अवतरित हुई हैं? आपने यह महल कैसे प्राप्त किया? पूरी कहानी बताइए, घनी पलकों वाली देवी।

8 "और मैंने यह महल कैसे प्राप्त किया, जो बगुले, मोर और तीतरों के झुंडों से आबाद है, देवदूतों जैसे बत्तखों और लाल हंसों के राजाओं से भरा है, धूसर हंसों और कोयल की चहचहाहट से गूंजता है,

9 अनेक खिले हुए वृक्षों से भरा है जिनकी शाखाएँ फैली हुई हैं, तुरही के फूल, गुलाब-सेब और अशोक के वृक्ष बहुतायत में हैं—मैंने यह महल कैसे प्राप्त किया, यह मैं आपको बताऊँगी। सुनिए, आदरणीय महोदय।

10 आदरणीय महोदय, गौरवशाली पूर्वी मगध में नलका नामक एक गाँव था। पूर्व में मैं वहाँ बहू थी। वहाँ लोग मुझे पेशावती के नाम से जानते थे।

11 मैंने स्वयं प्रसन्न होकर वहाँ उस महान व्यक्ति पर फूल बिखेरे, जिसे देवदूतों और मनुष्यों ने उसके धार्मिक धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) के लिए सम्मानित किया था, उस असीम उपतिस्सा (सारिपुत्त) पर, जो गुजर चुका था।

12 और मैंने उस महान द्रष्टा का सम्मान किया जो सर्वोच्च स्थान (निर्वाण) पर चला गया था, हे महान द्रष्टा, अपना अंतिम शरीर धारण करके, अपने मानव शरीर को त्यागकर, तैंतीसवें (स्वर्ग) में आकर, मैं यहाँ इस स्थान पर निवास करता हूँ ।

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.8 -------------------------->>>> अगला

3.8 मल्लिका का महल (36)
(मल्लिका-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध), जगत के शरणस्थल, ने धम्म के चक्र (शाश्वत सत्य का मार्ग) को गतिमान करने से लेकर धार्मिक यात्री सुभद्दा को उपदेश देने तक अपने बुद्ध कर्तव्य को पूरा किया; विशाखा माह की पूर्णिमा की रात को भोर होते हुए, कुसिनारा में मल्ल राजाओं के उपवत्तना स्थित साल के उपवन में दो साल के वृक्षों के बीच, निर्वाण की अवस्था में पूर्णतः विलीन हो गए, जिसका कोई आधार नहीं होता। जब देव और मनुष्य उनके शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे थे, कुसिनारा की एक गृहस्थ अनुयायी, मल्ल राजाओं के वंश की बंधुल की पत्नी मल्लिका ने श्रद्धापूर्वक और प्रसन्नता से अपने लता आभूषणों के समूह को, जो महान गृहस्थ अनुयायी विशाखा के आभूषणों के समान था, सुगंधित जल से धोया, उसे एक महीन कपड़े से चमकाया और अन्य कई वस्तुएँ, जैसे इत्र, मालाएँ आदि लेकर भगवान बुद्ध के पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की।

यह यहाँ एक संक्षिप्त विवरण है, लेकिन मल्लिका की कहानी धम्मपद की टीका में विस्तार से वर्णित है।

इसके बाद मल्लिका की मृत्यु हो गई और उनका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्ग) में हुआ। क्योंकि उन्होंने इतनी श्रद्धा अर्पित की थी, इसलिए उन्हें अतुलनीय देवीय आनंद प्राप्त हुआ। उनके वस्त्र, आभूषण और महल, सात रत्नों से जगमगाते हुए, शुद्धतम सोने की चमक से परिपूर्ण थे, जिससे सभी दिशाएँ स्वर्ण रंग की हो गईं, मानो उन पर स्वर्णमय आभा की बौछार हो रही हो।

अब पूज्य वृहत्तर भिक्षु नारद, जो देवों के बीच विचरण कर रहे थे, ने उन्हें देखा और उनके पास गए। उन्होंने आदरपूर्वक उनका अभिवादन किया और भक्ति भाव से हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं। उसने उससे प्रश्न किया:

1 "सुनहरे पीले वस्त्र और ध्वज वाली, सुनहरे पीले आभूषणों से सजी, सुनहरे पीले रंग के सुंदर ऊपरी वस्त्रों से सुशोभित, तुम इन आभूषणों के बिना भी चमकती हो।

2 तुम कौन हो जो चूड़ियाँ और कंगन पहनती हो और सोने के मुकुटों से सुशोभित हो, सुनहरे जाल से ढकी हो, अनेक रत्नों की मालाओं से सजी हो?

3 सोने और माणिक, मोतियों और बेरी से बनी वस्तुएँ, बिल्ली की आँख जैसे रत्न और माणिक, कबूतर की आँख के समान स्पष्ट रत्नों से जगमगाती हुई?

4 यहाँ मोर की प्यारी आवाज है, यहाँ लाल हंसों के राजा की, और यहाँ कोयल की मीठी आवाज—उनका मधुर गीत ऐसा सुनाई देता है मानो पाँचों वाद्ययंत्रों का संगीत बज रहा हो।

5 और तुम्हारा सुंदर रथ चमकता है, सुंदर, अनेक रत्नों से जड़ा हुआ, अपने विभिन्न रूपों के भागों में सुगठित।

6 तुम जिसका रूप एक हे स्वर्ण प्रतिमा, जो इस रथ में विराजमान होकर इस स्थान पर अपनी चमक बिखेरती हो, हे देवता (देवदूत), जब तुमसे पूछा जाए, तो बताओ कि यह किस कर्म का फल है?

और उसने उत्तर दिया:

7 "रत्नों और सोने से जगमगाता, मोतियों से भरा, सोने के जाल से ढका हुआ एक सुनहरा जाल, मैंने परमानंद की अवस्था में गौतम (बुद्ध), असीम दिव्यलोक (निब्बान) के पूर्णतः निर्वाण (मृत्यु) होने पर भेंट किया।

8 बुद्ध द्वारा सराहे गए उस धर्म कर्म को करने के बाद, मैं दु:खरहित, सुखी और स्वस्थ होकर प्रसन्न हूँ।"

और सभा के समय, पूज्य नारद भिक्षु ने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का संकलन करने वालों को यह बात ठीक उसी प्रकार सुनाई, जैसे उन्होंने और देवदूत ने कही थी, और संकलनकर्ताओं ने इसे उसी रूप में संग्रहों में जोड़ दिया।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु3.9

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.9 -------------------------->>>> अगला

3.9 विशालाक्खी का महल (37)
(विसालक्खी-विमान)

भगवान बुद्ध के अंतिम निर्वाण के बाद, जब राजा अजातसत्तु ने राजगृह में अपने हिस्से के अवशेषों पर एक विशाल स्तूप बनवाया और सम्मान समारोह आयोजित किया, तो माला चढ़ाने वाले की पुत्री सुनंदा, एक गृहस्थ अनुयायी, एक आर्य (कुलीन) शिष्या और एक जलप्रवेश करने वाली, तीनों ने चैत्य (मंदिर) पर सुगंधित मालाएँ भेजीं और उपोसथ (पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) के दिनों में स्वयं श्रद्धांजलि अर्पित करने गईं। बाद में उनकी मृत्यु हो गई और उनका पुनर्जन्म सक्का (देवदूतों के राजा इंद्र) की परिचारिका के रूप में हुआ। एक दिन जब इंद्र चित्तलता वन (स्वर्ग) में प्रवेश कर रहे थे, तो उन्होंने उन्हें वहाँ चारों ओर की चमक से अप्रभावित खड़े देखा। और उसने उससे कारण पूछा:

1 "हे विशाल नेत्रों वाली, तुम इस रमणीय चित्तलता वन में कौन हो, जो अपने चारों ओर स्त्रियों के समूह का नेतृत्व करते हुए इधर-उधर विचरण करती हो?

2 जब तैंतीस लोकों के देव (देवदूत) अपने घोड़ों और रथों के साथ इस वन में प्रवेश करते हैं, तो उनका सारा तेज फैल जाता है।

3 परन्तु तुम जो यहाँ आनंद में विचरण करते हुए आई हो, तुम्हारे शरीर पर कोई चमक नहीं दिखाई देती। तुम्हारा रूप ऐसा क्यों है? हे देवदूत, जब पूछा जाए, तो बताओ कि यह किस कर्म का फल है?"

सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) द्वारा पूछे जाने पर, इस देवता ने इन श्लोकों में उत्तर दिया:

4 "हे देवदूतों के स्वामी, जिस कर्म से मुझे ये रूप, ये गंतव्य, ये समृद्धि और ये महिमा प्राप्त हुई है—हे उदार दाता, इसे सुनिए।

5 रमणीय राजगृह में मैं सुनंदा नाम की एक गृहस्थ अनुयायी थी। मैं विश्वास रखती थी, नैतिकता का पालन करती थी और सदा उदारता में प्रसन्न रहती थी।

6 मैंने धर्मात्मा लोगों को वस्त्र, भोजन, आवास और प्रकाश दिया।

7 शुक्ल पक्ष के चौदहवें, पंद्रहवें और आठवें दिन और पखवाड़े के एक विशेष दिन, जो अष्टांगिक नियमों से भलीभांति जुड़ा हुआ था, मैंने उपोसथ (उपवास और पश्चात्ताप) का पालन किया, सदा नैतिकता का पालन करते हुए।

8 प्राणियों की हत्या से परहेज करते हुए, झूठ बोलने, चोरी करने, व्यभिचार करने और शराब पीने से परहेज किया। शराब से दूर रहकर,

9 पाँच नियमों का पालन करते हुए, आर्य सत्यों में निपुण होकर, मैं गौतम (बुद्ध) की एक गृहस्थ अनुयायी थी, दूरदर्शी और विख्यात।

10 मेरे एक रिश्तेदार का घर था, जहाँ से वे हमेशा मेरे लिए मालाएँ लाते थे। मैं उन सभी को भगवान के स्तूप पर अर्पित करती थी।

11 व्रत के दिनों में (उपोसथ, उपवास और पश्चात्ताप करते हुए), मैं खुशी-खुशी अपने हाथों से स्तूप पर मालाएँ, इत्र और मलहम अर्पित करती थी।

12 हे देवों के स्वामी, मेरे इस कर्म के कारण ही मेरा स्वरूप, मेरा भाग्य, मेरी समृद्धि और मेरी महिमा है।

13 उस (कर्म) के लिए, जब मैं नैतिकता (शील) का अभ्यास कर रहा था, उसका फल अभी आना बाकी है। और हे देवों (देवदूतों) के स्वामी, मेरी आशा है कि मैं एक बार लौटकर आऊं।

और सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) ने यह बात आदरणीय भिक्षु वंगीसा को बताई। और वंगीसा ने सभा के समय यह बात उन महान भिक्षुओं को बताई जो धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का संकलन कर रहे थे, और उन्होंने इसे बिना किसी बदलाव के संग्रह में जोड़ दिया।
त्रिपिटक >> सूत्र पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 3.10

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.3.10 -------------------------->>>> अगला

3.10 मूंगा वृक्ष का महल (38)
(परिच्छत्तक-विमान)

भगवान (बुद्ध) जेतवन के श्रावस्ती में ठहरे हुए थे। एक धर्मनिष्ठ गृहस्थ अनुयायी ने अपने घर में भगवान (बुद्ध) का बड़े आदर के साथ स्वागत किया। तभी घने जंगल में लकड़ियाँ इकट्ठा कर रही एक स्त्री ने एक अशोक वृक्ष को फूलों से लदा देखा। उसने फूलों की टहनियाँ इकट्ठा कीं और उन्हें भगवान (बुद्ध) के चारों ओर बिखेर दिया, उन्हें प्रणाम किया और चली गई। बाद में उसकी मृत्यु हो गई और उसका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्ग) में हुआ, जहाँ उसने अपनी नृत्य करती अप्सराओं के साथ नंदनवन (स्वर्ग) में मूंगा वृक्ष का उत्सव मनाया। उन्हें भी आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने देखा और उनसे इस प्रकार पूछा:

1 "मूंगा और आबनूस के वृक्षों के फूलों से, मनमोहक और आनंददायक, देवदूतों के समान मालाएँ धारण करके और गाते हुए, आप आनंदित होती हैं।

2 जब आप अपने सभी अंगों से हर तरह से नृत्य करती हैं, तो देवदूतों के समान मधुर ध्वनियाँ प्रवाहित होती हैं, जो सुनने में आनंददायक होती हैं।

3 जब आप अपने सभी अंगों से हर तरह से नृत्य करती हैं, तो देवदूतों के समान मधुर सुगंध चारों ओर फैलती है, जो आनंददायक होती है।

4 जब आप अपने शरीर को झुलाती हैं, तो आपकी गुंथी हुई बालों में लगी आभूषणों की ध्वनि पंच वाद्ययंत्रों के संगीत की तरह सुनाई देती है।

5 हवा में लहराते हुए, कांपते हुए कान के झुमके - इनकी ध्वनि पंच वाद्ययंत्रों के संगीत की तरह सुनाई देती है।

6 और आपके सिर पर उन मधुर सुगंध वाली, आनंददायक मालाओं की सुगंध मंजुसाका वृक्ष की तरह सभी दिशाओं में फैलती है।

7 जब आप उस मधुर सुगंध को साँस लेती हैं, तो आपको अलौकिक अनुभव होता है।" सौंदर्य। हे देवता (देवदूत), जब पूछा जाए तो बताइए कि यह किस कर्म का फल है?

तब देवता (देवदूत) ने समझाया:

8 "मैंने बुद्ध को अशोक के फूलों की माला अर्पित की, जो अग्निमय, तेजस्वी और सुंदर सुगंध वाली थीं।

9 बुद्ध द्वारा सराहे गए इस धार्मिक कर्म को करने के बाद, मैं दु:ख रहित, सुखी और स्वस्थ होकर आनंदित हूं।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.1

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.4.1 -------------------------->>>> अगला

4.1 लाल रंग का महल (39)
(मंजित्थक-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती में, जेतवन में निवास कर रहे थे। जब पिछले महल में वर्णित तरीके से उनका सत्कार किया जा रहा था, तब एक घर की एक सेविका ने घने जंगल में खिले हुए साल के पेड़ से फूल तोड़े, उन्हें छाल के टुकड़ों पर पिरोकर गुलदस्ते बनाए, और फिर गिरे हुए चुनिंदा फूलों की एक बड़ी मात्रा एकत्र करके नगर में प्रवेश किया। उसने भगवान बुद्ध को मंडप में बैठे देखा और आनंदित मन से, फूलों से उनका सम्मान करते हुए, गुलदस्तों को उनकी सीट के चारों ओर रखा, अन्य फूलों को बिखेरा, उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया, उनके चारों ओर तीन बार परिक्रमा की और अपने मार्ग पर चली गई। इसके बाद उसकी मृत्यु हो गई और उसका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्ग) में हुआ। वहाँ उसके लिए लाल क्रिस्टल से बना एक महल था और उसके सामने एक विशाल साल का वन था, जिसकी भूमि सुनहरी रेत से ढकी हुई थी। जब देवी (परी) बाहर निकली और साल के वन में प्रवेश किया, तो डालियाँ झुक गईं और उस पर फूल बिखेर दिए। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने ऊपर वर्णित अनुसार उनके पास आकर उनसे प्रश्न किया:

1 "सुनहरी रेत से सजे लाल रंग के महल में, आप मधुर ध्वनि वाले पंचांग संगीत का आनंद ले रही हैं।

2 रत्नों से निर्मित उस भव्य महल से उतरकर, आप एक सदा खिले रहने वाले साल के उपवन में प्रवेश करती हैं।

3 हे देवता, जहाँ आप खड़ी हैं, प्रत्येक साल के वृक्ष की जड़ में, वह भव्य वृक्ष झुककर अपने फूल गिराता है।

4 पक्षियों से आच्छादित, हवा से लहराते और फैलते साल के उपवन की सुगंध मंजुसाक वृक्ष की तरह सभी दिशाओं में बहती है।

5 आप उस शुद्ध सुगंध को ग्रहण करती हैं, आपको अलौकिक सौंदर्य दिखाई देता है। हे देवता, पूछे जाने पर, बताइए कि यह किस कर्म का फल है।"

जब बड़े ने मुझसे प्रश्न किया तो देवदूत ने इन श्लोकों में उत्तर दिया:

6 "जब मैं मनुष्य के रूप में पैदा हुई, तो मैं अपने पति के घर में एक दासी थी। बुद्ध को बैठे हुए देखकर मैंने उनके चारों ओर साल के फूल बरसाए।

7 और मैंने प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से बुद्ध को साल के फूलों से बनी एक सुंदर माला भेंट की।

8 बुद्ध द्वारा सराहे गए इस पुण्य कर्म को करने के बाद, मैं बिना किसी दुःख के प्रसन्न और स्वस्थ हूँ।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.2

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- I.4.2 ------------------------->>>> अगला

4.2 प्रकाशमान भवन (40)
(पभासार-विमान)

भगवान (बुद्ध) राजगृह में निवास कर रहे थे। उस समय राजगृह में एक गृहस्थ अनुयायी रहता था, जो महामोग्गलाना में श्रद्धा रखता था। उसकी एक पुत्री भी श्रद्धा और आनंद से महामोग्गलाना का आदर करती थी। एक दिन आदरणीय महामोग्गलाना राजगृह में भिक्षा माँगते हुए उस घर में आए। उन्हें देखकर पुत्री प्रसन्न हुई, उसने एक आसन तैयार करवाया और जब महामोग्गलाना वहाँ बैठे तो उसने उन्हें चमेली की माला पहनाई और उनके कटोरे में गुड़ भर दिया। धन्यवाद देते हुए महामोग्गलाना बैठे रहे। पुत्री ने कहा कि गृहकार्य के कारण उसके पास सुनने का समय नहीं है, इसलिए उसने कहा, "मैं धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) किसी और दिन सुनूँगी," उसने महामोग्गलाना को प्रणाम किया और उनसे विदा ली। और उसी दिन उनका निधन हो गया और वे तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लेकर लौटीं। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना उनके पास आए और उनसे इन श्लोकों में प्रश्न किया:

1 "हे तेजस्वी सौंदर्य की देवी, उत्कृष्ट, चमकीले वस्त्रों से सजी, जिनकी मानसिक शक्ति महान है, जिनके अंग चंदन से मढ़े हुए प्रतीत होते हैं - हे सुंदर देवता, आप कौन हैं जो मुझे आदर देती हैं?

2 और आपका बहुमूल्य दीवान अनेक रत्नों से जड़ा हुआ है, चमकता हुआ, जिस पर आप विराजमान होकर नंदनवन में देवों के राजा के समान प्रकाशमान होती हैं।

3 हे सुंदर, आपने पूर्व में कौन सा अच्छा आचरण किया था? आप किस कर्म का फल देवलोक में भोग रही हैं? हे देवता, पूछे जाने पर बताइए कि यह किस कर्म का फल है।"

जब बड़े ने इस प्रकार प्रश्न किया, तो देवता (देवदूत) ने इन श्लोकों में उत्तर दिया:

4 "जब आप भिक्षा मांगने जा रहे थे, तब मैंने आपको एक माला और गुड़ दिया था, आदरणीय महोदय। यह उस कर्म का फल है जिसका आनंद मैं देवलोक में ले रहा हूँ।

5 परन्तु मुझे पश्चाताप है, क्योंकि मैंने एक अपराध किया है, आदरणीय महोदय। मैंने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का पालन नहीं किया, जिसका उपदेश धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) ने भली-भांति दिया है।

6 इसलिए मैं कहता हूँ, 'आप पर कृपा हो। जो कोई मुझ पर दया करे, वह मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के उपदेशों में प्रेरित करे।

7 जो कोई बुद्ध और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) और भिक्षु संघ के रत्न में विश्वास रखता है, वह दीर्घकाल, यश और तेज में मुझसे कहीं अधिक तेजस्वी है; ये अन्य देवता (देवदूत) वैभव और सौंदर्य में मुझसे श्रेष्ठ हैं, और उनकी मानसिक शक्ति मुझसे कहीं अधिक है। मुझसे अधिक सामर्थ्य (शक्ति) रखने वाला व्यक्ति।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.3

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.4.3 -------------------------->>>> अगला

4.3 हाथी का महल (41)
(नाग-विमान)

भगवान (बुद्ध) बरनासी के पास इसिपताना में हिरण अभयारण्य में निवास कर रहे थे। उस समय बरनासी में रहने वाली एक गृहस्थ अनुयायी, जो परमानंद से परिपूर्ण आस्था रखती थी और शील (नैतिकता) का पालन करती थी, ने भगवान (बुद्ध) के लिए वस्त्रों का एक जोड़ा बुनवाया और उसे अच्छी तरह से धुलाया। पास आकर उसने उन्हें भगवान (बुद्ध) के चरणों में रखा और इस प्रकार कहा, "हे पूज्यवर, भगवान (बुद्ध) दयापूर्वक इन वस्त्रों को स्वीकार करें, ताकि ये उनके कल्याण और सुख के लिए बने रहें।" भगवान (बुद्ध) ने उन्हें स्वीकार किया और उनकी योग्यताओं को समझते हुए उन्हें धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाया। अंत में, उन्होंने सोतपान (आध्यात्मिक जागृति का पहला चरण) का फल प्राप्त किया, श्रद्धापूर्वक भगवान बुद्ध का अभिवादन किया, उनके चारों ओर विधिपूर्वक परिक्रमा की और घर लौट गईं। इसके तुरंत बाद उनका निधन हो गया, और वे तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लेकर सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) की प्रिय बन गईं, जिनका नाम यसुत्तरा था। उनके पुण्य कर्म के फल से एक भव्य हाथी प्रकट हुआ, जो सोने के जाल से ढका हुआ था; उसकी पीठ पर रत्नों का एक मंडप बना, और उसके भीतर एक सुंदर रत्नमय पलंग था; और उसके दो दांतों में कमल और कमलों से जगमगाते दो सुंदर कमल कुंड प्रकट हुए। वहाँ, कमल की पंखुड़ी पर खड़ी देवियाँ पाँच प्रकार के वाद्ययंत्रों को धारण किए नृत्य और गायन कर रही थीं।

भगवान बुद्ध ने अपनी इच्छा अनुसार बरसी में निवास किया और फिर सावती की यात्रा पर निकल पड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने जेतवन में निवास किया। अब वह देवी (परी) अपने आनंद और उसके कारण का चिंतन करते हुए यह बोध कर बैठीं कि "इसका कारण गुरु (बुद्ध) को दिया गया वह वरदान है", और प्रसन्नता, आस्था और श्रद्धा से परिपूर्ण होकर वे अपने तेजस्वी हाथी पर सवार होकर आकाश से आईं, जब रात काफी ढल चुकी थी, वहाँ से उतरीं, अपने हाथ जोड़कर भगवान (बुद्ध) को प्रणाम किया और उनके निकट खड़ी हो गईं। आदरणीय भिक्षु वांगिसा ने भगवान बुद्ध की स्वीकृति से उनसे इस प्रकार प्रश्न किया:

1 "रत्नों और सोने से सजे एक भव्य हाथी पर सवार, सुंदर ढंग से सुसज्जित, सोने के जाल से ढकी हुई, आप आकाश में मध्य में प्रकट हुई हैं।

2 हाथी के दो दांतों पर पूर्ण रूप से खिले हुए निर्मल कमल के तालाब बने हैं; कमलों के बीच संगीत की धुनें फूट रही हैं, और ये मनमोहक नृत्य कर रही हैं।

3 हे महान महिमावान, आपने देवदूतों जैसी मानसिक शक्ति प्राप्त कर ली है। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी यह तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है?"

इस प्रकार पूछे जाने पर, देवदूत ने इन श्लोकों में उत्तर दिया:

4 "बरानासी जाकर मैंने बुद्ध को वस्त्र भेंट किए; उनके चरणों को प्रणाम करके मैं जमीन पर बैठ गया। प्रसन्न होकर मैंने अपने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया।

5 और स्वर्णमय त्वचा वाले बुद्ध ने मुझे उत्पत्ति, दुख (जो क्षणिक हैं), शाश्वत, अपरिवर्तनशील और दुखों के निवारण का ज्ञान दिया; उन्होंने मुझे वह मार्ग सिखाया जिससे मैं जान सकूँ।

6 मेरा जीवनकाल अल्प था, मैं मर गया; वहाँ से मृत्यु को प्राप्त करके, तैंतीस (स्वर्ग) के साथ प्रसिद्ध होकर, मैं सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) का संगिनी हूँ, मेरा नाम यसुत्तरा है, और मैं सभी दिशाओं में प्रसिद्ध हूँ।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.4

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.4.4 -------------------------->>>> अगला

4.4 अलोमा का निवास (42)
(अलोमा-विमान)

जब भगवान बुद्ध बरनासी के पास इसिपताना में हिरण अभयारण्य में निवास कर रहे थे, तब वे भिक्षा मांगने के लिए बरनासी में प्रवेश कर गए। वहाँ अलोमा नामक एक निर्धन स्त्री ने उन्हें देखा और श्रद्धा और आनंद से भरी हुई, तथा दान करने के लिए कुछ और न देखकर, उसने सोचा, "भगवान बुद्ध को यह दान देना मेरे लिए भी बहुत फलदायी होगा", और उसने कुटी हुई, बिना नमक वाली, सूखी कुम्मासा भेंट की। भगवान बुद्ध ने उसे स्वीकार कर लिया। उस दान के कारण उस स्त्री को आनंद का अनुभव हुआ। बाद में उसकी मृत्यु हो गई और वह तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म हुई। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे पूछा:

1 "हे देवी, आप अत्यंत सुंदर हैं और सभी दिशाओं को उपचार करने वाले तारे के समान प्रकाशित कर रही हैं।

2 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप किस कारण से सभी को समृद्ध कर रही हैं और आपके हृदय को प्रिय आनंद किस कारण उत्पन्न हो रहे हैं?

3 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित कर रही है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे गए प्रश्नों से प्रसन्न होकर उस देवी ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "बरानासी में, श्रद्धा और आनंद के साथ, मैंने सूर्य के सगे बुद्ध को अपने हाथों से सूखा कुम्मासा दान किया।

6 कुम्मासा के सूखे, बिना नमक वाले दान का फल देखो। अलोमा को प्रसन्न देखकर कौन पुण्य नहीं करेगा?

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध हूँ, और वहाँ वे सभी आनंद उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

8 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको बताता हूँ कि मैंने मनुष्य के रूप में जन्म लेकर क्या पुण्य कर्म किए। इसी कारण मेरा तेज ऐसा है और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.5

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- I.4.5 ------------------------->>>> अगला

4.5 चावल की दलिया देने वाले का महल (43)
(कनजिकदायिका-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध) अंधकविन्द में निवास कर रहे थे। उस समय भगवान (भगवान बुद्ध) के पेट में वात रोग उत्पन्न हो गया। भगवान (भगवान बुद्ध) ने आदरणीय भिक्षु आनंद से कहा, "आनंद, जब तुम भिक्षा लेकर लौट आओ, तो मेरे लिए थोड़ी खट्टी चावल की दलिया औषधि के रूप में ले आना।" "मैं ऐसा ही करूँगा, आदरणीय," उन्होंने प्रतिज्ञा की और महान राजाओं द्वारा दिए गए कटोरे को लेकर अपने सेवक चिकित्सक के घर के द्वार पर खड़े हो गए। चिकित्सक की पत्नी ने उन्हें देखा, उनसे मिलने बाहर आईं, उनका अभिवादन किया, कटोरा लिया और भिक्षु से पूछा, "आपको किस प्रकार की औषधि चाहिए, आदरणीय?" आप देखिए, वह एक बुद्धिमान स्त्री थीं और उन्होंने यह जान लिया, "बुद्ध यहाँ दवा लेने आते हैं, भोजन के लिए नहीं।" जब उन्होंने "चावल की दलिया" माँगी, तो उन्होंने सोचा, "यह दवा मेरे स्वामी के लिए नहीं है; वास्तव में यह कटोरा भगवान बुद्ध का ही है। चलिए, मैं जगत के रक्षक के लिए उपयुक्त दलिया लाती हूँ।" प्रसन्नता और श्रद्धा से भरकर उन्होंने बेर के रस से दलिया तैयार की, कटोरा भरा और साथ में अन्य भोजन भी तैयार करके उन्हें भेजा। उस भोजन के सेवन से भगवान बुद्ध का रोग ठीक हो गया। बाद में उस स्त्री का निधन हो गया, वे तैंतीस (स्वर्ग) में जा पहुँचीं और परम देव-आनंद का आनंद लेते हुए प्रसन्न रहीं। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे इस प्रकार प्रश्न किया:

1 "हे देवी, आप अत्यंत सुंदर हैं और सभी दिशाओं को प्रकाशमान कर रही हैं, जैसे कोई दिव्य तारा।

2 आपकी सुंदरता का ऐसा कारण क्या है? आप किस कारण से सभी को समृद्ध कर रही हैं और आपके हृदय को प्रिय कौन-से आनंद उत्पन्न हो रहे हैं?

3 हे महान महिमावान देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा का ऐसा कारण क्या है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित कर रही है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे गए प्रश्न से प्रसन्न होकर उस देवी ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "अंधकविन्द में मैंने सूर्य के सगे बुद्ध को जुज्बे से पका हुआ, तेल से सुगंधित दलिया दिया,

6 जिसमें काली मिर्च, लहसुन और लामज्जक मिलाया गया था— मैंने इसे धर्मात्मा से सीधे (धर्मी) को दिया।

7 जो स्त्री चक्र चलाने वाले राजा की संगिनी बनेगी, जो हर अंग से सुंदर और अपने स्वामी की दृष्टि में आकर्षक होगी—(वह भी) इस दलिया के सोलहवें भाग के बराबर नहीं है।

8 सौ निक्खाएँ, सौ घोड़े, सौ खच्चरों द्वारा खींचे जाने वाले रथ, एक लाख कन्याएँ जो रत्नजड़ित झुमके पहने हों—(वे भी) इस दलिया के सोलहवें भाग के बराबर नहीं हैं।"

9. सौ हिमालयी हाथी जिनके दांत रथ के खंभों के समान हों, भारी-भरकम और राजसी हाथी जो सोने के कवच और अलंकरणों से सजे हों—(वे भी) इस चावल के दलिया के सोलहवें भाग के बराबर भी नहीं हैं।

10. हो सकता है कि जो यहाँ चारों महाद्वीपों पर शासन करे, वह भी इस चावल के दलिया के सोलहवें भाग के बराबर न हो।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.6

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<----------------------- I.4.6 -------------------------->>>> अगला

4.6 मठ हवेली (44)
(विहार-विमान)

भगवान बुद्ध जेतवन के श्रावस्ती में निवास कर रहे थे। उस समय विशाखा, जो एक महान गृहस्थ अनुयायी थीं, को उनके मित्रों और परिचारिकाओं ने एक विशेष पर्व के दिन उद्यान की सैर करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने स्नान और अभिषेक करके अच्छा भोजन किया, अपने आभूषणों का पूरा सेट पहना और पाँच सौ सहेलियों के साथ भव्य समारोह में अपने घर से प्रस्थान किया। उद्यान की ओर जाते हुए उन्होंने सोचा, "एक युवती की तरह व्यर्थ के मनोरंजन में मेरे लिए क्या है? चलो, मैं मठ जाऊँगी, भगवान बुद्ध और मन को प्रेरित करने वाले आदरणीय सज्जनों को प्रणाम करूँगी और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुनूँगी।" वह मठ में गई, एक तरफ रुकी, "महान लता" का आभूषण उतारा, उसे एक सेविका के हाथ में दिया, भगवान बुद्ध को आदरपूर्वक प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गई। उसने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना, भगवान बुद्ध को आदरपूर्वक प्रणाम किया, उनके चारों ओर विधिपूर्वक परिक्रमा की, मठ से बाहर निकली, थोड़ी दूर जाकर सेविका से कहा, "चलो, मैं आभूषण पहन लेती हूँ।" सेविका ने आभूषण को एक गठरी में बाँधकर मठ में रख दिया था, इधर-उधर घूमती रही और जब जाने का समय हुआ तो वह उसे भूल गई थी। उसने स्वीकार किया, "मैं भूल गई। मुझे वहाँ होना चाहिए था। मैं उसे ले आती हूँ," और वह वापस जाना चाहती थी। विशाखा ने कहा, "अगर यह मठ में पड़ा हुआ भुला दिया गया था, तो मठ के हित में मैं इसे त्याग दूंगी," और वह मठ गईं, भगवान बुद्ध के पास पहुंचीं, उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया और अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहा, "हे पूज्य, मैं एक मठ का निर्माण करना चाहती हूं, कृपया भगवान बुद्ध मुझ पर दया करें।" भगवान बुद्ध ने मौन रहकर सहमति दी। जब विशाखा ने 90,100,000 करोड़ रुपये मूल्य का आभूषण दान किया, तो आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने नए निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। मठ नौ महीनों में बनकर तैयार हो गया, जो बुद्ध, भगवान बुद्ध और भिक्षुओं के लिए उनके निवास के अनुकूल एक स्थान था। इसमें एक हजार कमरे थे - निचली मंजिल पर पांच सौ कमरे और ऊपरी मंजिल पर पांच सौ कमरे। कहा जाता है कि यह एक देव-महल जैसा था, जिसका फर्श रत्नों की मोज़ेक की तरह बनाया गया था, और सुंदर डिज़ाइन वाली मालाओं से जड़ा हुआ था। सफेद प्लास्टर से बनी मनमोहक नक्काशी, सुंदर पॉलिश की हुई लकड़ी की कारीगरी, दीवारों, स्तंभों, छत की कड़ियों, बीमों, कंगनियों, दरवाजों, खिड़कियों, सीढ़ियों आदि जैसे सुव्यवस्थित और आकर्षक भवन के हिस्से, जैसे कि कक्ष, मंडप, गलियारे आदि, जब मठ का निर्माण पूरा हुआ, तब उसने समर्पण समारोह में 90,000 खर्च किए।जब वह अपने पाँच सौ साथियों के साथ महल में प्रवेश कर रही थी, तब उसने (भवन की) भव्यता देखी और प्रसन्नतापूर्वक उनसे कहा, "इस प्रकार का महल बनवाने में मुझे जो पुण्य प्राप्त हुआ है, उसमें आप सब प्रसन्न हों; मैं आप सबको इसमें सहभागिता के लिए पुण्य प्रदान करती हूँ।" "हाँ, ऐसा ही हो, ऐसा ही हो, हाँ," उन्होंने श्रद्धापूर्वक कहा और वे सब प्रसन्न हुए।

उस अवसर पर एक गृहस्थ भक्त ने विशेष ध्यानपूर्वक पुण्य बाँटने में भाग लिया। इसके शीघ्र ही उनका निधन हो गया और वे तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म हुईं। उनके पुण्य के फलस्वरूप उन्हें एक विशाल महल प्रकट हुआ जो आकाश में विचरण कर सकता था, जिसमें कई शिखर वाले घर, उद्यान, कमल-कुंड आदि थे, जिसकी लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई सोलह योजन थी और जो अपने प्रकाश से सौ योजन तक प्रकाश फैलाता था। और जब देवी (परी) कहीं जाती थीं, तो वे अपने महल और एक हजार अप्सराओं के दल के साथ जाती थीं।

लेकिन विशाखा, अपनी उदारता और आस्था की विजय के कारण, सृजन में आनंद लेने वाले देवों के बीच पुनर्जन्म हुईं और उस लोक के देव-राजा सुनीमिता की प्रधान संगिनी का पद प्राप्त किया। अब आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु अनुराधा, देवों के बीच भ्रमण करते हुए, विशाखा की सहेली से मिले, जिनका तैंतीसवें लोक में पुनर्जन्म हुआ था, और उन्होंने उनसे इस प्रकार प्रश्न किया:

1 "हे देवदेवता, आप अत्यंत सुंदर हैं, आप सभी दिशाओं को उपचार करने वाले तारे के समान चमका रही हैं।

2 जब आप अपने सभी अंगों से हर तरह से नृत्य कर रही हैं, तो देवदूतों जैसी मधुर ध्वनियाँ प्रवाहित हो रही हैं, जो सुनने में आनंददायक हैं।

3 जब आप अपने सभी अंगों से हर तरह से नृत्य कर रही हैं, तो देवदूतों जैसी सुगंध चारों ओर फैल रही है, मीठी सुगंध, मनमोहक।

4 जब आप अपने शरीर को झुला रही हैं, तो आपके गुंथे हुए हरों में लगे आभूषणों की ध्वनि पंचांगों के संगीत के समान सुनाई देती है।

5 हवा में लहराते, कांपते हुए झुमकों की ध्वनि पंचांगों के संगीत के समान सुनाई देती है।

6 और आपके शरीर पर उन मीठी सुगंध वाली, मनमोहक मालाओं की खुशबू भी गूंज रही है।" सिर मंजुसक वृक्ष की तरह सभी दिशाओं में लहराता है।

7. तुम उस मधुर सुगंध को महसूस करते हो, तुम अलौकिक सौंदर्य देखते हो, हे देवता (देवदूत), जब पूछा जाए तो बताओ कि यह किस कर्म का फल (लाभ) है।

उसने उसे इस प्रकार उत्तर दिया:

8 "हे पूज्यवर, सावत्थी में मेरे एक मित्र ने भिक्षु संघ के लिए एक विशाल मठ बनवाया। मैं आस्थावान होकर उस निवास को देखकर प्रसन्न हुई, जो मुझे बहुत भाया।

9 मेरी इसी शुद्ध प्रसन्नता से मुझे एक अद्भुत, देखने में सुंदर, सोलह योजन का भवन प्राप्त हुआ। मेरी मानसिक शक्ति से यह वायु में विचरण करता है।

10 मेरे निवास शिखर वाले विभाजित घर हैं, जिनके अनुपात सुनियोजित हैं। वे चारों ओर सौ योजन तक चमकते हैं।

11 यहाँ मेरे पास कमल-कुंड हैं, जिनमें पुथुलोमा मछलियाँ निवास करती हैं, जिनका स्वच्छ, चमकीला जल सुनहरी रेत से घिरा है।

12 विभिन्न कमलों से आच्छादित, सफेद कमलों से ढके हुए, मनमोहक, हवा से लहराते हुए वे एक प्यारी सुगंध बिखेरते हैं।"

13 उस निवास के भीतर गुलाब-सेब, कटहल, खजूर, नारियल और अनेक प्रकार के जंगली वृक्ष उगते हैं।

14 अनेक वाद्ययंत्रों की ध्वनि से गूंजता हुआ, अनेक अप्सराओं के स्वरों से प्रतिध्वनित होता हुआ, जिसने मुझे स्वप्न में भी देखा होगा, वह सुखी होगा।

15 मेरे कर्मों से ऐसा अद्भुत, सुंदर, हर प्रकार से तेजस्वी महल बना है। यह पुण्य कर्म करने की प्रेरणा देता है।

तब वृद्ध ने यह इच्छा करते हुए कि वह विशाखा के पुनर्जन्म स्थान के बारे में बता रही है, यह श्लोक कहा:

16 "तुम्हारे उस शुद्ध आनंद से ही तुम्हें एक अद्भुत, सुंदर महल प्राप्त हुआ है। और वह स्त्री, जिसने यह दान दिया, मुझे उसके पुनर्जन्म के बारे में बताओ। वह कहाँ से आई है?"

तब वृद्ध द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हुए उसने कहा;

17 "हे आदरणीय महोदय, मेरी मित्र ने भिक्षुओं के संघ के लिए एक बड़ा मठ बनवाया।" जिसने धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) को समझा और वरदान दिया, वह सृजन में आनंद लेने वाले देवों (देवदूतों) में विराजमान हुई है।

18 “वह सुनीमिमिता की प्रधान रानी हैं। इस कर्म का परिणाम अकल्पनीय है। हे पूज्यवर, आपने मुझसे जो पूछा था: वह कहाँ से उत्पन्न हुई हैं? मैंने उसका यथावत उत्तर दे दिया है।

19 इसी कारण दूसरों को भी प्रेरित करें कि वे प्रसन्नतापूर्वक भिक्षु संघ को दान दें और श्रद्धा और आनंद से धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुनें। मनुष्यों में जन्म, जो प्राप्त करना अत्यंत कठिन है, आपको प्राप्त हुआ है।

20 उस मार्ग-गुरु (बुद्ध) ने उस मार्ग का उपदेश दिया, उनका स्वर ब्रह्म-स्वर (प्रधान देवदूत) था और उनकी त्वचा स्वर्णमय थी। प्रसन्नतापूर्वक भिक्षु संघ को दान दें, जिसमें श्रद्धा के दान का बड़ा फल (लाभ) होगा।

21 बुद्धिमानों द्वारा सराहे गए वे आठ प्रकार के पुरुष, चार जोड़े हैं। वे दान प्राप्त करने योग्य हैं, वे शुभचिंतक (बुद्ध) के शिष्य हैं। इन्हें दिए गए दान का बड़ा फल (लाभ) होता है।

22 और उनमें से चार मार्ग पर हैं और चार उसमें स्थापित हैं। फल। यह भिक्षु संघ धर्मी, शील, समाधि और दिव्य ज्ञान से परिपूर्ण है।

23 हे मनुष्यों, जो पुण्य कमाने की आशा में दान देते हैं, उनके लिए इस भिक्षु संघ को दिया गया दान पुनर्जन्मों में उपयोगी पुण्य लाता है; यह दान अत्यंत फलदायी है।

24 क्योंकि यह भिक्षु संघ व्यापक और विशाल है। यह सागर के समान असीम है। मनुष्यों में वीर के शिष्य इनमें सर्वश्रेष्ठ हैं, जो धम्म का पाठ करके प्रकाश फैलाते हैं।

25 जो इस भिक्षु संघ को दान देते हैं, उनका दान उचित, उचित और उचित रूप से दिया गया होता है। इस भिक्षु संघ को दिया गया वह दान अत्यंत फलदायी होता है और संसार के ज्ञेयियों द्वारा उसकी प्रशंसा की जाती है।

26 इस प्रकार के पुण्य का स्मरण करते हुए, जो संसार में प्रसन्नतापूर्वक रहते हैं, वे कंजूसी के कलंक को जड़ से नष्ट करके, निष्कलंक होकर स्वर्गलोक प्राप्त करते हैं।

और आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु अनुराधा, मनुष्यलोक में लौटकर, भगवान बुद्ध को यह बात उसी प्रकार बताई जो उन्होंने उस देवता से सुनी थी। भगवान बुद्ध ने इसे धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश देने का अवसर बनाया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.7

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- I.4.7 -------------------------->>>> अगला

4.7 चार स्त्रियों का महल (45)
(चतुरित्थि-विमान)

जब भगवान (भगवान बुद्ध) श्रावस्ती में निवास कर रहे थे, तब पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना, जैसा कि ऊपर वर्णित है, देव (देवदूत) यात्रा पर तैंतीस (स्वर्ग) के लोक में गए। वहाँ उन्होंने क्रमानुसार चार महलों में चार देव (देवदूत) कन्याओं को देखा, जिनमें से प्रत्येक एक

हजार अप्सराओं के दल (परिचारकों के समूह) के साथ देव (देवदूत) आनंद का अनुभव कर रही थीं, और उन्होंने क्रमानुसार उनसे उनके द्वारा पहले किए गए (अच्छे) कर्म के बारे में पूछा:

1 "हे देवता, आप अत्यंत सुंदर हैं और समस्त दिशाओं को प्रकाशमान कर रही हैं।

2 आपकी सुंदरता का ऐसा कारण क्या है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख किस कारण उत्पन्न होते हैं?

3 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा का ऐसा कारण क्या है और आपकी सुंदरता समस्त दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

और उन्होंने पूछे जाने पर तुरंत एक-एक करके उत्तर दिया। इसे व्यक्त करने के लिए यह श्लोक कहा गया:

4 मोग्गलाना द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देवता ने बताया कि यह किस कर्म का फल था:

कहा जाता है कि भगवान कश्यप (पूर्व बुद्ध) के समय में, ये स्त्रियाँ एसिका नामक राज्य के पन्नाकाटा नामक नगर में एक अच्छे परिवार में पुनर्जन्म लेकर जन्मी थीं। वयस्क होने पर वे उसी शहर में अपने पति के घर गईं। वे सद्भाव से रहने लगीं। उनमें से एक ने एक भिक्षु को भिक्षा मांगते हुए देखा और श्रद्धा और आनंद से उन्हें नीले कमलों का एक गुच्छा दिया, एक ने दूसरे भिक्षु को नीले कमलों का एक गुच्छा दिया, एक ने लाल कमलों का एक गुच्छा दिया और एक ने चमेली की कलियाँ दीं। बाद में वे मर गईं और तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लिया। उनके साथ एक हजार अप्सराओं का दल था। अपने जीवनकाल में वहाँ देव-आनंद का आनंद लेने के बाद, वे वहाँ से चली गईं और उसी पुण्य कर्म के फल के कारण इस बुद्ध के समय में उसी स्थान पर पुनर्जन्म लिया, और आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे वर्णित तरीके से प्रश्न पूछे। उनमें से एक ने अपने पुराने कर्मों के बारे में बड़े भिक्षु को बताते हुए कहा:

5 मैंने एस्का लोगों के ऊँचे और भव्य नगर, सुंदर पन्नाकाटा में भिक्षा माँग रहे एक भिक्षु को मुट्ठी भर नीले कमल दिए।

6 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होती हूँ, और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

7 हे महान भिक्षु, मैं आपको अपने जन्म के समय किए गए पुण्य कर्मों के बारे में बताती हूँ। इसी कारण मेरी तेजस्वी महिमा ऐसी है और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।

दूसरे भिक्षु से उसने कहा:

8-11 जैसा कि ऊपर 1-4 में वर्णित है

12 "मैंने एस्का लोगों के ऊँचे और भव्य नगर, सुंदर पन्नाकाटा में भिक्षा माँग रहे एक भिक्षु को मुट्ठी भर नीले कमल दिए।"

13-14 जैसा कि ऊपर 6, 7 में है।

दूसरे से उन्होंने कहा;

15-18 जैसा कि ऊपर 1-4 में है।

19 "इसकी जड़ सफेद थी, इसकी (बाहरी) पंखुड़ियाँ हरी थीं। यह झील के पानी में उगा था। मैंने इसे एस्का लोगों के ऊँचे और भव्य नगर, सुंदर पन्नाकाटा में भिक्षा माँग रहे एक भिक्षु को दिया।"

20-21 जैसा कि ऊपर 6, 7 में है।

दूसरे से उन्होंने कहा:

22-25 जैसा कि ऊपर 1-4 में है।

26 "मैंने, सुमना ने, हाथीदांत रंग की चमेली की कलियाँ एक आनंदित हृदय वाले भिक्षु को दीं, जो एस्का लोगों के ऊँचे और भव्य नगर, सुंदर पन्नाकाटा में भिक्षा माँग रहे थे।"

27,28 जैसा कि ऊपर 6, 7 में है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.8

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.4.8 -------------------------->>>> अगला

4.8 आमों का महल (46)
(अंबा-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध) श्रावस्ती में निवास कर रहे थे। उस समय वहाँ की एक गृहस्थ अनुयायी ने निवास स्थान दान करने के महान फलदायी और बड़े लाभ के बारे में सुना और उत्साह से भरकर भगवान (भगवान बुद्ध) को आदरपूर्वक प्रणाम किया और कहा, "हे पूज्य, मैं एक निवास स्थान बनवाना चाहती हूँ। मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि आप मुझे उपयुक्त स्थान बताएँ।" भगवान (भगवान बुद्ध) ने भिक्षुओं को निर्देश दिया। भिक्षुओं ने उसे एक उपयुक्त स्थान बताया। तब उसने एक सुंदर निवास स्थान बनवाया और उसके चारों ओर आमों के वृक्ष लगाए। चारों ओर आमों के वृक्षों की कतारों से घिरा, छाया और पानी से भरपूर, और मोतियों के जाल की तरह बिखरी सफेद रेत से युक्त वह निवास स्थान अत्यंत मनमोहक था। उस स्त्री ने रंग-बिरंगे पर्दों और फूलों व सुगंधित मालाओं से मठ को देवों के महल की तरह सजाया, तेल का दीपक जलाया, आम के पेड़ों को नए कपड़े से लपेटा और उसे भिक्षुओं के संघ को समर्पित कर दिया। बाद में उसकी मृत्यु हो गई और वह तैंतीसवें लोक में पुनर्जन्म लेकर लौटी। वहाँ उसके लिए आमों के बाग से घिरा एक विशाल महल प्रकट हुआ। वहाँ अप्सराओं से घिरी हुई उसने देव-आनंद का अनुभव किया। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना उनके पास आए और पूछा:

1 "देवी के समान आपका आमों का बाग मनमोहक है। यह स्थान भव्य है, अनेक वाद्ययंत्रों की ध्वनि से गूंजता है, और अप्सराओं के स्वरों से ओतप्रोत है।

2 और यहाँ एक विशाल स्वर्ण दीपक सदा जलता रहता है, जो चारों ओर फलों से लदे वृक्षों से घिरा हुआ है।

3 आपका यह आमों का बाग इतना मनमोहक और भव्य क्यों है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध हैं, और यहाँ वे सभी आनंद उत्पन्न होते हैं जो आपके हृदय को प्रिय हैं?

4 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है?"

5 मोग्गलाना के प्रश्न से प्रसन्न होकर उस देवी ने प्रश्न पूछे जाने पर बताया कि यह किस कर्म का फल है।

6 "पिछले जन्म में जब मैं मनुष्य के रूप में मनुष्यों के बीच, भिक्षुओं के संघ के लिए आम के पेड़ों से घिरे एक मठ का निर्माण करवाया था।

7 जब मठ बनकर तैयार हो गया और मैं समर्पण समारोह की तैयारी करवा रहा था, आम के पेड़ों को कपड़े से ढक रहा था और कपड़े के फल बना रहा था, तब

मैंने वहाँ एक दीपक जलाकर अपने हाथों से अतुलनीय भोजन भिक्षुओं के संघ को सहर्ष अर्पित किया। 8

इसी कारण मेरा आम का बाग मनमोहक है, यह स्थान भव्य है, अनेक वाद्ययंत्रों की ध्वनि से गूंजता है और अप्सराओं के स्वरों से ओतप्रोत है।"

10 और यहाँ एक महान स्वर्ण दीपक सदा जलता रहता है, जो चारों ओर से फलदार वृक्षों से घिरा हुआ है।

11 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं यहाँ समृद्ध होती हूँ, और वहाँ वे सभी सुख उत्पन्न होते हैं जो मेरे हृदय को प्रिय हैं।

12 हे महानुभाव भिक्षु, मैं आपको अपने जन्म के समय किए गए पुण्य कर्मों के बारे में बताती हूँ। इसी कारण मेरी तेजस्वी महिमा ऐसी है और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.9

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.4.9 -------------------------->>>> अगला

4.9 पीला महल (47)
(पिता-विमान)

भगवान बुद्ध के अंतिम निर्वाण (शाश्वतता में देहांत) के बाद, जब राजा अजातसत्तु ने राजगृह में भगवान बुद्ध के अवशेषों के अपने हिस्से के लिए एक विशाल स्तूप (पवित्र स्मारक) का निर्माण किया और समर्पण समारोह संपन्न किया, तो कोसातकी लता के चार फूल लिए एक गृहस्थ अनुयायी ने मार्ग में आने वाले खतरों की परवाह किए बिना भेंट करने के लिए आगे बढ़ी। तभी एक बछड़े वाली गाय तेजी से आगे बढ़ी और अपने सींगों से उस पर हमला कर दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। वह तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लेकर प्रकट हुई। सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) अपने रथ में आनंद भोगने जा रहे थे, और उन्होंने उनसे इन श्लोकों में प्रश्न किया:

1 "सुनहरे पीले वस्त्र और ध्वज वाली, सुनहरे पीले आभूषणों से सजी, सुनहरे पीले चंदन से अभिषेक की हुई, सुनहरे पीले कमलों की माला धारण करने वाली,

2 सुनहरे पीले महल और पलंग, आसन और कटोरे वाली, सुनहरे पीले छाते, रथ, घोड़े और पंखे वाली,

3 हे सुंदरी, तुमने पिछले मानव जन्म में क्या कर्म किया था? देवता (देवदूत), जब पूछा जाए, तो बताओ कि यह किस कर्म का फल है।"

उन्होंने इन श्लोकों में उत्तर दिया:

4 "हे आदरणीय, एक लता है, जिसे कोसातकी कहते हैं, जो कड़वी और अनमोल है।" मैंने उससे चार फूल तोड़कर स्तूप (पवित्र स्मारक) पर चढ़ाए।

5 गुरु (बुद्ध) के अवशेषों के प्रति श्रद्धा से ग्रस्त होकर और उस पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैंने उसके मार्ग पर ध्यान नहीं दिया।

6 इसलिए गाय ने मुझे मार डाला, स्तूप (स्तूप) के लिए मेरी तड़प अधूरी रह गई। यदि मैंने तब (जो मुझे करना चाहिए था) संचित किया होता, तो निश्चित रूप से इससे कहीं अधिक बड़ा परिणाम होता।

7 हे देव-प्रमुख, मघव, देवों के हाथी, उस कर्म के कारण, मैंने मानव शरीर त्याग कर आपकी संगति में आया हूँ।

8 यह सुनकर मघव, जो तैंतीस (10 करोड़ देवदूतों) के अधिपति और देवों के हाथी समान, तैंतीस (स्वर्ग) को प्रसन्न करने वाले थे, ने मताली (सारथी) से कहा:

9 "देखो मताली, यह एक पुण्य कर्म का कितना अद्भुत और विविध फल है। यहां तक कि दान के योग्य व्यक्ति के लिए किया गया एक छोटा सा कार्य भी पुण्य कर्म है, जिसका बड़ा फल है।

10 जब मन में श्रद्धा और आनंद होता है, तो तथागत (बुद्ध) या आत्मज्ञानी (बुद्ध) या उनके शिष्यों को दिया गया कोई भी दान तुच्छ नहीं होता।

11 आओ मताली, हम भी बार-बार आदर कर सकते हैं। तथागत (बुद्ध) के अवशेषों से प्राप्त पुण्य संचय कितना सुखद है।

12 चाहे वे जीवित हों या उनका निधन हो गया हो, फल उस मन के लिए भी है जो निर्धन है। क्योंकि मानसिक संकल्प के फलस्वरूप ही प्राणी अच्छे पुनर्जन्म को प्राप्त होते हैं।

13 निश्चय ही तथागत (बुद्ध) अनेकों के कल्याण के लिए जन्म लेते हैं, ताकि सेवा करने के बाद दानदाता स्वर्ग को प्राप्त हों।

यह सुनकर सक्का (इंद्र, देवदूतों के राजा) उस आनंद उद्यान को छोड़कर सात दिनों तक चुलमानी मंदिर में दर्शन करने गए। कुछ समय बाद जब पूज्य नारद देवों की यात्रा पर थे, तब इंद्र ने उन्हें श्लोकों में उस घटना का वर्णन किया। नारद ने यह वर्णन संकलकों को सुनाया। उन्होंने इसे संग्रह में शामिल किया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.10

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.4.10 -------------------------->>>> अगला

4.10 गन्ने का महल (48)
(उच्चु-विमान)

यह पाठ (पाली) में पूर्व गन्ने के महल के समान है। लेकिन यहाँ सास ने बहू की हत्या करते समय मिट्टी के ढेले का प्रयोग किया था। इसी कारण ये कथाएँ अलग-अलग पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं।

1 "देवताओं के साथ पृथ्वी को प्रकाशमान करके, आप अपनी महिमा, सौंदर्य, वैभव और तेज से चंद्रमा और सूर्य के समान चमकते हैं, जैसे ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) इंद्र सहित तैंतीस स्वर्गों के देवदूतों को भी क्षीण कर देते हैं।

2 मैं आपसे पूछता हूँ, हे नीले कमलों की माला धारण करने वाले, माथे पर माला धारण करने वाले, स्वर्णमय त्वचा वाले, उत्तम वस्त्र धारण करने वाले, आप कौन हैं, हे प्यारे देवता, जो मुझे आदर दे रहे हैं?

3 आपने अपने पूर्व जन्म में मनुष्य के रूप में कौन सा कर्म किया था? क्या आपने पुण्य कर्मों का दान किया था, या नैतिकता का पालन किया था? हे महान ख्यातिप्राप्त, आप किस कर्म के फल स्वरूप पुनर्जन्म प्राप्त कर रहे हैं? हे देवता, पूछे जाने पर, समझाएँ कि यह किस कर्म का फल है।"

तब देवता (देवदूत) ने समझाया:

4-11 कहानी संख्या 30 के श्लोक 4-11 के समान, सिवाय श्लोक 6 में 'कुर्सी' के स्थान पर 'मिट्टी का ढेला' के प्रतिस्थापन के।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.11

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.4.11 -------------------------->>>> अगला

4.11 निवास स्थान का सम्मान (49)
(वंदना-विमान)

भगवान (बुद्ध) श्रावस्ती में ठहरे हुए थे। उस समय कई भिक्षु वर्षा ऋतु एक गाँव में बिताकर, अंत में "आमंत्रित" होकर भगवान (बुद्ध) को प्रणाम करने के लिए श्रावस्ती जा रहे थे। वहाँ एक स्त्री उनसे मिलीं और श्रद्धा, आनंद और आदर से भरे भाव से उनका अभिवादन किया। मृत्यु के बाद उनका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्ग) में हुआ, और महा-मोग्गलाना ने उनसे प्रश्न किया:

1 "हे देवी, आप अत्यंत सुंदर हैं और सभी दिशाओं को प्रकाशमान कर रही हैं।

2 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है? आप यहाँ कैसे समृद्ध होती हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख कैसे प्राप्त होते हैं?

3 हे महान महिमा की देवी, मैं आपसे पूछता हूँ कि मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने क्या पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 मोग्गलाना द्वारा पूछे गए प्रश्नों से प्रसन्न होकर, उस देवी ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "जब मैं मनुष्यों के बीच मनुष्य के रूप में जन्मा, तो उच्च नैतिकता (ब्रह्मचर्य) वाले भिक्षुओं को देखकर, जिनके चरणों को मैंने श्रद्धापूर्वक और प्रसन्नता से आदर दिया, मैंने अपने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया।

6 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।" (जैसा कि अध्याय 1, 6, 7 आदि में है)
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु4.12

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- I.4.12 -------------------------->>>> अगला

4.12 राज्जुमाला का महल (50)
(राज्जुमाला-विमान)

भगवान बुद्ध सावती में, जेतवन में ठहरे हुए थे। गया नामक छोटे से गाँव में एक ब्राह्मण (पुजारी) रहता था, जिसने अपनी पुत्री का विवाह एक ब्राह्मण के पुत्र से कर दिया। उस घर में राजसी प्रभुत्व था और वह एक दासी की पुत्री से शुरू से ही घृणा करती थी, उसे डांटती, गाली देती और मारती थी। जैसे-जैसे लड़की बड़ी होती गई, राज्जुमाला उसके साथ और भी बुरा बर्ताव करने लगी। (कहा जाता है कि कश्यप बुद्ध के समय में उनके संबंध उलट गए थे)। अपनी मालकिन को पीटते समय उसके बाल खींचने से रोकने के लिए, वह नाई की दुकान पर गई और अपने बाल मुंडवा लिए। तब मालकिन ने क्रोधित होकर कहा कि सिर मुंडवाकर वह उससे बच नहीं सकती, इसलिए उसने उसके सिर में रस्सी बांध दी, उसे उससे नीचे खींच लिया और उसे रस्सी हटाने नहीं दी; इसीलिए उसका नाम राज्जुमाला पड़ा। एक दिन, महान करुणा की प्राप्ति से प्रेरित होकर, गुरु (बुद्ध) ने संसार का अवलोकन किया और राज्जुमाला में आध्यात्मिक जागृति के प्रथम चरण, सोतपान (स्वर्गीय प्रवेश) के फल के लिए योग्यता देखी और अपनी किरणों से युक्त एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। व्यथित राज्जुमाला, मृत्यु की कामना करते हुए, एक घड़ा लेकर पानी लाने का बहाना करके आई और स्वयं को फांसी लगाने के लिए एक वृक्ष की खोज करने लगी। बुद्ध को देखकर, उनका हृदय उनकी ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने सोचा, "क्या होगा यदि भगवान (बुद्ध) मुझ जैसे लोगों को भी धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाएं? शायद मैं अपने इस दुखमय जीवन से मुक्त हो जाऊं।" तब उन्होंने विवेक से उनसे कहा, "राज्जुमाला!" और वह मानो अमृत से अभिषेकित होकर उनके पास आईं और प्रणाम किया। उन्होंने राज्जुमाला को चार सत्यों का उपदेश दिया और उन्होंने आध्यात्मिक प्रवेश का फल प्राप्त किया। इसके बाद वे गांव गए और एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। अब स्वयं को नष्ट करने में असमर्थ होकर उसने धैर्य, मित्रता और दया भाव से सोचा, "ब्राह्मण स्त्री मुझे जो चाहे चोट पहुँचाए, चोट पहुँचाए या जो चाहे करे," और घड़े में पानी लेकर वापस चली गई। घर का मुखिया द्वार पर खड़ा था और बोला, "तुम्हें पानी लाने में बहुत समय लग गया और तुम्हारा चेहरा दमक रहा है; तुम मुझे बिल्कुल अलग लग रही हो; क्या बात है?" उसने उसे बताया; और ब्राह्मण प्रसन्न हुआ और अंदर जाकर बोला, "राज्जुमाला के साथ और कुछ मत करो।" फिर वह जल्दी से गुरु (बुद्ध) के पास गया और आदरपूर्वक उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया। उसके बाद वह, बहू और घर में आए ब्राह्मण गुरु (बुद्ध) के पास बैठ गए, जिन्होंने उन्हें बताया कि उनके और राज्जुमाला के साथ पिछले जन्म में क्या हुआ था, साथ ही धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर उपयुक्त प्रवचन भी दिया। फिर वह श्रावस्ती लौट आया और ब्राह्मण ने राज्जुमाला को अपनी दत्तक पुत्री बना लिया, जबकि बहू ने उसके साथ कोमल व्यवहार किया। तैंतीस (स्वर्ग) में मृत्यु के बाद पुनर्जन्म लेकर, राज्जुमाला से भी आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने प्रश्न किया:

1 "हे देवता (परी), आप जो असाधारण सुंदरता के साथ खड़ी हैं, संगीत की संगत में नृत्य भी कर रही हैं, आपका..."हाथ और पैर विभिन्न प्रकार के हावभाव बना रहे हैं।

2 जब तुम अपने सभी अंगों से हर तरह नृत्य करती हो, तो देवदूतों जैसी मधुर ध्वनियाँ निकलती हैं, जो सुनने में आनंददायक होती हैं।

3 जब तुम अपने सभी अंगों से हर तरह नृत्य करती हो, तो देवदूतों जैसी सुगंध चारों ओर फैलती है, मीठी सुगंध चारों ओर फैलती है, मनमोहक।

4 जब तुम अपने शरीर को झुलाती हो, तो तुम्हारी गुंथी हुई बालों की आभूषणों की ध्वनि पंच वाद्ययंत्रों के संगीत की तरह सुनाई देती है।

5 हवा में लहराते, कांपते हुए कान के झुमके - इनकी ध्वनि पंच वाद्ययंत्रों के संगीत की तरह सुनाई देती है।

6 और तुम्हारे सिर पर उन मीठी सुगंध वाली, मनमोहक मालाओं की सुगंध मंजुसक वृक्ष की तरह चारों दिशाओं में फैलती है।

7 तुम उस मीठी सुगंध को महसूस करती हो, तुम अलौकिक सौंदर्य देखती हो। हे देवदूत, जब पूछा जाए तो बताओ कि यह किस कर्म का फल है।

इस प्रकार पूछे जाने पर, देवदूत ने अपने पूर्व जन्म से शुरू करते हुए, इन श्लोकों में समझाया:

8 "पहले मैं गया में एक ब्राह्मण की दासी थी; कम पुण्य वाली, बदकिस्मत, मुझे राज्जुमाला के नाम से जाना जाता था।

9 गाली-गलौज, मार-पीट और धमकियों से तंग आकर, मैंने एक घड़ा उठाया और पानी लाने चली गई।

10 घड़ा सड़क से दूर फेंककर, मैं एक घने जंगल में घुस गई, यह सोचते हुए: यहीं मेरी मृत्यु होगी, मेरे लिए जीवन का क्या उपयोग है?

11 एक मजबूत फंदा बनाकर उसे एक पेड़ पर लटकाकर, मैंने चारों ओर देखा: अब इस जंगल में कौन रहता है?

12 मैंने वहाँ स्वयं-जागृत (बुद्ध) को देखा, जो समस्त जगत के प्रति मित्रवत ऋषि थे, एक पेड़ की जड़ में बैठे हुए, बिना किसी भय के ध्यान कर रहे थे।

13 तब मुझे एक अद्भुत, विस्मयकारी रोमांच हुआ: अब इस जंगल में कौन रहता है: मनुष्य या देवता?"

14 शांत और आस्था जगाने वाले, जंगल से खुले में आए, और जो मैंने देखा उससे मन को शांति मिली: ये कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं।

15 इंद्रियों को संजोए हुए, ध्यान में लीन, मन भटका हुआ नहीं, ये अवश्य ही प्रबुद्ध (बुद्ध) हैं, समस्त संसार के प्रति मित्रवत।

16 अपनी गुफा में निवास करने वाले सिंह के समान, भय और विस्मय उत्पन्न करने वाले, अजेय, इन्हें देखना उदुमबारा फूल के समान दुर्लभ अवसर था।

17 तथागत (बुद्ध) ने कोमल शब्दों में मुझसे कहा: राज्जुमाला ने मुझसे कहा, तथागत (बुद्ध) की शरण लो।

18 जब मैंने उनकी कोमल, अर्थपूर्ण, मधुर, सौम्य, कोमल और प्यारी आवाज सुनी, जो समस्त दुःखों को दूर करती थी,

19 समस्त संसार के प्रति मित्रवत तथागत (बुद्ध) ने यह जानते हुए कि मेरा मन कोमल, आस्थावान और शुद्ध है, मुझे उपदेश दिया।

20 उसने मुझसे कहा, "दुख यही है। यही दुख का मूल है, यही दुख का निवारण है, और अमरत्व में प्रवेश करना ही सीधा मार्ग है।"

21 दयालु (बुद्ध), धर्मात्मा के उपदेश में दृढ़ रहकर, मैं अमरत्व, शांति, निर्वाण, अपरिवर्तनीय अवस्था को प्राप्त कर लिया।

22 और मैं, मूलभूत विश्वास से प्रेरित प्रेम में दृढ़ खड़ी, अविचलित दृष्टि वाली, प्रबुद्ध (बुद्ध) की अपनी पुत्री हूँ।

23 और (अब) मैं आनंदित हूँ। मैं खेलती हूँ, मैं बिना किसी भय के प्रसन्न होती हूँ। मैं देवदूतों के समान माला पहनती हूँ, मैं कोमलता प्रदान करने वाला मधुर रस पीती हूँ।

24 साठ हजार वाद्ययंत्र मुझे मेरी नींद से जगाते हैं: अलम्बा, गग्गरा, भीमा, साधुवादिन और संशय,

25 पोक्खरा और सुफस्सा; विनमोक्खा और अन्य (स्त्रियाँ): नंदा, सुनंदा, सोनादिन्ना, सुचिंहिता,

26 अलम्बुसा, मिसकेसी और निर्दयी पुंडारिका, एनीफस्सा, सुफस्सा और सुभद्दा, मुदुकादिनी-

27 ये और अन्य सुंदर (देवता) अप्सराओं को (नींद से) जगाते हैं। सुबह वे मेरे पास आकर कहते हैं, “आओ, हम नाचेंगे, हम गाएंगे, आओ, हम तुम्हें आनंदित करेंगे।”

28 यह नंदनवन (स्वर्ग), दुःख रहित, आनंदमय, तैंतीस (स्वर्गों) का महान उपवन, उन लोगों के लिए नहीं है जिन्होंने कोई पुण्य कर्म नहीं किए हैं, बल्कि केवल उन्हीं लोगों के लिए है जिन्होंने पुण्य कर्म किए हैं। 29 न

तो यहाँ और न ही परे उन लोगों के लिए कोई आनंद है जिन्होंने कोई पुण्य कर्म नहीं किए हैं, परन्तु जिन लोगों ने पुण्य कर्म किए हैं, उनके लिए यहाँ और परे आनंद है।

30 जो संगति की लालसा रखते हैं, उन्हें इनके द्वारा बहुत से पुण्य कर्म करने चाहिए, क्योंकि जिन्होंने पुण्य कर्म किए हैं वे स्वर्ग में आनंदित होते हैं।

31 तथागत (बुद्ध) वास्तव में बहुतों के कल्याण के लिए उत्पन्न होते हैं, मनुष्यों के दान के योग्य होते हैं, पुण्य के क्षेत्रों के स्रोत होते हैं जिनमें, नमन करने पर, दानकर्ता स्वर्ग में आनंदित होते हैं।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.1.

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- II.5.1 -------------------------->>>> अगला

5.1. पहला: मेंढक-देव का महल (51)
(मंडुकदेवपुत्त-विमान)

भगवान (बुद्ध) चंपा में, गग्गर कमल के तालाब के किनारे ठहरे हुए थे। भोर होते समय, करुणा की गहरी अनुभूति से जागृत होकर उन्होंने देखा, “आज शाम जब मैं धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दे रहा हूँ, तो एक मेंढक मेरी वाणी सुनकर और उससे आकर्षित होकर, किसी के हाथों हिंसा का शिकार होकर मारा जाएगा; वह देवलोक में पुनर्जन्म लेगा और जनसमूह के सामने प्रकट होगा; इस प्रकार धम्म (शाश्वत सत्य) का गहन प्रसार होगा।” दिन का कार्य पूरा करने के बाद, उन्होंने तालाब के किनारे एक चार-स्तरीय सभा को उपदेश देना शुरू किया। तभी एक मेंढक, यह सोचकर कि “यही तो धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) कहलाता है,” तालाब से बाहर आया और श्रोताओं के पीछे दुबक गया। एक चरवाहे ने गुरु (बुद्ध) को बोलते और सभा को चुपचाप सुनते हुए देखकर, अपनी लाठी पर झुककर मेंढक को कुचल दिया। मेंढक का पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक में बारह योजन वाले स्वर्ण महल में अप्सराओं के साथ हुआ। यह सोचते हुए कि उसने ऐसा क्या कर्म किया था कि उसे वहाँ जन्म मिला, उसे भगवान (बुद्ध) की वाणी के प्रति अपने आकर्षण के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दिया। वह तुरंत अपने महल के साथ आया, उससे नीचे उतरा, और भगवान (बुद्ध) को देखकर उनके पास गया और उनका सम्मान किया। भगवान ने बुद्धत्व प्रकट करते हुए उससे पूछा:

1 "कौन है, जो आध्यात्मिक शक्ति और सामर्थ्य से तेजस्वी है, और जिसकी असाधारण सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है, मेरे चरणों का सम्मान कर रहा है?"

उस देव-युवक ने अपने पूर्व जन्म के बारे में बताते हुए इन श्लोकों में समझाया:

2 "मैं पहले एक मेंढक था, जल में रहने वाला जीव। परन्तु जब मैं आपका धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुन रहा था, तब एक (युवक) ग्वाले ने मुझे मार डाला।

3 क्षण भर के लिए मन की शांति पाकर, मेरी मानसिक शक्ति और मेरे साथ के लोगों को देखो, और मेरी महिमा, सुंदरता और मेरे प्रकाश को देखो।

4 हे गौतम (बुद्ध), जिन्होंने लंबे समय तक आपका धम्म (शाश्वत

सत्य का मार्ग) सुना है, वे ही उस स्थिर स्थान को प्राप्त करते हैं जहाँ जाने वाले शोक नहीं करते।" तब भगवान (बुद्ध) ने सभा के सभी अनुयायियों की योग्यताओं को देखकर पूर्ण रूप से धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया। उपदेश के अंत में उस देव-युवक को सोतपान (आध्यात्मिक जागृति का पहला चरण) का फल प्राप्त हुआ। भगवान बुद्ध का आदर करने के बाद वे देवलोक लौट गए।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.2

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- II.5.2 -------------------------->>>> अगला

5.2 रेवती का महल (52)
(रेवती-विमान)

भगवान (बुद्ध) बनारस के पास, इसिपताना में हिरण अभयारण्य में ठहरे हुए थे। वहाँ नंदिया नाम का एक विश्वासी गृहस्थ अनुयायी, जो भिक्षु संघ का एक उदार दाता और सेवक था, रहता था। उसके माता-पिता चाहते थे कि वह अपनी चचेरी बहन रेवती से विवाह करे, लेकिन वह विश्वासी नहीं थी और दानशील भी नहीं थी। नंदिया को रेवती से कोई प्रेम नहीं था। उसकी माता ने रेवती से कहा कि वह उनके घर आए और भिक्षु संघ के आतिथ्य सत्कार की तैयारी करे, और उसने ऐसा ही किया। माता ने अपने पुत्र से कहा, "अब वह हमारी सलाह मान लेगी," इसलिए वह मान गया और उनका विवाह हो गया, और रेवती ने उसे दो पुत्र दिए। इसके बाद नंदिया ने व्यापक रूप से दान-पुण्य का कार्य शुरू किया और इसिपताना के मठ में एक हॉल बनवाया, जिसे उसने तथागत (बुद्ध) को भेंट किया और उनके हाथों पर अर्पण जल डाला। उसी समय तैंतीसवें लोक में बारह योजनों का एक देव-सदृश महल अप्सराओं के साथ प्रकट हुआ। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने यात्रा के दौरान इसे देखा और भगवान बुद्ध से पूछा कि यह किसके लिए है। भगवान बुद्ध ने ये श्लोक कहे:

1. "दूर से विदा हुए मनुष्य के सुरक्षित घर लौटने पर उसके सगे-संबंधी, मित्र और सहयोगी प्रसन्न होते हैं।

2. इसी प्रकार पुण्य कर्म करने वाले मनुष्य के इस लोक से परलोक जाने पर, उसके पुण्य कर्मों का सत्कार सगे-संबंधियों द्वारा प्रियजन के लौटने के समान होता है।"

यह सुनकर नंदीय प्रसन्न हुए, उन्होंने दान दिया और पुण्य कर्म किए। फिर कार्य के लिए घर से निकलते हुए उन्होंने रेवती को लगन से अपना कार्य जारी रखने का आदेश दिया। उसने सहमति दे दी, लेकिन जहाँ एक ओर वह अनुपस्थित रहते हुए भिक्षु संघ और दरिद्रों को दान देता रहा, वहीं रेवती ने कुछ दिनों बाद दरिद्रों को दान देना बंद कर दिया, भिक्षुओं को घटिया भोजन दिया और भिक्षुओं पर दोष मढ़ने के लिए मछली और मांस के टुकड़े बिखेर दिए। तब नंदीय लौट आया और घटना की सूचना सुनकर रेवती को उसके घर भेज दिया, परन्तु उसे अधिक भोजन दिया। कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गई और वह अपने लिए बने तैंतीसवें लोक में पुनर्जन्म लेकर आया। परन्तु रेवती ने सभी दान देना बंद कर दिया और भिक्षुओं को कोसती रही, यह कहते हुए कि "इन्हीं के कारण मेरी सारी समृद्धि और लाभ कम हो गया।"

तब वेसवना ने अपने दो यक्षों को बरनासी जाकर यह घोषणा करने को कहा कि रेवती को उस दिन से सातवें दिन नरक में फेंक दिया जाएगा। यह सुनकर लोग भयभीत हो गए; परन्तु रेवती ऊपरी मंजिल पर गई, दरवाजा बंद किया और बैठ गई। एक सप्ताह बाद,

चमकीले भूरे बालों और दाढ़ी वाले, टेढ़े-मेढ़े दाँतों और लाल आँखों वाले दो भयानक यक्ष आए और बोले, "उठो, रेवती, हे दुष्ट चरित्र वाली!" और उन्होंने उसका गला और कोड़ा पकड़कर उसे सबके सामने गलियों में घुमाया, फिर उसे हवा में उड़ाकर तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में ले गए और उसे विलाप करते हुए भीड़भाड़ वाले नरक में ले आए। यम के दूतों ने उसे भीड़भाड़ वाले नरक में डाल दिया। जैसा कि कहा जाता है:

3 “हे घोर दुष्ट रेवती, उठो! हे कंजूस स्त्री, नरक का द्वार खुल गया है। हम तुम्हें वहाँ ले चलेंगे जहाँ बुरे जन्मों से पीड़ित लोग शोक मनाते हैं, नरकवासी दुख भोगते हैं।”

यह बात संशोधनवादियों ने कही:

4 जब उन्होंने ऐसा कहा, तो लाल आँखों वाले वे दो विशालकाय यक्ष, यम के दूत, रेवती को एक-एक भुजा से पकड़कर देवों (देवदूतों) के समूह की ओर चल पड़े।

इन यक्षों द्वारा तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में ले जाए जाने पर, रेवती नंदीय के महल के पास बैठी और उसकी सूर्य के समान चमक देखकर, इन यक्षों से पूछा:

5 “यह महल किसका है जो लोगों से भरा हुआ है, सूर्य के समान चमकीला और सुंदर है, सोने के जाल से ढका हुआ है और सूर्य की किरणों के समान दमकता है?

6 उत्तम चंदन से अभिषेक की हुई कई स्त्रियाँ इस महल को अंदर और बाहर से सुशोभित करती हैं, जिससे यह सुंदरता में सूर्य के समान प्रतीत होता है। स्वर्ग प्राप्त करके कौन इस महल में आनंदित हो रहा है?”

उन्होंने उससे कहा:

7 “बरानासी में नंदीय नाम का एक गृहस्थ अनुयायी था, जो कंजूस नहीं, उदार और दानशील था। यह उसका महल है, जो सूर्य की किरणों के समान चमकते हुए लोगों से भरा हुआ है।

8 उत्तम चंदन से अभिषेक की हुई कई स्त्रियाँ महल को अंदर और बाहर से सुशोभित करती हैं, जिससे वह सूर्य के समान सुंदर प्रतीत होता है। वह स्वर्ग प्राप्त कर चुका है और महल में आनंद मना रहा है।”

तब रेवती ने कहा:

9 “मैं नंदीय की पत्नी थी, घर की मुखिया और पूरे परिवार पर अधिकार रखने वाली। अब मैं अपने पति के महल में आनंद मनाऊँगी। मैं नरक देखना भी नहीं चाहती।”

लेकिन यह कहते हुए, “चाहे तुम चाहो या न चाहो, इच्छाओं का हमसे क्या लेना-देना?” उसे नरक में ले जाकर उन्होंने यह श्लोक कहा:

10 “यह नरक तुम्हारे लिए है, जो बहुत दुष्ट स्वभाव के हो। मनुष्यों के संसार में तुमने कोई पुण्य कर्म नहीं किया।” "जो कंजूस, क्रोधी और दुष्ट स्वभाव का होता है, उसे स्वर्ग जाने वालों का साथ नहीं मिलता।"

ऐसा कहकर दोनों यक्ष वहीं लुप्त हो गए। परन्तु जब उन्होंने देखा कि दो समान नरक रक्षक उन्हें घसीटकर संसवका नामक मलिन नरक में फेंकने ही वाले हैं, तो उन्होंने पूछा:

11 "यह मलिनता और मल क्या है जो प्रकट हो रहा है, यह दुर्गंध क्या है, यह मल क्या है जो यहाँ फैल रहा है?"

12 "यह संसवका है, सौ पाद गहरा, जहाँ हे रेवती, तुम हजारों वर्षों तक जलोगी।"

उन्होंने पूछा:

13 "ऐसा कौन सा कर्म है जो शरीर, वाणी और मन से इतना बुरा किया गया है कि सौ पाद गहरे संसवका में जाना पड़ता है?"

उन्होंने कहा:

14 "तुमने भिक्षुओं, ब्राह्मणों और अन्य यात्रियों को भी झूठे वचनों से धोखा दिया; यही तुम्हारा पाप था।"

15 इसलिए, रेवती, सौ फैदम गहरे संसार को आपने प्राप्त किया है, जहाँ आप हैं,"हजारों वर्षों तक उबलता रहेगा।"

फिर उन्होंने उसे और भी यातनाओं के बारे में बताया:

16 "उन्होंने पहले हाथ काटे, फिर पैर; फिर कान काटे, फिर नाक; और फिर कौवों का एक झुंड इकट्ठा होकर तड़पती हुई को खा गया।"

उसने फिर विलाप करते हुए उनसे विनती की कि उसे मनुष्यों के संसार में वापस ले जाएं:

17 "अच्छा होगा यदि आप मुझे वापस ले जाएं। मैं दान देकर, समभाव का अभ्यास करके, आत्म-संयम और मन को वश में करके बहुत परोपकार करूंगी। जो ऐसा करते हैं वे सुखी होते हैं और बाद में पश्चाताप नहीं करते।"

फिर नरक के पहरेदारों ने कहा:

18 "पहले तुम लापरवाह थीं, अब विलाप करती हो। तुम्हें अपने कर्मों का फल भोगना ही होगा।"

और उसने कहा:

19 "देवलोक से मनुष्यलोक में आकर, जब मुझसे पूछा जाए तो मुझसे यह कहो: 'हिंसा त्यागने वालों को दान दो, वस्त्र, आवास, भोजन और पेय दो,

20 क्योंकि जो कंजूस, क्रोधी और दुष्ट स्वभाव का है, उसे स्वर्ग जाने वालों का साथ नहीं मिलता।'

21 मान लो कि मैं यहाँ से मनुष्यलोक में जन्म लेकर, उदार और नैतिक आचरण का अभ्यास करने वाली बनकर, दान देकर, समभाव का अभ्यास करके, आत्म-संयम और मन को वश में करके बहुत से धार्मिक कार्य करूँगी। 22

और भक्ति भाव से मैं उबड़-खाबड़ इलाकों में उद्यान और सड़कें, तालाब और कुएँ बनवाऊँगी।"

23 शुक्ल पक्ष के चौदहवें, पंद्रहवें और आठवें दिन तथा पखवाड़े के किसी विशेष दिन, जो अष्टांगिक (उपदेशों) से भलीभांति जुड़ा हो,

24 मैं सदा नैतिकता (शील) के अभ्यास द्वारा आत्मसंयमित रहते हुए उपोसथ (पखवाड़े का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन करूंगी, और दान देने में लापरवाही नहीं करूंगी: यह मैं स्वयं सत्यतः देखती हूं।

यह व्याख्याकारों द्वारा कहा गया है:

25 इस प्रकार, वह पीड़ा से विलाप और तड़पती हुई, पैर ऊपर और सिर नीचे करके भयानक नरक में गिर पड़ी।

उसने अंतिम श्लोक कहा:

26 "पहले मैं कंजूस थी, साधुओं और ब्राह्मणों का अपमान करती थी और अपने पति को झूठ बोलकर धोखा देती थी, मैं अत्यंत भयानक नरक में जल रही हूं।"

टीका यह कहकर समाप्त होती है:

अब, चूंकि रेवती के महल में कोई देवता (देवदूत) नहीं है, लेकिन चूंकि यह कथा नंदीय के महल की प्राप्ति से जुड़ी है, देव (देवदूत)-युवक, इसलिए इसे पुरुषों के महलों में शामिल किया गया है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.3

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.3 -------------------------->>>> अगला

5.3 चट्टा का निवास, एक ब्राह्मण युवक (53)
(चट्टामानव-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती में, जेतवन में ठहरे हुए थे। उस समय, एक ब्राह्मण का पुत्र चट्टा, जिसने सेतव्य के एक ब्राह्मण के अधीन अपनी शिक्षा पूरी कर ली थी, अपने माता-पिता से अपने गुरु का शुल्क एक हजार कहपना (कांस्य के सिक्के) लेकर घर लौटा और उसे देने के लिए सेतव्य की ओर चल पड़ा। चोरों को इसकी सूचना मिली और उन्होंने रास्ते में युवक को मारने और लूटने की योजना बनाई। भगवान बुद्ध ने महान करुणा की प्राप्ति से प्रेरित होकर सुबह जल्दी निकलकर उस रास्ते पर एक वृक्ष के नीचे बैठ गए, जिस पर युवक जाने वाला था। युवक के पास से गुजरते हुए, उन्होंने उससे उसका उद्देश्य पूछा और पूछा कि क्या वह तीन शरण (बुद्ध; धम्म-मार्ग; संघ-आदेश) और पांच उपदेश (शील, नैतिकता) जानता है? युवक ने इनकार किया, तो भगवान बुद्ध ने उसे ये उपदेश दिए।

1. "मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ वक्ता, शाक्य ऋषि, भगवान (प्रभु), जिन्होंने अपना कार्य पूर्ण कर लिया है, जो स्वर्ग सिधार चुके हैं, शक्ति और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर, इस शुभचिंतक की शरण में आओ।

2. इस धर्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) की शरण में आओ, जो वासना रहित, इच्छा रहित, दुःख रहित, सरल, अप्रिय नहीं, मधुर, सुस्पष्ट और विवेचित है।

3. और जिसके विषय में उन्होंने कहा है: दो-चार और आठ पवित्र पुरुषों को दान देने का महान फल है, ये पुरुष धर्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) के द्रष्टा हैं। इस भिक्षु संघ की शरण में आओ।"

चोरों ने उन्हें घेर लिया और उनकी हत्या कर दी, और वे चलते-चलते धन लूटते चले गए, जिसे वे अपने हृदय में संजो कर रखते थे। परन्तु उनका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक में हुआ, जहाँ उन्हें तीस योजन का एक महल मिला, जो बीस योजन तक प्रकाश फैलाता था।

सेतावया के लोगों ने शव मिलने पर माता-पिता को सूचना दी और उक्कत्था के लोगों ने गुरु को सूचना दी, और अंत्येष्टि संपन्न हुई। भगवान बुद्ध गए ताकि चट्टा को स्वयं प्रकट होने और अपने कर्मों का खुलासा करने का अवसर मिले। चट्टा ने भी ऐसा ही सोचा और अपने महल के साथ आया। जब लोगों ने आश्चर्य किया: क्या यह कोई देव (देवदूत) है या ब्रह्मा (प्रधान देवदूत)? भगवान बुद्ध ने उस देव-युवक के पुण्य कर्म को स्पष्ट करने के लिए उससे पूछा:

4 “आकाश में सूर्य इस प्रकार नहीं चमकता, न ही चंद्रमा और न ही फुस्स नक्षत्र इस अतुलनीय तेज के समान उज्ज्वल हैं। तुम कौन हो जो देवलोक से पृथ्वी पर आए हो?

5 और बीस योजनों तक फैला हुआ प्रकाश प्रकाशदाता की किरणों को काट देता है। वह सुंदर भवन, जो पूर्णतः शुद्ध, निष्कलंक और पवित्र है, रात को भी दिन के समान प्रकट करता है।

6 अनेक रंगों के कमलों और कमलों से सुशोभित, विभिन्न प्रकार से अलंकृत, धूल रहित, बेदाग सोने के जाल से ढका हुआ, वह आकाश में सूर्य के समान चमकता है।

7 लाल और पीले वस्त्रों में लिपटे, अगरबत्ती, पियांगु और चंदन की सुगंध से महकते, सुनहरे रंग से दमकते हुए, वे आकाश के तारों की तरह इस महल को भर देते हैं।

8 यहाँ विभिन्न रूपों वाले पुरुष और स्त्रियाँ हैं, यहाँ आनंदित लोग फूलों और आभूषणों से सजे हुए हैं, हवा से निकलती सुगंध बिखेरते हुए, विभिन्न प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित और सोने से ढके हुए हैं।

9 यह किस संयम का परिणाम है? किस कर्म के फल से तुम यहाँ आए हो, और इस महल में कैसे पहुँचे? पूछे जाने पर, कृपया चरण-दर-चरण बताएँ कि यह कैसे हुआ।

देव (देवदूत)-युवक ने इन श्लोकों में समझाया:

10 "चूंकि गुरु (बुद्ध) ने मार्ग में इस ब्राह्मण युवक को देखा और करुणापूर्वक उसे उपदेश दिया, और चूंकि चट्टा ने आपसे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुना, इसलिए परम रत्न ने कहा 'मैं यह करूँगा,'

11 मैंने महिमावान विजेता की शरण ली, और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के लिए भी, उसी प्रकार भिक्षु संघ में शरण ली। पहले मैंने कहा 'नहीं,' पूज्यवर: उसके बाद मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया-

12 किसी भी प्रकार से अपवित्र होकर किसी भी सजीव प्राणी को पीड़ा न पहुँचाएँ, क्योंकि बुद्धिमान लोग सजीव प्राणियों के प्रति संयम की कमी की प्रशंसा नहीं करते। पहले मैंने कहा 'नहीं,' पूज्यवर; उसके बाद मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया।

13 और जो दूसरे व्यक्ति की रक्षा करता है उसे न लें; यह न सोचें कि जो नहीं दिया गया है उसे ले लिया जाना चाहिए। पहले मैंने कहा 'नहीं,' पूज्यवर; उसके बाद मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया।

14 और दूसरे की पत्नियों के पास जाना, दूसरे पुरुष द्वारा संरक्षित महिलाओं के पास जाना—यह उनारिय्य (नीच) है। पहले मैंने कहा, "नहीं," आदरणीय महोदय; बाद में मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया।

15 और झूठ मत बोलो, क्योंकि बुद्धिमान लोग झूठ की प्रशंसा नहीं करते। पहले मैंने कहा, "नहीं," आदरणीय महोदय; बाद में मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया।

16 और उस मादक पेय से पूरी तरह दूर रहो जिससे मनुष्य की चेतना क्षीण हो जाती है। पहले मैंने कहा, "नहीं," आदरणीय महोदय; बाद में मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया।

17 वास्तव में, मैं यहाँ पाँचों शिक्षाओं का पालन करते हुए, तथागत (बुद्ध) के धर्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) पर चलते हुए, दो गाँवों की सीमाओं के बीच एक रास्ते में चोरों के बीच आ गया। उन्होंने मेरी संपत्ति के लिए मुझे वहाँ मार डाला।

18 इस हद तक ही मुझे धर्म याद है; इससे आगे मेरे लिए कोई अन्य (धर्म) नहीं है। अच्छे आचरण के कारण, कर्मों के फलस्वरूप मैं तैंतीस (स्वर्गों) में अपनी इच्छा से आनंदित हुआ।

19 देखो, धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के अनुसार चलने और क्षण भर के लिए संयम बरतने का क्या परिणाम होता है, जबकि कम सुखों की लालसा रखने वाले अनेक लोग मुझे महिमा में चमकते हुए देख सकते हैं।

20 देखो, कैसे इस संक्षिप्त उपदेश के माध्यम से मैं एक अच्छे गंतव्य तक पहुँच गया और सुख प्राप्त कर लिया; इसलिए मेरा मानना है कि जो लोग निरंतर धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुनते हैं, वे अवश्य ही अमरता, यानी सुरक्षित जीवन को प्राप्त करेंगे।

21 तथागत (बुद्ध) के धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) में थोड़ा सा भी किया गया कार्य महान फलदायी, व्यापक लाभ देने वाला होता है। देखो, कैसे चत्त, पुण्य कर्मों के फल से पृथ्वी को सूर्य के समान प्रकाशित करता है।

22 यह कौन सा धर्म है जिसे हम कर सकते हैं? - इसलिए कुछ लोग आपस में परामर्श करते हैं, यदि हमें फिर से मनुष्य का दर्जा प्राप्त हो जाए तो हमें जीवन भर नैतिकता (शील) का अभ्यास करते हुए जीना चाहिए।

23 और महान सेवा और करुणा के स्वामी गुरु (बुद्ध) सुबह-सुबह मेरे पास आए जब मैं इस विकट स्थिति में था। तब मैंने उनसे प्रार्थना की जो अपने नाम के प्रति सच्चे हैं, कि वे मुझ पर फिर से दया करें ताकि मैं धम्म (शाश्वत सत्य के मार्ग) को सुन सकूँ।

24 जो लोग यहाँ इंद्रिय सुखों से आसक्ति और अस्तित्व के प्रति अंतर्निहित आसक्ति तथा भ्रम से मुक्त हो जाते हैं, वे फिर कभी गर्भ-शय्या (पुनर्जन्म) पर नहीं आते, क्योंकि शीतल होकर वे अंतिम निर्वाण को प्राप्त कर लेते हैं।

अतः जब गुरु (बुद्ध) ने सभा को संबोधित किया, तो देव-युवक ने आर्य (महान) धारा में अपनी स्थापना की घोषणा करते हुए भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और अपने माता-पिता से विदा लेकर उस देव-लोक में लौट गया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.4

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.4 -------------------------->>>> अगला

5.4 केकड़े का सूप देने वाले का महल (54)
(कक्कटकरसदयाक-विमान)

भगवान (बुद्ध) राजगृह में, बांस के जंगल में ठहरे हुए थे। उस समय एक भिक्षु जो अंतर्मन का अभ्यास कर रहा था, कान में तेज दर्द के कारण उससे विमुख हो गया। उसने भगवान (बुद्ध) को बताया कि चिकित्सक की दवा से उसे कोई लाभ नहीं हुआ। भगवान (बुद्ध) यह जानते हुए कि केकड़े का सूप रोगनाशक है, ने उसे मगध के मैदान में भिक्षा मांगने के लिए कहा। वह वहाँ गया और एक खेत के रखवाले की झोपड़ी के द्वार पर भिक्षा मांगने लगा। उस व्यक्ति ने केकड़े का सूप पकाकर उसे अपने पास बैठाया और थोड़ा सा सूप दिया। भिक्षु ने

सूप का स्वाद चखते ही ऐसा महसूस किया मानो सौ घड़े पानी से स्नान कर लिया हो। उचित भोजन से शांत होकर उसने अपना ध्यान (पुनः) अंतर्मन की ओर लगाया और भोजन समाप्त होने से पहले ही अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) बन गया। खेत के रखवाले से यह कहते हुए, "हे अनुयायी, इस पुण्य के फल से तुम शरीर और मन से अस्वस्थ हो जाओगे," उन्होंने आशीर्वाद दिया और चले गए। बाद में जब खेत के रखवाले की मृत्यु हुई, तो उनका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक में हुआ, जहाँ वे बारह योजन वाले रत्नजड़ित और सात सौ शिखर वाले कक्षों से सजे एक स्वर्ण महल में, बेरिल से बने एक कमरे में हुए। द्वार पर मोतियों की माला से एक स्वर्ण केकड़ा लटका हुआ था। और आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने वहाँ जाकर यह देखा और पूछा:

1 "यह भव्य महल रत्नजड़ित स्तंभों से सुशोभित है, चारों ओर बारह योजन हैं, सात सौ शानदार शिखर वाले कक्ष हैं और सुंदर बेरिल के खंभे चमकते धातु से ढके हुए हैं।

2 आप वहाँ निवास करते हैं, खाते-पीते हैं और देवदूतों के समान वीणा मधुर संगीत बजाते हैं। यहाँ देवदूतों के समान सुगंध, पाँच प्रकार के इंद्रिय सुख हैं और सोने से सजी स्त्रियाँ नृत्य करती हैं।

3 आपकी ऐसी सुंदरता किस कारण है? आप यहाँ किस कारण समृद्ध हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सभी सुख किस कारण उत्पन्न होते हैं?

4 हे महान महिमावान देवदूत, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

5 मोग्गलाना द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर वह देव-युवक प्रसन्न हुआ और पूछे जाने पर उसने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

6 "द्वार पर सोने से बना एक केकड़ा स्मृति चिन्ह के रूप में स्थापित है, और वह अपने दस पंजों से चमकता है।

7 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता चारों ओर प्रकाशमान करती है।" (जैसा कि अध्याय 16, 7 आदि में है)।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.5

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.5 --------------------------->>>> अगला

5.5 द्वारपाल का महल (55)
(द्वारपाल-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में, बाँस के वन में ठहरे हुए थे। उस समय एक गृहस्थ अनुयायी ने भिक्षु संघ के लिए चार निरंतर भोजों की शुरुआत की। लेकिन चोरों के डर से वह आमतौर पर अपने घर का दरवाजा बंद रखता था क्योंकि उसका घर शहर की सबसे बाहरी सीमा पर स्थित था। इसलिए भोज के लिए आने वाले भिक्षुओं को कभी-कभी भूखे ही लौटना पड़ता था। अपनी पत्नी से यह जानकर उसने आने वाले भिक्षुओं का स्वागत करने और उनकी सेवा करने के लिए एक द्वारपाल नियुक्त किया। जब दाता की मृत्यु हुई तो उसका पुनर्जन्म यमों के बीच हुआ, लेकिन जब द्वारपाल की मृत्यु हुई तो उसका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्गों) के बीच बारह योजन वाले स्वर्ण महल में हुआ, जैसा कि पिछली कथा में बताया गया है। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना के इसी प्रकार के प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा:

1-5 (जैसा कि 54. 1-5 में है)

6 "मेरा जीवनकाल एक हजार देव-जैसे वर्षों का है; (मेरा पुण्य कर्म) उच्चारित वचन और चिंतन द्वारा अर्पित प्रणाम में निहित है। इतने ही समय तक पुण्य कर्म करने वाला व्यक्ति देव-जैसे इंद्रिय सुखों से परिपूर्ण रहेगा।

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है... और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।" (जैसा कि 1.6,7 आदि में है)
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.6

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.6 --------------------------->>>> अगला

5.6 पहला आवश्यक भवन (56)
(पथम-करणीय-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध) जेतवन के श्रावस्ती में ठहरे हुए थे। अचिरवती नदी में स्नान करके लौट रहे एक गृहस्थ अनुयायी ने भगवान (भगवान बुद्ध) से मुलाकात की और उन्हें अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया तथा उनका आदरपूर्वक स्वागत किया। शेष भाग पहले के समान है। देव (देवदूत) का उत्तर इस प्रकार है:

1-5 (जैसा कि 54. 1-5 में है)

6 "पुण्य कर्म विवेकशील बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा किए जाने चाहिए, जिनमें सही मार्ग पर चलने वाले प्रबुद्धों को दिया गया वरदान बहुत फलदायी होता है।

7 वास्तव में बुद्ध मेरे कल्याण के लिए वन से ग्राम में आए। इसी कारण, भक्त मन से, मैं तैंतीसवें स्वर्ग में पहुंचा।

8 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।" (जैसा कि 1, 6, 7 आदि में है)

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.7

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.7 --------------------------->>>> अगला

5.7 द्वितीय विधि-युक्त भवन (57)
(दुतिया-करणीय-विमान)

यह छठे के समान है, केवल इतना ही कि वहाँ भोजन भगवान (भगवान बुद्ध) को दिया गया था, यहाँ एक वृद्ध को।

1-5 (जैसा कि 54. 1-5 में है)

6 "पुण्य कर्म विवेकशील बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा किए जाने चाहिए, जिसमें उचित मार्ग पर चलने वाले भिक्षुओं को दिया गया दान बड़ा फलदायी (लाभदायी) होता है।

7 वास्तव में एक भिक्षु मेरे कल्याण के लिए वन से गाँव आया। उसमें, भक्त मन से, मैं तैंतीसवें (स्वर्ग) में आ गया।

8 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।" (जैसा कि 1.6,7, आदि में है)
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.8

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.8 --------------------------->>>> अगला

5.8 प्रथम सुई भवन (58)
(पथम-सुचि-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में बांस के वन में ठहरे हुए थे। उस समय आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु सारिपुत्त के लिए वस्त्र बनवाने का कार्य था और सुई की आवश्यकता थी। भिक्षा मांगने के लिए एक लोहार के घर जाकर उन्होंने पूछा कि उन्हें क्या चाहिए, और अपनी आवश्यकता बताई। लोहार ने श्रद्धा भाव से उन्हें दो सुइयाँ भेंट कीं और कहा कि यदि और आवश्यकता हो तो बताएँ। लोहार की मृत्यु के बाद उसका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्ग) में हुआ और आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने इस देव-युवक से प्रश्न किया:

1-5 (जैसा कि 54. 1-5 में है)

6 "जो कुछ दिया जाता है, (केवल उसका फल/परिणाम) उसके समान नहीं होता। जो दिया जाना चाहिए, वही श्रेष्ठ है। एक सुई दी गई, मेरे लिए सुई ही श्रेष्ठ थी।

7 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।" (जैसा कि 1.6,7, आदि में है)
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.9

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.9 --------------------------->>>> अगला

5.9 दूसरा सुई-भवन (59)
(दुतिया-सुचि-विमान)

भगवान (बुद्ध) राजगृह में, बाँस के वन में ठहरे हुए थे। एक दर्जी उस वन को देखने गया, वहाँ उसने एक भिक्षु को बाँस के वन में बनी सुई से वस्त्र सिलते देखा और उसे अपनी सुई-पेटी में से कुछ सुइयाँ दे दीं। तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लेने के बाद दर्जी से पूछा गया प्रश्न पहले जैसा ही था।

1-5 (जैसा कि 54. 1-5 में है)

6 "पिछले जन्म में जब मैं मनुष्य जगत में मनुष्यों के बीच मनुष्य के रूप में जन्मा, तो मैंने एक निर्मल, शांत और विक्षिप्त भिक्षु को देखा, जिसे मैंने प्रसन्नतापूर्वक अपने हाथों से एक सुई दी।

7 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।" (जैसा कि 1.6,7 आदि में है)
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.10

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.10 --------------------------->>>> अगला

5.10 प्रथम हाथी महल (60)
(पथम-नाग-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती में, जेतवन में ठहरे हुए थे। तभी आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना, जो तैंतीसवें लोक में देव-यात्रा पर थे, ने एक विशाल श्वेत हाथी पर सवार देव-युवक को अपने विशाल दल के साथ हवा में जाते हुए देखा और उनकी ओर बढ़े। देव-युवक अवतरित हुए और उन्होंने मोग्गलाना को प्रणाम किया। वृद्ध ने उनसे उनके कर्म के बारे में पूछा:

1 "आप एक ऐसे हाथी पर सवार हैं जिसका शरीर चमकीला सफेद है, जो शुद्ध नस्ल का, बलवान और तेज है, और जो सुंदर ढंग से सुसज्जित है। आप आकाश में मध्य में से होकर यहाँ आए हैं।

2 हाथी के दोनों दांतों पर क्रिस्टल जैसे साफ, खिले हुए कमल के तालाब बने हैं; कमलों के बीच संगीत की धुनें फूट रही हैं और ये मनमोहक नृत्य कर रहे हैं।

3 आप महान महिमावान हैं और आपने देव-देववक जैसी मानसिक शक्ति प्राप्त की है। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी यह तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?

4 देव-युवक, मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न हुए और जब उनसे प्रश्न पूछा गया तो उन्होंने बताया कि यह किस कर्म का फल है।"

5 "मैंने अपने हाथों से प्रसन्नतापूर्वक आठ गिरे हुए फूल महान ऋषि कश्यप (पूर्व बुद्ध) के स्तूप (पवित्र स्मारक) पर अर्पित किए।

6 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.11

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.11 -------------------------->>>> अगला

5.11 दूसरा हाथी-महल (61)
(दुतिया-नाग-विमान)

भगवान (बुद्ध) राजगृह में, बाँस के वन में ठहरे हुए थे। उस समय एक विश्वासी गृहस्थ अनुयायी, जो नियमों (शील, नैतिकता) के अनुसार जीवन व्यतीत करता था, उपोसथ (पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) करता था, भिक्षुओं के संघ को दान देता था और मठ में धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सुनने के लिए दान लेकर उपस्थित रहता था, वहाँ से देह त्याग कर तैंतीस (स्वर्ग) में आसीन हुआ। एक विशाल श्वेत हाथी उसकी सेवा में था, और अपने अनेक सेवकों के साथ वह समय-समय पर एक उद्यान में क्रीड़ा करने जाता था। एक दिन कृतज्ञता प्रकट करने के लिए प्रेरित होकर, वह आधी रात को अपने हाथी पर सवार होकर देवलोक से बाँस के वन में आया और वहाँ भगवान (बुद्ध) के समक्ष भक्ति भाव से खड़ा हो गया। भगवान बुद्ध के पास खड़े आदरणीय भिक्षु वंगीसा ने, भगवान बुद्ध की अनुमति से, उनसे प्रश्न किया:

1 "आप एक विशाल श्वेत हाथी पर सवार हैं, जो हाथी की श्रेष्ठता का प्रतीक है, और आप स्त्री-मंडली के साथ वनों में विचरण करते हैं, जिससे सभी दिशाएँ प्रकाशमान तारे के समान चमक उठती हैं।

2 आपकी ऐसी सुंदरता का कारण क्या है? आप यहाँ किस कारण से समृद्ध होते हैं, और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सुख किस कारण उत्पन्न होते हैं?

3 हे महान महिमावान देव, मैं आपसे पूछता हूँ, आपने मनुष्य के रूप में जन्म लेकर कौन सा पुण्य कर्म किया था? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा का कारण क्या है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को कैसे प्रकाशित करती है?"

4 वंगीसा द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देव-युवक ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

5 "जब मैं मनुष्यों के बीच एक मनुष्य के रूप में पैदा हुआ, तो मैं उस दिव्यदर्शी का साधारण अनुयायी था। मैंने सजीव प्राणियों पर आक्रमण करने से परहेज किया, मैंने संसार में निषिद्ध वस्तुओं का त्याग किया।

6 मैं मादक पेय नहीं पीता था, न ही झूठ बोलता था, और अपनी पत्नी से संतुष्ट था। आस्था से परिपूर्ण मन से, मैंने आदरपूर्वक भोजन और पेय दिया, दान में उदारतापूर्वक योगदान दिया।

7 इसी कारण मैं ऐसा हूँ... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.12

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- II.5.12 -------------------------->>>> अगला

5.12 तीसरा हाथी महल (62)
(तथ्य-नाग-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध) राजगृह में, बांस के जंगल में ठहरे हुए थे। तभी तीन अरिहंत (पूर्णतः प्रबुद्ध) वर्षा ऋतु के लिए एक गाँव में आए, फिर भगवान (भगवान बुद्ध) को प्रणाम करने के लिए राजगृह गए। एक भ्रामक विचार वाले ब्राह्मण के गन्ने के बागान से गुजरते हुए उन्होंने बागान के रखवाले से पूछा, "क्या हम आज राजगृह पहुँच सकते हैं?" "नहीं महोदय, यह आधा योजन और आगे है; आप यहीं ठहरिए और कल जाइए।" "क्या यहाँ कोई जगह है जहाँ हम ठहर सकें?" "नहीं, लेकिन मैं तुम्हें एक जगह के बारे में बताऊंगा।" उसने गन्ने, लकड़ियों आदि से झोपड़ियाँ बनाईं, उन्हें चावल और गन्ने का रस दिया, और भोजन के बाद उन्हें एक-एक गन्ना देकर विदा किया, यह सोचकर कि यह उपज में से उसका हिस्सा है, और अपने कल्याण की आशा और प्रसन्नता के साथ लौट आया। लेकिन उसके गुरु ने भिक्षुओं से मुलाकात की और उनसे पूछा कि उन्हें गन्ने कहाँ से मिले, और यह सुनकर वह क्रोधित हो गया और क्रोध से उबलता हुआ वापस भागा और अपने रखवाले को लाठी से मारा, जिससे उसकी एक ही वार में मृत्यु हो गई। उसके इस कर्म के फल स्वरूप, वह सुधम्मदेवों के हॉल में पुनर्जन्म लेकर एक विशाल सफेद हाथी का स्वामी बना। उनके माता-पिता और रिश्तेदार उनके अंतिम संस्कार में शोक मना रहे थे, लेकिन वे उनके बीच भव्य रूप से सवार होकर आए, और एक सहज बुद्धि वाले व्यक्ति ने उनसे उनके द्वारा किए गए पुण्य कर्म के बारे में पूछा:

1 "अब कौन देवदूत के समान वाहन, पूर्णतः सफेद हाथी पर, मधुर वाद्य संगीत की ध्वनि के साथ आकाश में सम्मानित है?

2 अब, क्या आप देवता हैं, स्वर्ग के संगीतकार हैं या सक्क (इंद्र, देवदूतों के राजा), उदार दाता हैं? अब आपको जानकर, हम आपसे पूछते हैं कि हम आपको कैसे जानें?" उन्होंने इस बात को स्पष्ट किया:

3 "मैं न तो देव हूँ, न ही स्वर्ग का संगीतकार, और न ही मैं सक्क (इंद्र, देवदूतों के राजा), उदार दाता हूँ। मैं सुधम्म-देवों में से एक हूँ।"

फिर उस व्यक्ति ने पूछा:

4 "हम सुधम्म-देव (देवदूत), आदरपूर्वक हाथ जोड़कर आपसे पूछते हैं, आपने मनुष्यों के बीच ऐसा कौन सा कर्म किया है कि आप सुधम्म में प्रकट हुए हैं?"

उन्होंने यह श्लोक कहा:

5 "जो गन्ने की झोपड़ी, घास की झोपड़ी, वस्त्रों की झोपड़ी देता है, वह इन तीनों में से एक देता है, वह सुधम्म में उठता है।"

इस प्रकार अपने माता-पिता को सांत्वना देकर वह देवलोक लौट गया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.13

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.13 --------------------------->>>> अगला

5.13 लघु रथ महल (63)
(कुलरथ-विमान)

भगवान बुद्ध के अंतिम निर्वाण के बाद उनके अवशेषों को वितरित किया गया, और महान महा-कस्सपा भिक्षुओं के मार्गदर्शन में धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का पाठ करने के लिए भिक्षुओं का चयन किया गया; वर्षा ऋतु में आने वाले शिष्य, अपने-अपने साथियों के साथ, अनुकूल जनमानस का ध्यान रखते हुए विभिन्न स्थानों पर निवास कर रहे थे। और आदरणीय महा-कच्चना एक सीमावर्ती क्षेत्र के वन क्षेत्र में रह रहे थे। उस समय अस्सका, पोटा नगर में अस्सका राज्य पर शासन कर रहा था। अब सुजाता, जो उसकी प्रधान रानी से पुत्र था, अपने पिता द्वारा सबसे छोटी रानी के आग्रह पर वनवास में चला गया था। कस्सपा बुद्ध के समय में, यद्यपि वह एक भिक्षु था, तब उसका सांसारिक रूप से निधन हो गया था और अब उसका पुनर्जन्म हुआ और उसका नाम सुजाता रखा गया। जब उनकी माता का अल्पकाल में निधन हो गया, तो उनके पिता की नई प्रधान रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। प्रसन्न राजा ने अपनी पत्नी को वरदान देने का प्रस्ताव रखा; जब सुजाता सोलह वर्ष की थीं, तब उन्होंने उनसे वरदान मांगते हुए अपने पुत्र को उत्तराधिकारी बनाने का अनुरोध किया। राजा ने इनकार कर दिया, क्योंकि उनका सबसे बड़ा पुत्र ही उत्तराधिकारी था। सुजाता उन्हें अपना वचन निभाने के लिए लगातार आग्रह करती रहीं, अंततः राजा ने मजबूरी में आँसुओं के साथ सुजाता को यह बात बता दी। अपने पिता के दुःख से व्याकुल होकर युवक ने वनवास जाने की अनुमति मांगी। राजा ने उनके लिए एक नया नगर बनवाने का प्रस्ताव रखा, परन्तु उन्होंने न तो पड़ोसी राजकुमारों के पास भेजे जाने पर सहमति दी। राजा ने उन्हें गले लगाया और इस शर्त पर चले गए कि जब वे अनाथ हो जाएंगे तो राज्य का कार्यभार संभालने के लिए लौट आएंगे। जंगल में वनपालों के साथ रहते हुए, वह एक दिन हिरण का शिकार करने निकला और एक हिरण का पीछा तब तक करता रहा जब तक कि वह वरिष्ठ भिक्षु महा-कच्चना की पत्तों की झोपड़ी के पास गायब नहीं हो गया। महा-कच्चना ने उससे पूछा:

1 "तुम मजबूत लकड़ी से बने एक दृढ़ धनुष पर झुके हुए हो। अब तुम योद्धा-कुलीन हो, राजा के पुत्र हो या जंगल में भटकने वाले शिकारी?"

तब उसने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा:

2 "मैं, आदरणीय महोदय, अस्सका के अधिपति का पुत्र, जंगल में भटक रहा हूँ। मेरा नाम, भिक्षु, सुआजता है, इसी नाम से मैं जाना जाता हूँ।"

वरिष्ठ भिक्षु ने मैत्रीपूर्ण अभिवादन करते हुए कहा:

4 "आपका स्वागत है, महान पुण्यात्मा, आपका स्वागत है। यहाँ पानी लो ताकि तुम अपने पैर धो सको।

5 यह पीने का पानी भी ठंडा है, पहाड़ों की गुफाओं से लाया गया है।" "इसे पीकर, राजकुमार, बिछी हुई घास पर बैठ जाइए।"

तब राजकुमार ने वृहत्तर के मैत्रीपूर्ण अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा:

6 "हे महान ऋषि, आपके वचन सचमुच मधुर हैं। आप सुविचारित उद्देश्य से मधुर और सार्थक बातें कहते हैं।

7 वन में निवास करने वाले आपको क्या प्रसन्न करता है? हे ऋषियों के श्रेष्ठ, पूछे जाने पर बोलिए। आपकी वाणी सुनकर मैं धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के उद्देश्य का अभ्यास करूंगा।"

अब वृहत्तर ने अपने लिए भी उपयुक्त उचित अभ्यास बताते हुए कहा:

8 "हे राजकुमार, सभी सजीव प्राणियों को हानि न पहुँचाना और चोरी से बचना हमें प्रसन्न करता है।"व्यभिचार (असंयम) और शराब का सेवन।

9. संयम और समभाव का अभ्यास, ज्ञान, कृतज्ञता, यहाँ प्रशंसा के योग्य, ये सब बातें प्रशंसा के योग्य हैं।

10. हे राजकुमार, जान लो कि पाँच महीने बाद तुम मृत्यु के समक्ष होगे - अपने आप को पूरी तरह मुक्त कर लो।

तब युवक ने अपनी मुक्ति के साधन के बारे में पूछते हुए कहा:

11. "मुझे किस देश में जाना चाहिए, और मुझे मनुष्य का कौन सा कार्य करना चाहिए, या किस ज्ञान से मैं अमर हो सकता हूँ?"

तब वृषभ ने उसे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) सिखाने के लिए ये श्लोक कहे:

12. "हे राजकुमार, ऐसा कोई क्षेत्र, ऐसा कोई कार्य या ज्ञान नहीं है, जिसके द्वारा मनुष्य अमर हो सके।

13. बहुत धनवान, बहुत संपत्ति वाले, यहाँ तक कि राज्य के स्वामी योद्धा भी - धन और फसलों से भरपूर ये भी अमर नहीं होते।"

14 शायद आपने अंधकवेनु के उन पुत्रों के बारे में सुना होगा जो शक्तिशाली, बलवान और आक्रमण में प्रखर थे—यद्यपि ये भी, जीवन-काल के विनाश को प्राप्त करके, विलीन होकर, सदा-सर्वदा अमर हो जाते हैं।

15 योद्धा-कुलीन, ब्राह्मण, ग्रामीण, दास, नीच जाति के सफाईकर्मी—यहाँ तक कि ये और अन्य भी जन्म से अमर नहीं होते।

16 ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) द्वारा सृजित छह विद्याओं के मंत्रों का जाप करने वाले भी अपने ज्ञान से अमर नहीं होते।

17 और यहाँ तक कि वे ऋषि-मुनि, शांत और संयमी तपस्वी भी उचित समय पर अपने शरीर का त्याग कर देते हैं।

18 यहां तक कि अरिहंत (पूर्ण आध्यात्मिक जागृति प्राप्त भिक्षु), जिनका मन विकसित हो चुका हो, जिन्होंने अपने कर्तव्यों का पालन किया हो, और जो सांसारिक इच्छाओं से मुक्त हों, वे भी अपने अच्छे और बुरे कर्मों के पूर्ण नाश पर इस शरीर को त्याग देते हैं।

अब युवक ने अपने लिए क्या करना चाहिए, इस विषय पर बोलते हुए कहा:

19 "हे महान ऋषि, आपके वचन उत्तम हैं, उद्देश्यपूर्ण हैं। आपके अच्छे वचन से मुझे शांति मिली है। आप ही मेरी शरण बनें।"

तब वृहत्तर ने उसे उपदेश देते हुए यह वचन कहा:

20 "मेरी शरण में मत आओ; केवल शाक्यों के पुत्र, हे महान, जिनकी शरण में मैं गया हूँ, उनकी शरण में आओ।"

तब युवक ने कहा:

21 "हे गुरु, आपके गुरु किस देश में हैं?" मैं भी उस विजेता, उस अद्वितीय व्यक्ति से मिलने जाऊँगा।"

वृहत्तर ने कहा:

22 "पूर्वी देश में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) वंश का जो व्यक्ति वहाँ श्रेष्ठ पुरुष था, वह पूर्णतः इसलोक में चला गया था।"

जब राजकुमार ने वृहत्तर से धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश सुना, तो वह शरण (बुद्ध; धम्म-मार्ग; संघ-व्यवस्था) और नैतिकता (शील) के अभ्यास में स्थापित हो गया। इस प्रकार कहा गया:

23 "हे महोदय, यदि आपके गुरु (बुद्ध) जीवित होते, तो मैं उनकी सेवा करने के लिए हजारों योजन की यात्रा करता।

24 परन्तु हे महोदय, आपके गुरु (बुद्ध) पूर्णतः इसलोक में चले गए हैं,मैं उस महान व्यक्ति की शरण में जाता हूँ जो पूरी तरह से बेहोश हो गया था।

25 मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ, और सर्वोच्च धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) की ओर भी, और मनुष्यों के देव (देवदूत) के भिक्षु संघ की शरण में जाता हूँ।

26 मैं तुरंत प्राणियों की हत्या से परहेज़ करता हूँ, संसार में जो कुछ भी नहीं दिया गया है, उसका त्याग करता हूँ, मादक पेय नहीं पीता, झूठ नहीं बोलता और अपनी पत्नी से संतुष्ट हूँ।

वृहत्तर ने इस प्रकार कहा, "अब अपने पिता के पास जाओ, तुम्हारा जीवनकाल अल्प है, तुम केवल पाँच महीनों में मर जाओगे, पुण्य कर्म करो।" राजकुमार ने ऐसा ही किया और चार महीने बाद उसकी मृत्यु हो गई और वह तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में पुनर्जन्म लिया। उसके पुण्य के फलस्वरूप सात प्रकार के रत्नों से सुशोभित, सात योजन लंबा एक रथ प्रकट हुआ। उसने मृतक का अंतिम संस्कार किया और भिक्षुओं के संघ को एक बड़ा दान दिया, उसने चैत्य (मंदिर) को प्रणाम किया। वृहत्तर यहाँ पहुँचे। देव-युवक अपने देव-समान रथ में आया, वृहत्तर को प्रणाम किया और उनके पिता से अभिवादन का आदान-प्रदान किया। वृहत्तर ने उससे इन श्लोकों में पूछा:

27 "हजार किरणों वाले तेजस्वी सूर्य के समान, अपने मार्ग में यह आकाश के क्षेत्रों को प्रकाशित करता है, ठीक उसी प्रकार आपका यह शक्तिशाली रथ सात योजन तक चारों ओर फैला हुआ है।

28 यह स्वर्ण प्लेटों से ढका हुआ है, इसका शरीर रत्नों और मोतियों से जड़ा हुआ है, इस पर सोने और चांदी की नक्काशी है, और बेरिल से सुंदर नक्काशी की गई है, जो इसे और भी आकर्षक बनाती है।

29 बेरिल की नक्काशी से सजा हुआ इसका अग्रभाग और माणिक से जड़ा हुआ इसका जुआ, और सोने और चांदी के अलंकरणों से सजे ये घोड़े, जो कल्पना के समान तीव्र हैं, इसे और भी सुंदर बनाते हैं।

30 आप इस स्वर्ण रथ में सभी से श्रेष्ठ विराजमान हैं, जैसे हजार घोड़ों से जुते रथ में विराजमान देवदूत। हे यश और निपुणता के स्वामी, मैं आपसे पूछता हूँ, आपने यह वैभव किस प्रकार प्राप्त किया है?

इस प्रकार बड़े गुरु द्वारा पूछे जाने पर, देवदूत-युवक ने इन श्लोकों में उत्तर दिया:

31 "जब मैं आदरणीय महोदय, एक राजा का पुत्र था, तब मेरा नाम सुजाता था। और आपने मुझ पर दया करके मुझे आत्मसंयम में स्थापित किया।"

32 और यह जानकर कि मेरा जीवनकाल समाप्त हो रहा है, आपने मुझे गुरु (बुद्ध) का एक अवशेष देते हुए कहा: "सुजाता, इसका आदर करना, यह तुम्हारे कल्याण के लिए होगा।"

33 जब मैंने उचित कर्म करते हुए, इत्र और मालाओं से आदर किया और अपने मानव शरीर को त्यागकर नंदनवन (स्वर्ग) में अवतरित हुआ।

34 और उस रमणीय नंदनवन (स्वर्ग) में, जो अनेक पक्षियों का निवास स्थान है, मैं अप्सराओं के नृत्य और गीत के साथ आनंदित होता हूँ।

इस प्रकार देव-युवक ने वृहद को प्रणाम करके और अपने पिता से विदा लेकर रथ पर सवार होकर देवलोक लौट गया। वृहद ने सभा के समय धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के प्रचारकों को उनके बीच हुई पूरी बातचीत सुनाई।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु5.14

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.5.14 ------------------------->>>> अगला

5.14 महान रथ महल (64)
(महारथ-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती में, जेतवन में ठहरे हुए थे। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) की यात्रा करते हुए एक देव-युवक, गोपाल को अपने महल से निकलकर भव्य रथ पर सवार होकर आनंद उद्यान (उद्यान) में क्रीड़ा करने जाते हुए देखा। देव-युवक ने वरिष्ठ भिक्षु को देखकर रथ से उतरकर उनके सामने अपने हाथ जोड़कर सिर तक उठा लिए। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे पूछा:

1 "इस विविध रंगों से रंगे सुंदर रथ में, जिसमें हजार घोड़े जुते हुए हैं, आनंद के लोकों की ओर जाते हुए, आप उदार दाता, प्राणियों के स्वामी वासव की तरह चमकते हैं।

2 आपके रथ की रेलिंग सोने की बनी हैं, सहायक तख्तों और कंधों से सुसज्जित हैं, कुशल कारीगरों द्वारा तैयार किए गए खंभों से सुसज्जित हैं, यह पंद्रहवें दिन चंद्रमा की तरह चमकता है।

3 यह रथ, सोने के जाल से ढका हुआ, अनेक रत्नों से जड़ा हुआ, मधुर ध्वनि उत्पन्न करता हुआ और जगमगाता हुआ, कई हाथ से चलने वाले चक्कों से जगमगाता है।

4 वे धुरी भी कल्पना से गढ़ी गई हैं, रथ के पहिए जिनके केंद्र और ये धुरी भी सौ धारियों से रंगे हुए हैं, सौ गुना चमकती बिजली की तरह चमकते हैं।

5 यह रथ अनेक चित्रों से ढका हुआ है, और इसका चौड़ा किनारा हजार गुना तेज से जगमगाता है। इनसे एक मधुर ध्वनि सुनाई देती है जैसे पंचांग संगीत बज रहा हो।

6 इसके अग्र भाग को अलंकृत किया गया है। चंद्रमा के आकार के रत्नों से सुसज्जित, सदा शुद्ध और चमकीला; प्रचुर मात्रा में सुनहरी किरणों से युक्त, यह बेरिल की किरणों के साथ बारी-बारी से चमकता है।

7 और ये घोड़े, चंद्रमा के आकार के रत्नों से सजे हुए, ऊँची गर्दन वाले, ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) के समान तीव्र, ऊँचे और विशाल, बलवान और तेज, आपकी इच्छा जानकर गति करते हैं।

8 और ये, अपने चारों अंगों में सामंजस्य के साथ, आपकी इच्छा जानकर गति करते हैं। वे उत्तम साज-सामान को खड़खड़ाते हुए छलांग लगाते हैं। इनसे एक मधुर ध्वनि सुनाई देती है जैसे पंचांग संगीत बज रहा हो।

9 आकाश में एक साथ उछलते और गति करते हुए वे उत्तम साज-सामान को खड़खड़ाते हुए छलांग लगाते हैं। इनसे एक मधुर ध्वनि सुनाई देती है जैसे पंचांग संगीत बज रहा हो।

10 रथ और साज-सामान की ध्वनि, खुरों की गड़गड़ाहट और घोड़ों की हिनहिनाहट, इनसे एक मधुर ध्वनि सुनाई देती है जैसे किसी रमणीय उपवन में गंधर्व संगीत बज रहा हो।

11 रथ में हिरण जैसी शर्मीली आँखों वाले वे (सेवक) घनी पलकों के साथ मुस्कुराते हुए खड़े हैं, रथ में खड़े होकर हाथ जोड़कर सेवा कर रहे हैं।

12 लाल वस्त्र पहने, लाल और पीले रंग से रंगे हुए वस्त्रों में, बड़ी और गहरे लाल रंग की आँखों वाले, कुलीन, सुंदर रूप और मनमोहक मुस्कान वाले वे रथ में खड़े होकर हाथ जोड़कर सेवा कर रहे हैं।

13 वे, अपने स्वर्ण कंगनों से सुशोभित, सुंदर वस्त्रों में लिपटी हुई, सुडौल कमर, जांघों और छाती वाली, गोल उंगलियों वाली, सुंदर मुखों वाली, देखने में आकर्षक, रथ में खड़ी होकर हाथ जोड़कर सेवा करती हैं।

14 कुछ युवा, विभिन्न प्रकार से सजे हुए, समान रूप से गुंथे हुए और चमकते बालों वाली, आपकी आज्ञा का पालन करते हुए और प्रसन्नता से आपकी सेवा में लगी हुई, रथ में खड़ी होकर हाथ जोड़कर सेवा करती हैं।

15 वे, लाल और नीले कमलों से सजी हुई मालाओं से सजी हुई, उत्तम चंदन से सुगंधित, आपकी आज्ञा का पालन करते हुए और प्रसन्नता से आपकी सेवा में लगी हुई, रथ में खड़ी होकर हाथ जोड़कर सेवा करती हैं।

16 वे, लाल और नीले कमलों से सजी हुई मालाओं से सजी हुई, उत्तम चंदन से सुगंधित, आपकी आज्ञा का पालन करते हुए और प्रसन्नता से आपकी सेवा में लगी हुई, रथ में खड़ी होकर हाथ जोड़कर सेवा करती हैं।

17 गर्दन, हाथों, पैरों और सिर पर सजे हुए वे आभूषण दसों दिशाओं को शरद ऋतु के सूर्योदय के समान चमकाते हैं।

18 हवा के झोंके में कंपन करते हुए, बाहों में सजी मालाएँ और आभूषण एक मनमोहक ध्वनि उत्पन्न करते हैं, जो सभी ज्ञानी पुरुषों के लिए सबसे मधुर है।

19 और आनंदभूमि में दोनों ओर रथ, हाथी और वाद्ययंत्र विराजमान हैं, जो हे देवों के मुखिया, आपको अपनी ध्वनि से प्रसन्न करते हैं, जैसे कि वीणा अपने पुल, तख़्ते और धनुष से प्रसन्न करती है।

20 जब ये अनेक सुंदर और मनमोहक वीणाएँ बजती हैं, जो हृदय में आनंद भर देती हैं, तो प्रशिक्षित अप्सराएँ कमलों पर स्वतंत्र रूप से घूमती हैं।

21 और जब नृत्य, वादन और गायन सब एक समान प्रतीत होते हैं, तब यहाँ वे (आपके रथ में) नृत्य करती हैं, तब वहाँ अप्सराएँ, तेजस्वी स्त्रियाँ, दिशाओं को प्रकाशित करते हुए, दोनों ओर नृत्य करती हैं।

22 आप संगीत की धुन से आनंदित होते हैं, मानो आप देवताओं के स्वामी इंद्र हों, वज्र धारण करने वाले हों, जबकि ये अनेक वीणाएँ बजती हैं और हृदय में आनंद भर देती हैं।

23 आपने पूर्व जन्म में मनुष्य के रूप में क्या कर्म किया था? क्या आपने उपोसथ (उपवास और पश्चात्ताप) का पालन किया था या धर्म (सदाब के मार्ग) पर चलकर और अच्छे आचरण से तृप्ति पाई थी?

24 आपके इस व्यापक वैभव और महिमा का कारण कोई तुच्छ कर्म या सुचारु पालन नहीं है, जिसमें आप देवों से भी कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं।

25 या यह आपके दान देने, नैतिकता के अभ्यास या श्रद्धा अर्पित करने का फल है? अब, पूछे जाने पर बताइए।

इस प्रकार पूछे जाने पर उस देव-युवक ने, जो उस महान बुजुर्ग द्वारा पूछा गया था, यह विषय बताया:

26 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर वह देव-युवक प्रसन्न हुआ और उसने बताया कि यह किस कर्म का फल है:

27 "वह, जो सभी शक्तियों में पराजित है, बुद्ध, जो सामर्थ्य में परिपूर्ण है, मनुष्यों में श्रेष्ठ है, कस्सपा (पूर्व बुद्ध), सर्वोच्च पुरुष, जिसने अमरता का द्वार खोला, देवों में श्रेष्ठ देव, सौ पुण्य चिह्नों से युक्त।

28 मैंने उसे देखा, शक्तिशाली हाथी, बाढ़ पार किया हुआ, चमकीले सोने के गोले के समान। शुद्ध मन से, मैंने शीघ्र ही पहचान लिया कि वह वही है, कि वह वास्तव में सुगठित वचन का ध्वजवाहक है।

29 मैंने, अनासक्त मन से, अपने पुष्पों से सजे निवास में उसे भोजन, पेय और शुद्ध एवं उत्तम गुणवत्ता वाले वस्त्र प्रदान किए।

30 मनुष्यों में श्रेष्ठ को भोजन, पेय, वस्त्र, कठोर और नरम भोजन और आवास से विश्राम कराने के बाद, मैं आनंदित हो रहा हूँ... देव नगर, स्वर्ग से स्वर्ग तक जाने वाला।

31 इस प्रकार, इस निर्बाध यज्ञ को करके, मैं शुद्ध होकर, इस नश्वर शरीर से मुक्त होकर, इंद्र के समान देव नगर में आनंदित हो रहा हूँ।

32 हे ऋषि, जो ऐसे उत्तम वरदान की कामना करता है, उसे भरपूर भोजन और पेय पदार्थ, अच्छी तरह से तैयार करके, एकांतप्रिय व्यक्ति को अर्पित करना चाहिए।

33 न तो इस लोक में और न ही परलोक में कोई ऐसा है जो बुद्ध या उनके समतुल्य से श्रेष्ठ हो। पुण्य के भरपूर फल की तलाश करने वालों के लिए, वह आह्वान के योग्य लोगों में सर्वोच्च वरदान का लक्ष्य बन जाते हैं।

जब वह इस प्रकार बोल रहे थे, तब गुरुजी ने यह जानते हुए कि उनका मन तैयार है, बाधाओं आदि से मुक्त है, सत्यों का प्रतिपादन किया और अंत में उन्हें आध्यात्मिक जागृति के प्रथम चरण, सोतपना के फल से सुसज्जित किया। तब गुरुजी मनुष्य जगत में लौटकर भगवान को उस युवा देवदूत के साथ हुई बातचीत को दोहराया। गुरु (बुद्ध) ने इस विषय को प्रवचन का अवसर बनाकर उपस्थित सभा को धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का उपदेश दिया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.1

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.6.1 --------------------------->>>> अगला

6.1 प्रथम निवास भवन (65)
(पथम-अगरिया-विमान)

भगवान (बुद्ध) राजगृह में, बाँस के वन में निवास कर रहे थे। उस समय राजगृह में एक धनी और गुणी परिवार रहता था, जो भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए लाभों का स्रोत था। माता-पिता ने अपने पूरे जीवन में तीन रत्नों (बुद्ध, धम्म और संघ/आदेश) के नाम पर पुण्य कर्म किए और वहाँ से उनका निधन हो गया और वे तैंतीस (स्वर्ग) में पुनर्जन्म हुए। उनके लिए दस योजन का एक स्वर्ण निवास भवन था। तब पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने पूछा:

1 "जिस प्रकार चित्तलता वन, तैंतीस स्वर्गों का सर्वश्रेष्ठ और सर्वोच्च आनंद (उद्यान) चमकता है, उसी प्रकार आपका यह महल आकाश में प्रकाशमान है।

2 आप देवों की मानसिक शक्ति प्राप्त कर चुके हैं और महान महिमा के स्वामी हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? किस कारण आपकी महिमा इतनी तीव्र है और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है?"

3 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देव-युवक ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

4 "मैं और मेरी पत्नी मनुष्यों के संसार में एक घर में रहते थे और लाभ के स्रोत के समान थे। विश्वास से भरे मन से, हम आदरपूर्वक भोजन और पेय देते थे, और उदारतापूर्वक दान करते थे।

5 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.2

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.6.2 --------------------------->>>> अगला

6.2 द्वितीय गृह हवेली (66)
(दुतिया-अगरिया-विमान)

पूर्ववर्ती के साथ सभी मामलों में समान।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.3

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.6.3 --------------------------->>>> अगला

6.3 फलदाता का महल (67)
(फलदयाक-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में बांस के जंगल में ठहरे हुए थे। उस समय राजा बिम्बिसार को असमय आम खाने की इच्छा हुई। माली ने तमाम कठिनाइयों के बावजूद अपना पूरा प्रयास किया और कुछ आम जबरदस्ती उगाए। जब चार आम पक गए, तो उसने राजा के लिए उन्हें तोड़ लिया। लेकिन जब उसने आदरणीय भिक्षु महा-मोग्गलाना को भिक्षा मांगते देखा, तो उसने सोचा, "मैं ये आम इस आदरणीय भिक्षु को खुशी-खुशी दे दूंगा, चाहे राजा मुझे मार डाले या देश निकाला दे दे, क्योंकि राजा को दान देने का पुण्य इस समय नगण्य है, परन्तु इस आदरणीय भिक्षु को दान देने का पुण्य इस समय और भविष्य में अतुलनीय होगा।" अतः उसने ये आम भिक्षु को दे दिए और फिर राजा को बताया। राजा ने अपने आदमियों को बुलवाया और कहा, "देखो, क्या उसने मुझे सही बताया है।" बड़े माली ने भगवान बुद्ध को आम दिए। उन्होंने उन्हें सारिपुत्त, महामोग्गलाना और महाकस्सपा जैसे अन्य बड़े माली के साथ बाँटा। यह सुनकर राजा माली के साहस से प्रसन्न हुए और उसे एक गाँव, वस्त्र और आभूषण देकर उससे अपने इस कर्म का पुण्य उन्हें देने को कहा। माली ने उत्तर दिया, "हे महाराज, मैं देता हूँ; आप अपनी इच्छा अनुसार लाभ चुन लीजिए।" और जब माली की मृत्यु हुई, तो वह सोलह योजन वाले स्वर्ण महल में तैंतीस देवताओं के बीच पुनर्जन्म लेकर आया। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मग्गलाना ने उनसे पूछा:

1 "यह भव्य महल रत्नजड़ित स्तंभों से सुशोभित है, चारों ओर सोलह योजन हैं, इसमें सात सौ शानदार शिखर वाले कक्ष और सुंदर बेरिल के खंभे हैं जो चमकते धातु से ढके हुए हैं।

2 आप यहाँ निवास करते हैं, खाते-पीते हैं, जबकि देव-देवदूतों के समान वीणा मधुर संगीत बजाती हैं, और आठ गुना आठ देव-देवदूत कन्याएँ प्रशिक्षित और सुंदर, तैंतीस (स्वर्ग) की गौरवशाली निवासी, नृत्य करती हैं, गाती हैं और आनंदित होती हैं।

3 आप, देव-देवदूतों की मानसिक शक्ति प्राप्त कर चुके हैं, महान महिमा के हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? किस कारण आपकी महिमा इतनी तीव्र है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 वरिष्ठ भिक्षु मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देव-देवदूत युवक ने प्रश्न पूछे जाने पर उत्तर दिया। यह किस कर्म का फल (लाभ) था?

5 "फलदाता को भरपूर फल (लाभ) प्राप्त होता है। श्रद्धा भाव से दान देने पर, जो धर्मी मार्ग पर चल रहे हैं, उन्हें प्रसन्नतापूर्वक दान देने पर वह तैंतीस (स्वर्ग) में आनंदित होता है। स्वर्ग प्राप्त करने पर उसे पुण्य का भरपूर फल (लाभ) मिलता है। इसलिए, हे महान ऋषि, मैंने चार फल दिए।

6 अतः फल (लाभ) देना निरंतर सुख और कल्याण की खोज में लगे व्यक्ति को प्रेरित करता है, चाहे वह देवदूत के समान सुख की कामना करे या मनुष्यों के बीच सुख की।

7 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.4

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.6.4 -------------------------->>>> अगला

6.4 प्रथम आश्रयदाता का महल (68)
(पथम-उपास्यादयक-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध) राजगृह में, बाँस के वन में ठहरे हुए थे। उस समय, वर्षा के बाद भगवान (भगवान बुद्ध) को प्रणाम करने जा रहे एक भिक्षु एक गाँव में पहुँचे और रात बिताने के लिए उपयुक्त स्थान की तलाश करने लगे। उन्होंने जिस गृहस्थ अनुयायी से पूछा, उसने अपनी पत्नी से परामर्श करने के बाद भिक्षु को अपने यहाँ अतिथि के रूप में आमंत्रित किया, और अगली सुबह जब आगंतुक फिर से रवाना हुए, तो उन्होंने उन्हें गुड़ का एक टुकड़ा दिया। उनकी मृत्यु के बाद, गृहस्थ अपनी पत्नी के साथ तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में बारह योजन वाले स्वर्ण महल में पुनर्जन्म लिया। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गसलाना ने उनसे पूछा:

1 "जैसे बादल छंटने पर चंद्रमा आकाश में प्रकाश बिखेरता हुआ निकलता है, वैसे ही आपका यह महल आकाश में प्रकाश बिखेरता हुआ खड़ा है।

2 आप देवों के समान आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर चुके हैं और महान महिमा के स्वामी हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी यह तेजस्वी महिमा और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित क्यों करता है?

3 वह देव-युवक प्रसन्न हुआ... यह किस कर्म का फल है?

4 "मैंने और मेरी पत्नी ने मनुष्य जगत में एक अरहंत (बुद्ध के समान प्रबुद्ध) को शरण दी; श्रद्धा भाव से हमने आदरपूर्वक भोजन और पेय पदार्थ दिए, प्रचुर मात्रा में दान दिया।

5,6 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है... और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.5

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.6.5 -------------------------->>>> अगला

6.5 द्वितीय शरणदाता का महल। (69)
(दुतिया-उपास्यादयक-विमान)

यह पिछले वाले के समान है, सिवाय इसके कि यहाँ कई भिक्षु हैं और महा-मोग्गलाना महल की तुलना सूर्य से करते हैं
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.6

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<----------------------- II.6.6 -------------------------->>>> अगला

6.6 भिक्षादाता का महल (70)
(भिक्कदयाक-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में, बाँस के वन में ठहरे हुए थे। उसी समय एक भिक्षु राजमार्ग से जा रहा था और भिक्षा माँगने के लिए एक गाँव में पहुँचा तथा एक घर के द्वार पर रुका। घर के निवासी ने अभी-अभी अपने हाथ-पैर धोए थे और भोजन करने बैठा था, उसने अपना सारा भाग भिक्षु के कटोरे में डाल दिया; धन्यवाद देकर वह चला गया। भिक्षु प्रसन्न होकर सोचने लगा, "मैंने एक भूखे भिक्षु को भिक्षा दी और स्वयं उपवास रखा।" बाद में मृत्यु होने पर, उसका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्गों) में बारह योजन वाले स्वर्ण महल में हुआ। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे पूछा:

1 "यह भव्य भवन चारों ओर बारह योजन तक रत्नजड़ित स्तंभों से सुशोभित है, इसमें सात सौ शानदार शिखर वाले कक्ष और चमकते धातु से ढके सुंदर बेरिल के खंभे हैं।

2 आप, देवों की मानसिक शक्ति प्राप्त कर चुके हैं, महान महिमा के हैं... और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

3 उस देव-युवक को प्रसन्नता हुई... यह किस कर्म का फल है?

4 "जब मैं मनुष्यों के बीच मनुष्य के रूप में जन्मा, तो एक भूखे और थके हुए भिक्षु को देखकर, मैंने उसे अपने पास मौजूद एकमात्र भोजन दिया।

5 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.7

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.6.7 -------------------------->>>> अगला

6.7 जौ की रखवाली करने वाले का महल (71)
(यवपालक-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में बांस के वन में ठहरे हुए थे। उस समय एक गरीब लड़का जौ के खेत में रखवाली कर रहा था और वह नाश्ते के लिए कुम्मस लाया था। जब वह खाने बैठा, तभी वहाँ एक वृद्ध भिक्षु आए जिनके सांसारिक विकार नष्ट हो चुके थे। लड़के ने पूछा, "क्या आपके पास भोजन है, श्रीमान?" वृद्ध भिक्षु चुप रहे। लड़के ने यह देखकर कि इसका अर्थ "नहीं" है, कहा, "श्रीमान, भोजन के समय के इतने करीब भिक्षा माँगना संभव नहीं है; मुझ पर दया करके यह कुम्मस खा लीजिए।" वृद्ध भिक्षु ने दया करके उसे देखते हुए स्वयं कुम्मस खाया, धन्यवाद दिया और चले गए। लड़के ने मन में यह विचार किया कि उसने ऐसे व्यक्ति को दान देकर अच्छा कार्य किया है। कुछ समय बाद जब उनकी मृत्यु हुई, तो उनका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में उसी प्रकार के महल में हुआ जैसा कि अभी वर्णित है। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे पूछा:

1,2 "यह भव्य महल रत्नजड़ित स्तंभों से सुशोभित है... और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"

3 उस देव-युवक को प्रसन्नता हुई... यह किस कर्म का फल है?

4 "जब मैं मनुष्य के रूप में जन्मा, तो मैं जौ के खेत में पहरा दे रहा था। मैं निर्मल, शांत और विक्षिप्त भिक्षु था।

5 मैंने श्रद्धापूर्वक अपने हाथों से उन्हें कुम्मस का एक अंश दिया। कुम्मस का अंश देकर मैं नंदनवन में आनंदित हुआ।

6 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.8

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.6.8 --------------------------->>>> अगला

6.8 प्रथम बाली धारण करने वाले का निवास (72)
(पथम-कुंडली-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती के जेतवन में ठहरे हुए थे। उस समय उनके दो प्रमुख शिष्य अपने अनुयायियों के साथ काशी पर्वतमाला में भ्रमण कर रहे थे और सूर्यास्त के समय एक विहार (मठ) में पहुँचे। तभी एक अनुयायी आया और उसने उनके चरणों को स्नान कराकर मालिश की तथा अगले दिन के लिए आमंत्रित करते हुए एक अच्छा दान तैयार किया। उनका धन्यवाद करने के बाद, वरिष्ठ अनुयायी अपने मार्ग पर चले गए। उनकी मृत्यु के बाद, उनका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्ग) में बारह योजन वाले स्वर्णमय निवास में हुआ। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे पूछा:

1 "आप पुष्पों की मालाओं से सुशोभित हैं, सुंदर वस्त्र पहने हैं, चमकीले झुमके लगाए हैं, बाल और दाढ़ी संवारे हैं, चंद्रमा के समान तेजस्वी कंगन पहने हैं, देवदूतों के समान महल में विराजमान हैं।

2 देवदूतों के समान वीणा मधुर संगीत बजा रही हैं और तैंतीस देवदूतों में से आठ सुसंस्कृत और सुंदर देवदूत कन्याएं नृत्य, गायन और आनंद ले रही हैं।

3 आप देवदूतों की मानसिक शक्ति प्राप्त कर चुके हैं, महान महिमा के हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी यह तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 वह देवदूत युवक प्रसन्न हुआ... यह किस कर्म का फल है?

5 "जब मैं मनुष्य के बीच जन्मा, तो ज्ञान और आचरण से परिपूर्ण, प्रसिद्ध और विद्वान भिक्षुओं को देखकर, जिन्होंने भोग-विलास का नाश कर लिया था,

6 मैंने श्रद्धा भाव से उन्हें आदरपूर्वक भोजन और पेय पदार्थ दिए और भरपूर दान दिया।

7 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है... और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.9

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.6.9 --------------------------->>>> अगला

6.9 द्वितीय कान की बाली पहनने वाला महल (73)

(दुतिया-कुंडली-विमान)

यह पिछले महल की तरह ही हुआ, श्लोक भी वही हैं सिवाय इसके कि श्लोक 5 में समने साधुरुपे, अच्छे आचरण वाले भिक्षु, समने सिलवन्ते, गुणी भिक्षुओं के स्थान पर है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु6.10

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<----------------------- II.6.10 --------------------------->>>> अगला

6.10 उत्तरा का महल (74)

(उत्तरपायसी-विमान)

भगवान (बुद्ध) के अंतिम निर्वाण (शाश्वतता) प्राप्त करने और सभा होने के बाद, आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु कुमारकस्प कई भिक्षुओं के साथ सेतावया नगर गए और सिम्सपा वन में ठहरे। तब शासक पायसी ने यह सुनकर उनसे मुलाकात की और उनका स्वागत किया। फिर, उनके विचारों पर चर्चा करते हुए, वरिष्ठ भिक्षु ने उन्हें परलोक की वास्तविकता के बारे में समझाया, जैसा कि पायसी सूत्र में वर्णित है। विदा होते समय, पायसी ने दान दिया, लेकिन चूंकि उन्होंने कम भोजन और मुश्किल से पर्याप्त वस्त्र दिए, क्योंकि वे (पहले) इसके अभ्यस्त नहीं थे, इसलिए उनकी मृत्यु के बाद वे चार महान राजाओं के साथ एक निम्न समूह में उठे। और उत्तरा नामक एक ब्राह्मण युवक ने उनके कार्यों में उनकी सहायता की; स्वयं उदारतापूर्वक और आदरपूर्वक दान देने के बाद, वे बारह योजन वाले महल के साथ तैंतीस (स्वर्ग) के समूह में उठे। अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए वे अपने महल के साथ वरिष्ठ कुमार-कस्सपा के समक्ष प्रकट हुए और उन्हें प्रणाम किया। वरिष्ठ कुमार-कस्सपा ने उनसे पूछा:

1 "जैसे देव-राजा का सुधम्म महल, जहाँ देवों का समूह निवास करता है, वैसे ही आपका यह महल आकाश में प्रकाशमान है।

2 आप देवों की मानसिक शक्ति प्राप्त कर चुके हैं, आप महान महिमावान हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? किस कारण आपकी महिमा इतनी तीव्र है और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है?"

3 वह देव-युवक प्रसन्न हुआ... यह किस कर्म का फल है?

4 "जब मेरा जन्म मनुष्य के रूप में हुआ, तब मैं राजा पयसी के अधीन एक ब्राह्मण युवक था। मैंने जो धन कमाया, उसे बाँट दिया, क्योंकि मुझे गुणी लोग प्रिय थे।

5 श्रद्धा भाव से मैंने आदरपूर्वक भोजन और पेय पदार्थ दान किए, उदारतापूर्वक दान दिया।

6 इसी कारण मेरा सौंदर्य ऐसा है... और मेरा सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है।"

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.1

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<----------------------- II.7.1 --------------------------->>>> अगला
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.1

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई

पिछला <<<<----------------------- II.7.1 -------------------------->>>> अगला

7.1 चित्तलता (स्वर्ग) का महल (75)
(चित्तलता-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती के जेतवन में ठहरे हुए थे। वहाँ एक गरीब गृहस्थ अनुयायी था जो दूसरों के लिए काम करके अपना जीवन यापन करता था। वह आस्थावान था और अपने वृद्ध माता-पिता का सहारा था, क्योंकि उसका मानना था, "घर में रहने वाली स्त्रियाँ ही घर की मुखिया होती हैं। वे अपने ससुराल वालों का सम्मान नहीं करतीं।" इसलिए वह नैतिक नियमों और पालन के दिनों (उपोसथ, पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) का पालन करता रहा। मरने के बाद उसका पुनर्जन्म बारह योजन वाले महल में तैंतीस (स्वर्ग) में हुआ। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना, पहले की तरह आकर, उनसे पूछते हैं:

1 "जिस प्रकार चित्तलता वन, तैंतीस स्वर्गों का सर्वश्रेष्ठ और सर्वोच्च आनंद, चमकता है, उसी प्रकार आपका यह महल आकाश में प्रकाशमान है।

2 आप देवों की मानसिक शक्ति प्राप्त कर चुके हैं, आप महान महिमा के स्वामी हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी यह तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित करता है?"

3 मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देव-युवक ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

4 "जब मैं मनुष्य के बीच पैदा हुआ, तो मैं एक गरीब, निर्धन, दयनीय मजदूर था और अपने बूढ़े माता-पिता का सहारा था, और मुझे गुणी लोग प्रिय थे।

5 विश्वास की भावना से, मैं आदरपूर्वक भोजन और पेय देता था, और उदारतापूर्वक दान भी करता था।

6 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.2

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.7.2 -------------------------->>>> अगला

7.2 नंदना हवेली (76)
(नंदन-विमान)

पिछली हवेली के समान, सिवाय इसके कि यहाँ गरीब मजदूर ने एक पत्नी ले ली थी, और पहला श्लोक "जैसे नंदना (स्वर्ग) उपवन चमकता है..." से शुरू होता है, फिर क्रमांक 75 के अनुसार जारी रहता है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.3

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.7.3 -------------------------->>>> अगला

7.3 रत्नजड़ित भवन (77)
(मणितुना-विमान)

भगवान बुद्ध सावत्थिम जेतवन में निवास कर रहे थे। उस समय कई बुजुर्ग वनवास में रहते थे। गाँव में भिक्षा मांगने जा रहे इन बुजुर्गों के लिए एक अनुयायी ने मार्ग सुगम बनाए, झाड़ियाँ साफ कीं, जलमार्गों पर पुल बनाए, जल को सुखाकर गहरे कुंडों में जमा किया, इत्यादि। उसने दान दिया और नैतिक नियमों का पालन किया। कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई और बारह योजन वाले स्वर्णमय भवन में उनका पुनर्जन्म हुआ। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे प्रश्न किया:

1 "यह भव्य महल रत्नजड़ित स्तंभों से सुशोभित है, चारों ओर बारह योजन हैं, सात सौ शानदार शिखर वाले कक्ष हैं और सुंदर बेरिल के खंभे चमकते धातु से ढके हुए हैं।

2 आप यहाँ निवास करते हैं, खाते-पीते हैं और देवदूतों के समान वीणाओं की मधुर ध्वनि का आनंद लेते हैं। यहाँ देवदूतों के समान सुगंध, पाँच प्रकार के इंद्रिय सुख हैं और सोने से सजी स्त्रियाँ नृत्य करती हैं।

3 आपकी ऐसी सुंदरता किस कारण है... और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

4 वह देवदूत युवक प्रसन्न हुआ... यह किस कर्म का फल था?

5 "जब मैं मनुष्य के रूप में पैदा हुआ, तो मैंने जंगल के रास्ते पर सैर की और एक मठ में पेड़ लगाए, और मुझे गुणी लोग प्रिय थे।

6 आस्था से भरे मन से, मैंने आदरपूर्वक भोजन और पेय पदार्थ दिए, उदारतापूर्वक दान किया। इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है... और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.4

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.7.4 -------------------------->>>> अगला

7.4 स्वर्ण महल (78)
(सुवन्ना-विमान)

भगवान (बुद्ध) अंधकविन्द में ठहरे हुए थे। तब एक विश्वासी और धनी गृहस्थ अनुयायी ने एक बंजर पहाड़ी पर उनके लिए एक "सुगंधित कुटिया" बनवाई, उन्हें वहाँ ठहराया और उनकी सेवा की। शील के उत्तम अभ्यास द्वारा आत्मसंयमित होकर, मृत्यु के बाद उनका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक में रत्नजड़ित सौंदर्य और स्वर्ण छत वाले महल में हुआ। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा मोग्गलाना ने उनसे प्रश्न किया:

1 "एक सुनहरे पर्वत पर एक महल है जो चारों ओर से जगमगाता है, सुनहरे जाल से ढका हुआ है, झनझनाती घंटियों से जड़ा हुआ है,

2 आठ-पहलू वाले सुगठित स्तंभ सभी बेरिल से बने हैं, उनकी प्रत्येक भुजा सात प्रकार के रत्नों से सजी है।

3 बेरिल, सोने, क्रिस्टल और चांदी से, रत्नों से जड़ा हुआ, मोतियों और माणिकों से,

4 रंग-बिरंगा फर्श, मनमोहक; उस पर धूल भी नहीं उड़ती; छत को सहारा देने वाले कई पीले शहतीर बने हैं,

5 और चारों दिशाओं के लिए चार सीढ़ियाँ बनी हैं। कई रत्नों से सजे कमरों के साथ यह सूर्य के समान चमकता है।

6 वहाँ चार रेलिंग विभाजित हैं, सुनियोजित अनुपात में, चकाचौंध भरी, चारों दिशाओं को रोशन करती हैं।

7 इस शानदार महल में, महान तेज वाले देव-युवक, आप उगते सूरज की तरह सुंदरता से चमकते हैं।

8 क्या यह वही महल है?" क्या यह आपके दान देने का फल है, या फिर नैतिकता (शील) के अभ्यास का, या हाथ जोड़कर प्रणाम करने का? पूछे जाने पर मुझे यह बताइए।

9 वह देव-युवक, मोग्गलाना द्वारा पूछे जाने पर प्रसन्न हुआ और जब उससे प्रश्न पूछा गया तो उसने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

10 "जब मैं अंधकविन्द में श्रद्धापूर्वक था, तो मैंने अपने हाथों से सूर्य के सगे गुरु बुद्ध के लिए एक विहार बनाया।

11 वहाँ, श्रद्धापूर्वक, मैंने गुरु (बुद्ध) को सुगंध, मालाएँ, आवश्यक वस्तुएँ, मलहम और विहार भेंट किया।

12 इसी से मुझे यह लाभ हुआ कि मैं नंदन (स्वर्ग) में स्वामी के रूप में निवास करता हूँ और रमणीय नंदन वन में अनेक पक्षियों के झुंडों के शिकार का आनंद लेता हूँ, जहाँ अप्सराएँ नृत्य और गीत गाती हैं।"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.5

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- II.7.5 ------------------------->>>> अगला

7.5 आमों का महल (79)
(अंबा-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में, बांस के जंगल में ठहरे हुए थे। वहाँ एक गरीब आदमी आमों के बाग की रखवाली के लिए रखा गया था। एक दिन भीषण गर्मी में उसने आदरणीय भिक्षु सारिपुत्त को गर्मी और थकान से बेहाल होकर आते देखा और कहा, "महोदय, आप गर्मी से बहुत परेशान लग रहे हैं। अगर आप दया करके आमों के बाग में आकर विश्राम करें तो अच्छा होगा।" भिक्षु मान गए, एक आम के पेड़ के नीचे बैठ गए, और उस आदमी ने उन्हें पीने के लिए पानी दिया और हाथ-पैर धोने के लिए पानी दिया, और बाद में अपने पुण्य कर्मों पर प्रसन्न हुआ। मृत्यु के बाद उनका पुनर्जन्म तैंतीस (स्वर्ग) में हुआ, और उनसे भी आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने पूछा:

1 यह भव्य महल रत्नजड़ित स्तंभों से सुशोभित है, चारों ओर बारह योजन हैं, सात सौ शानदार शिखर वाले हॉल हैं और सुंदर बेरिल के खंभे चमकते धातु से ढके हुए हैं।

2 आप यहाँ निवास करते हैं, खाते-पीते हैं और देवदूतों के समान वीणाओं की मधुर ध्वनि का आनंद लेते हैं। यहाँ देवदूतों के समान सुगंध, पाँच प्रकार के इंद्रिय सुख और सोने से सजी स्त्रियाँ नृत्य करती हैं।

3 आपकी सुंदरता ऐसी क्यों है... और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?

4 वह देवदूत युवक प्रसन्न हुआ... यह किस कर्म का फल था?

5 "गर्मी के मौसम के अंतिम महीने में जब सूरज बहुत तेज था, मैं, एक मजदूर, दूसरों के आम के बाग में पानी दे रहा था।

6 फिर वहाँ ख्यातिप्राप्त भिक्षु सारिपुत्त आए, शरीर से थके हुए, पर मन से नहीं।

7 मैं आमों को पानी दे रहा था, तभी मैंने उन्हें आते देखा और कहा, 'हे पूज्यवर, आपका स्नान कराना अच्छा होगा; इससे मुझे सुख मिलेगा।'

8 मुझ पर दया करके उन्होंने अपना कुंड और वस्त्र एक तरफ रख दिया और उसी वस्त्र में एक वृक्ष की जड़ के नीचे छाया में बैठ गए।

9 और श्रद्धा भाव से मैंने उस वृषभ को उसी वस्त्र में बैठे हुए, वृक्ष की जड़ के नीचे छाया में, निर्मल जल से स्नान कराया।

10 आमों को पानी दिया गया, भिक्षु स्नान कर चुके थे, और इस प्रकार मैंने उनका पुण्य कर्म संपन्न किया, जिससे उनका पूरा शरीर आनंद से भर गया।

11 यही वह कर्म था जो मैंने उस जन्म में किया। मानव शरीर त्यागकर मैं नंदनवन (स्वर्ग) में अवतरित हुआ हूँ।

12 अनेक पक्षियों के झुंडों के निवास स्थान, रमणीय नंदनवन (स्वर्ग) में, मैं अप्सराओं के नृत्य और गीत के साथ आनंदित होता हूँ।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.6

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.7.6 --------------------------->>>> अगला

7.6 ग्वाले का घर (80)
(गोपाल-विमान)

भगवान बुद्ध राजगृह में, बाँस के वन में ठहरे हुए थे। एक ग्वाला राजगृह छोड़कर चरागाह में अपने पशुओं को चराने गया था, तभी उसने आदरणीय भिक्षु महा-मोग्गलाना को आते देखा। महा-मोग्गलाना ने उस व्यक्ति की मृत्यु को भांपते हुए उसके पास जाने का निश्चय किया। वह दुविधा में था कि क्या वह अपने साथ लाया हुआ कुम्मस का भोजन भिक्षु को दे या पशुओं को सेम के खेतों से दूर रखे। उसने निश्चय किया कि चाहे खेतों के मालिक उसके साथ कुछ भी करें, वह यह अवसर नहीं खो सकता, इसलिए उसने अपना भोजन उसे दे दिया और भिक्षु ने करुणावश उसे स्वीकार कर लिया। तभी गायों को दूर रखने की जल्दी में ग्वाला ने अनजाने में एक साँप को छू लिया और साँप ने उसके पैर में काट लिया। बुजुर्ग को भोजन करते देख प्रसन्न और आनंदित होकर, वह विष से ग्रसित हो गया और उसकी मृत्यु हो गई, और बारह योजन वाले स्वर्ण महल में तैंतीस (स्वर्ग) के बीच उसका पुनर्जन्म हुआ। वहाँ उन्हें देखकर आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने पूछा:

1 भिक्षु ने कंगनों से सजे, प्रसिद्ध देव (देवदूत) को चंद्रमा के समान ऊँचे और चिरस्थायी महल में विराजमान देखकर उनसे पूछा:

2 "हे देवदूत, पुष्पों की मालाओं से सुशोभित, सुंदर वस्त्रों में, उज्ज्वल वस्त्रों से युक्त, सुसज्जित बाल और दाढ़ी वाले, कंगनों से सजे, प्रसिद्ध, चंद्रमा के समान देव (देवदूत) महल में विराजमान, 3

जब देव (देवदूत) के समान वीणाएँ मधुर संगीत बजाती हैं और तैंतीस देवियों में प्रशिक्षित और सुंदर आठ देव-युवतियाँ नृत्य करती हैं, गाती हैं और आनंदित होती हैं,

4 हे देव (देवदूतों) की मानसिक शक्ति प्राप्त कर चुके, आप महान महिमा के हैं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी यह चमक किस कारण है? इस प्रकार आपकी महिमा और सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?

5 वह देव-युवक प्रसन्न हुआ... यह किस कर्म का फल था?

6 "जब मैं मनुष्यों के बीच एक मनुष्य के रूप में पैदा हुआ, तो मैंने दूसरों के स्वामित्व वाले पशुओं की बड़ी सावधानी से रखवाली की। तभी एक भिक्षु मेरे पास आया और गायें फलियाँ चरने चली गईं।

7 'आज मेरे दो कर्तव्य हैं, दोनों का मुझे पालन करना चाहिए' - मैंने ऐसा सोचा, हे पूज्यवर; फिर ध्यानपूर्वक विचार करके और (धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का ज्ञान प्राप्त करके), मैंने उन्हें गठरी सौंपते हुए कहा, हे पूज्यवर।

8 फिर मैं तुरंत फलियों के खेत की ओर चल पड़ा, इससे पहले कि पशुओं का झुंड किसी और की संपत्ति को रौंद डाले। लेकिन वहाँ एक बड़े काले विषैले साँप ने मेरे पैर में काट लिया, जब मैं जल्दी में था।

9 मैं व्याकुल था, दर्द से तड़प रहा था; भिक्षु ने स्वयं गठरी खोली और मुझ पर दया करके कुम्मासा ग्रहण किया। वहाँ से मृत्यु के बाद, मैं एक देवता (देवदूत) हूँ।

10 मैंने वही धर्म कर्म किया था, और मैं अपने ही शुभ कर्म का फल भोग रहा हूँ। हे पूज्यवर, आप ही थे जो अत्यंत दयालु थे; कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मैं आपको नमन करता हूँ।

11 देवों और मारों के बीच इस संसार में आप जैसे करुणामय संत कोई और नहीं हैं, हे पूज्यवर। आप अत्यंत करुणामय थे; मैं कृतज्ञतापूर्वक आपको प्रणाम करता हूँ।

12 इस संसार में या परलोक में भी आप जैसे करुणामय संत कोई और नहीं हैं। हे पूज्यवरवर, आप ही अत्यंत करुणामय थे; मैं कृतज्ञतापूर्वक आपको प्रणाम करता हूँ।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.7

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.7.7 -------------------------->>>> अगला

7.7 कंथक का महल (81) - बुद्ध का घोड़ा देवदूत बन जाता है
(कंथक-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती में, जेतवन में ठहरे हुए थे। उस समय जब पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना देवयात्रा पर थे, कंथक नामक एक देव-युवक अपने निवास से निकलकर, अपने विशाल दल और अपार देव-शक्ति के साथ उद्यान की ओर जा रहा था। पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना को देखकर वह शीघ्रता से अपने वाहन से उतरा और उन्हें प्रणाम किया। और बड़े ने उससे पूछा:

1 "जैसे पूर्णिमा का चंद्रमा, तारों का स्वामी, खरगोश के निशान वाला, नक्षत्रों से घिरा हुआ, चारों ओर घूमता है,

2 वैसे ही यह देव-स्वरूप निवास, देव-नगर में उगते सूरज की तरह सुंदरता से जगमगाता है।

3 बेरिल, सोने, क्रिस्टल और चांदी से जड़ा हुआ, बिल्ली की आंखों जैसे रत्नों, मोतियों और माणिकों से सजा हुआ,

4 रंगीन फर्श, मनमोहक, बेरिल से पक्का, सुंदर और आकर्षक शिखर वाले हॉल, आपका महल खूबसूरती से बना हुआ है।

5 और आपके पास मनमोहक कमल-कुंड हैं जिनमें पुथुलोमा मछली आती हैं, साफ चमकीला पानी सुनहरी रेत से घिरा हुआ है,

6 विभिन्न कमलों से ढका हुआ, सफेद जल-लिली से फैला हुआ, मोहक, हवाओं से लहराता हुआ वे एक प्यारी सुगंध बिखेरते हैं।

7 इसके दोनों ओर अच्छी तरह से निर्मित वन क्षेत्र हैं जिनमें फूल वाले और फलदार दोनों प्रकार के पेड़ हैं।

8 (जब आप स्वर्णमय चरणों वाले दीवान पर देवराज की तरह विराजमान हैं, कोमल वस्त्र की चटाई पर अप्सराएँ आपकी सेवा करती हैं।

9 सभी आभूषणों से सुशोभित, विभिन्न मालाओं से अलंकृत, वे आपको प्रसन्न करती हैं, जो महान मानसिक शक्ति वाले हैं; जैसे वासवत्तिन (देवराज) आप आनंदित होते हैं।

10 जब नृत्य, गीत और मधुर संगीत का प्रचलन होता है, तो आप ढोल, शंख, मृदंग, वीणा और तंबू से आनंदित होते हैं।

11 अनेक प्रकार के ये देव-समान रूप, देव-समान ध्वनियाँ, और सुगंध भी सुखद हैं, और स्पर्श के विषय सुखद और आनंददायक हैं।

12 इस वैभवशाली महल में, महान तेज वाले देव-युवक, आप उगते सूरज की तरह सुंदरता से चमकते हैं।

13 क्या यह आपके दान देने का फल है, या नैतिकता के अभ्यास का, या श्रद्धा अर्पित करने का। हाथ जोड़कर? पूछे जाने पर मुझे यह बता देना।"

14 वह देव-युवक प्रसन्न हुआ... यह किस कर्म का फल था?

15 "शाक्यों के शानदार नगर कपिलवस्तु (बुद्ध का नगर) में मैं कंठक (राजकुमार सिद्धार्थ का अश्व, जो अब बुद्ध हैं) था, और शुद्धोदन के पुत्र (बुद्ध) से गर्भ धारण किया था।

16 जब आधी रात को वे (बुद्ध) ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रस्थान कर गए, तो कोमल जालीदार हाथों और तांबे के रंग के नाखूनों से,

17 उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और कहा, 'मित्र, मुझे ले चलो। जब मैं परम आत्मज्ञान प्राप्त कर लूंगा, तो मैं संसार को पार कराऊंगा।'

18 जब मैंने उनकी वाणी सुनी तो मुझे अत्यंत आनंद हुआ; मेरा मन प्रसन्न और प्रसन्न था, और मैंने आज्ञा का पालन करते हुए हिनहिनाया।

19 यह जानकर कि महान यशस्वी शाक्यों के पुत्र मुझ पर सवार हुए हैं, मेरा मन प्रसन्न और प्रसन्न था, और मैंने उस परम पुरुष को अपने प्राणों में धारण किया।

20 अन्य क्षेत्रों से होकर, सूर्योदय होते ही, वे बिना किसी लालसा के आगे बढ़ गए, मुझे (बुद्ध के घोड़े को) और चन्ना (सेवक) को पीछे छोड़ते हुए।

21 मैंने अपनी जीभ से उनके तांबे के रंग के नाखूनों वाले पैरों को चाटा और रोते हुए उस महान पुरुष को जाते हुए देखा।

22 क्योंकि मैंने उस तेजस्वी शाक्यों पुत्र को फिर कभी नहीं देखा, मैं अत्यंत बीमार पड़ गई और शीघ्र ही मेरी मृत्यु हो गई।

23 और उनकी महिमा के कारण ही मैं इस देव-सम्मोहनालय में निवास करती हूँ, जो सभी प्रकार के इंद्रिय सुखों से सुसज्जित है।

24 और उनके ज्ञानोदय के बारे में सुनकर मेरे मन में जो आनंद उत्पन्न हुआ, उसी धर्म के मूल से मैं सांसारिक इच्छाओं का नाश करूँगा।

25 हे पूज्यवर, यदि आप गुरु बुद्ध के समक्ष जाएँ, तो क्या आप भी मेरे शब्दों के साथ उनके चरणों में आदरपूर्वक प्रणाम करेंगे?

26 मैं भी उस विजेता, अद्वितीय पुरुष के दर्शन करने जाऊँगा; उनके समान संसार के रक्षक को देखना कठिन है।

27 और वह कृतज्ञ होकर, लाभों का ध्यान रखते हुए, गुरु (बुद्ध) के पास पहुँचे; जब उन्होंने दूरदर्शी की वाणी सुनी, तो उन्होंने धर्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के दर्शन को शुद्ध किया।

28 अविश्वास, संदेह और प्रतिज्ञाओं से मुक्त होकर, गुरु के चरणों का आदर करते हुए, वे वहीं अंतर्धान हो गए।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.8

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.7.8 --------------------------->>>> अगला

7.8 विविध रंगों का महल (82)
(अनेकवन्न-विमान)

भगवान (बुद्ध) जेतवन के श्रावस्ती में ठहरे हुए थे। आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना तैंतीसवें (स्वर्ग) लोक में देव-यात्रा पर थे और एक विविध रंगों के देव-युवक ने उनका अभिवादन किया, जो उनके पास आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

बड़े ने पूछा:

1 "विभिन्न रंगों वाले, दुःख और थकान दूर करने वाले, विविध सौंदर्य से परिपूर्ण, अप्सराओं के समूह से घिरे हुए, आप सृष्टि के स्वामी, सुनीमिता के समान आनंदित हैं।

2 आपका कोई सानी नहीं, फिर यश, गुण और मानसिक शक्ति में आपसे श्रेष्ठ कौन है? तैंतीस देव-समूह आपको प्रणाम करने के लिए एकत्रित हैं, जैसे मनुष्य में देव चंद्रमा को प्रणाम करते हैं। 3 और

ये, आपकी अप्सराएँ, चारों ओर नाचती, गाती और आनंदित होती हैं। आप, देवों की मानसिक शक्ति प्राप्त करके, महान महिमावान हैं।

4 मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी यह तेजस्वी महिमा और आपका सौंदर्य सभी दिशाओं को प्रकाशित क्यों करता है?"

5 हे देव-युवक, आनंदित होइए... यह किस कर्म का फल था?

6 "हे पूज्यवर, मैं पूर्व में सुमेधा (पूर्व बुद्ध) नामक विजेता का शिष्य था। मैं एक सांसारिक व्यक्ति था, अज्ञानी, जो सात वर्षों तक भिक्षु बनकर बुद्ध के मार्ग पर चला।

7 जब विजय प्राप्त करने वाले सुमेधा, गुरु, दृढ़ निश्चयी, जिन्होंने बाढ़ पार की थी, का अंत हुआ, तब मैंने उनके रत्नजड़ित स्तूप (पवित्र स्मारक) पर प्रणाम किया, जो सोने के जाल से ढका हुआ था, जिससे मेरे मन को शांति मिली।

8 मेरा कोई दान नहीं था, क्योंकि मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं था। लेकिन मैंने वहाँ मौजूद अन्य लोगों को प्रेरित किया: 'उस पवित्र अवशेष को प्रणाम करो जो प्रणाम के योग्य है; ऐसा कहा जाता है, तुम यहाँ से स्वर्ग जाओगे।'

9 ऐसा परोपकारी कार्य मैंने किया, जिसके फलस्वरूप मुझे देवदूतों जैसा आनंद प्राप्त हुआ। मैं तैंतीस (स्वर्ग) के समूह में प्रसन्न हूं क्योंकि उस पुण्य का फल अभी तक समाप्त नहीं हुआ है।
त्रिपिटक >> सूत्र पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु 7.9

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.7.9 -------------------------->>>> अगला

7.9 पॉलिश किए हुए झुमके पहने हुए महल (83)
(मत्तकुंडली-विमान)

भगवान (भगवान बुद्ध) जेतवन के श्रावस्ती में ठहरे हुए थे। वहाँ एक बहुत धनी लेकिन नास्तिक ब्राह्मण रहता था जो कभी किसी को कुछ नहीं देता था और उसे 'निःधन' के नाम से जाना जाता था। उसने अपने पुत्र मत्तकुंडली को कहा था कि वह भगवान (भगवान बुद्ध) या उनके शिष्यों के पास न जाए। उसने आज्ञा का पालन किया। जब वह बीमार पड़ा तो उसके पिता ने उसे दवा तक नहीं दी, यहाँ तक कि उसकी हालत बिगड़ती गई और जब चिकित्सकों को बुलाया गया तो उन्होंने कहा कि यह लाइलाज है। तब भगवान (भगवान बुद्ध) ने घोर करुणा की अनुभूति से प्रेरित होकर देखा कि वे पुत्र और पिता को बचा सकते हैं, और उनके घर के पास खड़े होकर उन्होंने अपनी किरणें भेजीं। पुत्र रोमांचित और प्रसन्न होकर प्रणाम किया और लेट गया। भगवान बुद्ध के जाने के तुरंत बाद उनका निधन हो गया और वे तैंतीस स्वर्गों में स्थित बारह योजन वाले एक महल में जन्म लिए। अंतिम संस्कार के अगले दिन पिता अपने पुत्र का नाम पुकारते हुए रोते हुए श्मशान गए। पुत्र, जो एक देव-युवक थे, ने उन्हें देखकर पिता को मत्तकुंडलिन के रूप में दर्शन दिए और शोक में हाथ जोड़कर रोते हुए कहा, "आह, चंद्रमा! आह, सूर्य!" तब ब्राह्मण ने कहा:

1 "सज्जित, चमकीले कान की बालियाँ पहने, मालाएँ धारण किए, त्वचा पर पीले चंदन का लेप लगाए, हाथ जोड़कर विलाप कर रहे हो। इस वन में तुम्हें कौन सा (दुःख) सँभाल रहा है?"

2 "स्वर्ण से निर्मित और तेजस्वी मेरा रथ बना है। मुझे इसके लिए पहिए नहीं मिल रहे हैं। इस दुःख के कारण मैं प्राण त्याग दूँगा।"

3 "हे ब्राह्मण युवक, आप बताइए, सोने का, रत्नों का, माणिक का या चाँदी का, मैं आपके लिए पहियों का एक जोड़ा लाऊँगा।"

अपने पुत्र के लिए औषधि न ला पाने के कारण ब्राह्मण युवक ने विनम्रतापूर्वक कहा, "वे चंद्रमा और सूर्य के समान विशाल होने चाहिए," और उसने उनसे इस प्रकार निवेदन किया:

4 उस ब्राह्मण युवक ने उनसे कहा, "यहाँ चंद्रमा और सूर्य दोनों दिखाई देते हैं। मेरा सोने का रथ ऐसे पहियों के साथ चमक उठेगा।"

तब ब्राह्मण ने कहा:

5 “हे ब्राह्मण युवक, तुम सचमुच मूर्ख हो, जो उस चीज़ की तलाश करते हो जो प्राप्त नहीं हो सकती। मुझे लगता है कि तुम मर जाओगे क्योंकि तुम चंद्रमा और सूर्य को प्राप्त नहीं कर सकते।”

ब्राह्मण युवक ने उनसे कहा, “कौन (अधिक) मूर्ख है, वह जो दिखाई देने वाली चीज़ के लिए रोता है या वह जो दिखाई न देने वाली चीज़ के लिए रोता है?”

6 “उनका आना-जाना तो देखा जा सकता है, उनके स्वाभाविक गुण और सुंदरता उनके मार्ग में ही झलकती है। परन्तु जो मर गया है और जिसका समय पूरा हो गया है, वह दिखाई नहीं देता। हम में से कौन यहाँ विलाप करने वाला सबसे बड़ा मूर्ख नहीं है?”

7 “हे ब्राह्मण युवक, तुम्हारी बात सही है। हम में से जो इस प्रकार विलाप कर रहा है, मैं निश्चय ही सबसे बड़ा मूर्ख हूँ। जैसे कोई बच्चा चाँद के लिए रोता है, मैं उसी की खोज कर रहा था जो मर गया है और जिसका समय पूरा हो गया है।”

और वह ब्राह्मण, उस श्लोक से दुःख रहित होकर,उन्होंने ब्राह्मण युवक की प्रशंसा करते हुए ये श्लोक कहे:

8 “सचमुच मैं आग की लपटों में जल रहा था, मानो उस पर घी डाला गया हो, परन्तु अब मानो मुझ पर पानी छिड़का गया हो, मेरा सारा दुःख दूर हो गया।

9 निश्चय ही आपने मेरे हृदय में स्थित दुःख, उस बाण को मुझसे निकाल लिया, और दुःख से व्याकुल होकर, पुत्र के लिए पिता के दुःख को दूर कर दिया।

10 अतः मैं, उस बाण की तरह, जो निकल गया था, शांत हो गया हूँ, मुक्त हो गया हूँ। हे ब्राह्मण युवक, आपकी वाणी सुनकर मैं न तो दुःख करता हूँ, न रोता हूँ।”

11 “अब, क्या आप कोई देवता हैं, कोई दिव्य संगीतकार हैं, या सक्का (देवदूतों के राजा) हैं, उदार दाता हैं? या आप कौन हैं? या किसके पुत्र हैं? हम आपको कैसे पहचानें?”

और उसने अपने बारे में उससे कहा:

12 "मैं वही पुत्र हूँ जिसका आपने श्मशान में अंतिम संस्कार किया था, जिसके लिए आप शोक मनाते हैं और दुखी होते हैं, जिसने एक नेक कर्म करके (तृतीय) स्वर्ग की संगति प्राप्त की है।"

13 ब्राह्मण ने कहा, "हमने अपने घर में थोड़ा-बहुत दान देना या उपोसथ (पखवाड़े भर का उपवास और पश्चात्ताप) जैसे धार्मिक अनुष्ठान करना नहीं देखा है। किस कर्म से आप देवलोक में गए हैं?"

तब ब्राह्मण युवक ने कहा:

14 “मैं अपने घर में बीमार, दुखी और विक्षिप्त था, शरीर से अत्यंत कष्ट में था। मैंने निर्मल, संशयमुक्त, कल्याणकारी और पूर्ण दिव्य ज्ञान से परिपूर्ण बुद्ध को देखा।

15 मेरा हृदय प्रसन्न हुआ और श्रद्धा भाव से मैंने हाथ जोड़कर तथागत (बुद्ध) को प्रणाम किया। इस पुण्य कर्म के फल से मुझे तैंतीस (स्वर्ग के) देवदूतों का साथ प्राप्त हुआ।”

जब वह ऐसा कह रहा था, ब्राह्मण का संपूर्ण शरीर आनंद से भर गया और उसने कहा:

16 "यह कितना अद्भुत और आश्चर्यजनक है कि हाथ जोड़कर प्रणाम करने का यही फल है। मैं भी आज ही प्रसन्न हृदय से बुद्ध की शरण में आया हूँ।"

फिर देव (देवदूत) युवक ने शरण लेने और नैतिक उपदेशों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए दो श्लोक कहे:

17 " आज ही श्रद्धापूर्वक बुद्ध की शरण लो, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का अनुसरण करो और भिक्षु संघ में प्रवेश करो। इसी प्रकार, प्रशिक्षण के पाँचों चरणों का पूर्णतः पालन करो।

18 अब से प्राणियों की हत्या न करो, संसार में जो कुछ भी निषिद्ध है उसका त्याग करो, मादक पेय न पियो, झूठ न बोलो और अपनी पत्नी से संतुष्ट रहो।"

जब देव-युवक ने इस प्रकार शरण लेने और नैतिक उपदेशों का पालन करने का आग्रह किया, तो ब्राह्मण ने उसकी बात मानकर कहा:

19 "हे यक्ष, आप मेरा भला चाहते हैं, हे देवता, आप मेरा कल्याण चाहते हैं। मैं आपकी बात मानूंगा, आप मेरे गुरु हैं।

20 मैं बुद्ध की शरण में जाता हूं और परम धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) और मनुष्यों में देव (देवदूत) की शरण में जाता हूं।"

21 मैं तुरंत ही प्राणियों की हत्या करने से परहेज करता हूँ, मैं संसार में निषिद्ध वस्तुओं का त्याग नहीं करता, मैं मादक पेय नहीं पीता, झूठ नहीं बोलता और अपनी पत्नी से संतुष्ट हूँ।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.10

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<---------------------- II.7.10 -------------------------->>>> अगला

7.10 सेरिसाका का महल (84)
(सेरिसाका-विमान)

भगवान बुद्ध के अंतिम निर्वाण प्राप्त करने के बाद, आदरणीय वरिष्ठ भिक्षु कुमार-कस्प पाँच सौ भिक्षुओं के साथ सेतव्य नगर पहुँचे। वहाँ उन्होंने शासक पयसी को उसके विकृत विचारों से विमुख किया। इसके बाद से, जैसा कि उन्हें पुण्य पसंद था, वे भिक्षुओं और ब्राह्मणों को दान देते रहे, लेकिन पहले की तरह नियमित रूप से दान न देने के कारण लापरवाही से देते रहे। उनकी मृत्यु के बाद, उनका पुनर्जन्म सिरिसा के उपवन में स्थित चार महान राजाओं के निवास स्थान, एक खाली महल में हुआ। यह दुखद है कि अतीत में, अरिगा-मगध के कुछ व्यापारी सिंधु और सोविरा जाते समय, दिन की गर्मी के डर से रात में यात्रा करते हुए, रास्ता भटक गए। उनके साथ एक विश्वासी गृहस्थ अनुयायी भी था, जिसमें अरहंतत्व (बुद्ध के समान अंतिम ज्ञान) प्राप्त करने की योग्यता थी और वह अपने माता-पिता का सहारा देने के लिए व्यापारियों के साथ शामिल हो गया था। उनकी सहायता के लिए देव-युवक सेरिसाका अपने महल के साथ प्रकट हुए और व्यापारियों से पूछा कि वे इस छायाहीन, जलहीन और रेतीले रेगिस्तान में कैसे आ गए। व्यापारियों ने उन्हें बताया। उनके संबंध को समझाने के लिए, पुनरावलोकनकर्ताओं ने पहले दो श्लोक जोड़े।

1 सुनो कि यक्ष और व्यापारियों के बीच कहाँ मुलाकात हुई और कैसे दोनों ने आपस में अच्छी तरह से बातचीत की, और आप सभी इसे ध्यान से सुनें।

2 राजा पायसी नाम के उस व्यक्ति ने, जो पृथ्वी के देवों (देवदूतों) का साथी और प्रसिद्ध था, अपने महल में आनंदित होकर, एक अमानवीय प्राणी, मनुष्यों को संबोधित करते हुए कहा:

3 “एक घने जंगल में, जहाँ कोई मनुष्य नहीं जाता, एक जलहीन रेगिस्तान में, जहाँ खाने के लिए बहुत कम है, जहाँ रेतीले मैदान के बीच यात्रा करना बहुत कठिन है, और जहाँ अनिश्चितता के भय से मनुष्य अपना होश खो सकते हैं,

4 यहाँ न तो फल हैं, न ही जड़ें। यहाँ कोई भोजन नहीं है, तो फिर यहाँ भोजन कैसे मिलेगा? यहाँ निर्मम झुलसा देने वाली गर्मी की धूल और रेत के सिवा कुछ नहीं है,

5 एक झुलसे हुए लोहे के बर्तन की तरह बंजर भूमि, परलोक की तरह लाभहीन, कभी डाकुओं का शिविर रहा, एक शापित क्षेत्र।

6 और तुम, किस कारण से विवश होकर, किस इच्छा से, इतनी जल्दी में इस स्थान पर आए हो—लालच से, भय से या क्या तुम रास्ता भटक गए हो?"

तब व्यापारियों ने कहा:

7 "मगध और अरिगा के कारवां वालों, हम सिंधु और सोविरा देशों में धन की आवश्यकता और लाभ की तलाश में जाने के लिए प्रचुर मात्रा में माल लाद रहे थे।

8 दिन की प्यास सहन न कर पाने और अपने बैलों पर दया आने के कारण, हम सब इस गति से गलत समय पर, रात में, रास्ते पर चल पड़े हैं।

9 हम बुरी तरह भटक गए और रास्ता भूल गए, हम जंगल में खोए हुए अंधों की तरह भ्रमित हो गए। एक अत्यंत कठिन रेतीले इलाके में, हमारा मन व्याकुल हो गया, हमें दिशा का ज्ञान नहीं था।

10 अब, जो पहले कभी नहीं देखा गया था - एक सुंदर महल और आपको, यक्ष - देखकर, अब जीवन के लिए फिर से आशा के साथ उठ खड़े हुए हैं; क्योंकि हमने (आपको) देखा है, हम प्रसन्न, आनंदित और प्रसन्न हैं।"

फिर देव (देवदूत)-युवक ने पूछा:

11 "और यह रेतीला रेगिस्तान समुद्र के पार तक फैला हुआ है, सड़क खंभों से बनी एक ऊबड़-खाबड़ पगडंडी है जिस पर लता की रस्सी से सावधानीपूर्वक चलना पड़ता है; फिर नदियाँ और चट्टानों के बीच दुर्गम स्थान हैं—धन की लालसा में तुम अनेक क्षेत्रों से होकर गुज़रते हो।

12 दूसरे राजाओं के राज्यों में प्रवेश करते हुए, दूसरे देशों के लोगों को देखते हुए, जो कुछ तुमने सुना है या जो कुछ तुमने देखा है, इस आश्चर्य के विषय में, हे प्रिय मित्रों, हम तुमसे सुनेंगे।"

देव-युवक द्वारा पूछे जाने पर व्यापारियों ने कहा:

13 “हे राजकुमार, इससे अधिक अद्भुत हमने न तो सुना है और न ही देखा है; समस्त सांसारिक वस्तुओं से परे, हम आपकी परिपूर्ण सुंदरता को देखकर कभी नहीं थकते।

14 आकाश में कमल के सरोवर निरंतर बहते रहते हैं, जिनमें अनेक सफेद कमल खिले रहते हैं, और ये सदा फल देने वाले वृक्ष अत्यंत सुगंधित महक बिखेरते हैं।

15 ऊँचे सौ बेरिल के स्तंभ और लंबे चबूतरे रॉक-क्रिस्टल और मूंगे, कैट्स-आई और माणिक्य से बने हैं, ये स्तंभ चमकीले रत्नों से जड़े हैं।

16 हजार स्तंभ अद्वितीय वैभव के साथ, यह भव्य महल उनके ऊपर स्थित है, जिसके भीतर विभिन्न रत्न जड़े हैं, रेलिंग सोने की हैं; यह चमकीली प्लेटों से खूबसूरती से ढका हुआ है।

17 यह, जंबोना नदी के पिघले हुए सोने के समान तेजस्वी, अच्छी तरह से पॉलिश किए गए छतों, सीढ़ियों और चबूतरों के साथ, मजबूत और सुंदर तथा बहुत अच्छी तरह से सुसज्जित है, अत्यंत आनंदमय और प्रसन्नता से भरपूर,

18 रत्नजड़ित (महल) में प्रचुर मात्रा में भोजन और पेय उपलब्ध हैं। अप्सराओं के समूह से घिरे, ढोल-नगाड़ों की गूंज से गूंजते हुए, आपका अभिवादन और प्रशंसा की जाती है।

19 महल के रमणीय भव्य चबूतरे पर स्त्रियों के समूह से सजे हुए, आप असीम वैभव वाले, हर सुख-सुविधा से परिपूर्ण, नलिनी में राजा वेसवना की तरह आनंदित होते हैं।

20 अब, क्या आप देव हैं, या यक्ष हैं, या मानव रूप में देवों के स्वामी हैं? व्यापारी, कारवां वाले आपसे पूछ रहे हैं। हमें अपना नाम बताइए। क्या आप यक्ष हैं?

उस देव-युवक ने स्वयं को प्रकट किया और कहा:

21 "मैं सेरिसाका नामक यक्ष हूँ, मैं रेगिस्तान में रेतीले रास्तों का रक्षक हूँ, मैं राजा वेसवना के आदेशों का पालन करते हुए इस क्षेत्र और उस क्षेत्र की निगरानी करता हूँ।"

अब व्यापारियों ने उसके कर्मों के बारे में पूछते हुए कहा:

22 "क्या यह आपको सौभाग्य से प्राप्त हुआ है, या कर्मफल से, या परिश्रम से, या देवों द्वारा प्रदत्त? व्यापारी, कारवां वाले, आपसे पूछ रहे हैं: यह आनंद आपको कैसे प्राप्त हुआ?"

उस देव-युवक ने इन चारों विकल्पों को अस्वीकार करते हुए एक श्लोक कहा जिससे स्पष्ट होता है कि यह स्वयं पुण्य का परिणाम था:

23 "न तो मुझे सौभाग्य से प्राप्त हुआ है, न ही कर्मफल से, न ही परिश्रम से, और न ही देवों द्वारा प्रदत्त। यह आनंद मुझे मेरे निष्कलंक कर्मों या पुण्य से प्राप्त हुआ है।"

व्यापारियों ने योग्यता की प्रकृति के बारे में पूछा:

24 "तुम्हारी प्रतिज्ञा क्या थी या तुम्हारा ब्रह्मचर्य का अभ्यास क्या था? या यह किस प्रकार का अच्छा अभ्यास है जिसका यह परिणाम है? व्यापारी, कारवां वाले तुमसे पूछ रहे हैं: तुमने यह हवेली कैसे प्राप्त की?"

देव (देवदूत) युवक ने इन विकल्पों को फिर से अस्वीकार करते हुए, अपने संचित पुण्य का प्रमाण देते हुए कहा:

25 “मेरा नाम पयसी था। जब मैं कोसलों पर शासन कर रहा था, तब मैं नैतिकता और पारंपरिक मान्यताओं में विश्वास नहीं करता था, कंजूस था, बुरी आदतों वाला था, और मेरा मानना था कि मृत्यु के बाद कोई जीवन नहीं है।

26 और वहाँ एक भिक्षु, कुमार कस्सपा, थे, जो बहुत कुछ सुन चुके थे, एक वाक्पटु और प्रतिभाशाली वक्ता थे। उन्होंने मुझे धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर प्रवचन दिया, और मेरे कुटिल विचारों को दूर किया।

27 जब मैंने उनका धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) पर प्रवचन सुना, तो मैंने गृहस्थ अनुयायी होने की घोषणा की: मैंने प्राणियों की हत्या से परहेज किया, मैंने संसार में जो कुछ भी नहीं दिया गया था, उसका त्याग किया, शराब का सेवन नहीं किया, झूठ नहीं बोला, और अपनी पत्नी से संतुष्ट रहा।

28 यही मेरी प्रतिज्ञा थी और यही मेरा ब्रह्मचर्य का अभ्यास था। इसी अच्छे अभ्यास का यह अंश है।” परिणाम स्वरूप, इन्हीं कर्मों या पुण्य कर्मों से, न कि बुरे कर्मों से, यह महल मुझे प्राप्त हुआ है।”

तब व्यापारियों ने देव-युवक और उनके महल को देखकर, कर्मों के फल में विश्वास रखते हुए, कर्मों के फल के संबंध में अपने विश्वास को प्रकट करते हुए दो श्लोक कहे:

29 “निःसंदेह, बुद्धिमानों ने सत्य कहा। ऋषियों का संसार अन्यथा नहीं है। जहाँ कहीं भी पुण्य कर्म करने वाला जाता है, वहाँ वह अपने हृदय की इच्छा पूरी होने का आनंद लेता है।

30 जहाँ कहीं भी दुःख और विलाप, मृत्यु और बंधन और कष्ट हैं, वहाँ एक पापी जाता है, और वह कभी भी बुरे पुनर्जन्म से मुक्त नहीं होता।”

जब वे बोल रहे थे, महल के द्वार पर लगे वृक्ष से पकी हुई सिरिसा फली गिरी और देव-युवक दुखी प्रतीत हुए। व्यापारियों ने उसे देखकर एक श्लोक कहा:

31 “देवों का समूह स्तब्ध है और इस क्षण कीचड़ में फंसे विचार की तरह विचलित है। हे राजकुमार, तुममें और इस समूह में असंतोष कहाँ से आया?”

जब उसने उनकी बात सुनी तो देव-युवक ने कहा:

32 “हे सज्जनों, ये सिरिसा के उपवन देव-स्वरूप सुगंध बिखेरते हैं; ये सुगंध दिन-रात इस महल में आती हैं और अंधकार को दूर करती हैं।

33 इनमें से हर सौ वर्ष बाद एक फली खुलती है। इस देव-समूह में मेरे जन्म के बाद से सौ मानव वर्ष बीत चुके हैं।”

तब व्यापारियों ने उसे सांत्वना देते हुए कहा:

35 “तुम्हारे जैसे व्यक्ति को कैसे शोक करना चाहिए जिसने इतने लंबे समय तक ऐसे अद्वितीय महल का अधिकार प्राप्त किया है?” "निःसंदेह, केवल वे ही लोग शोक करें जो पुण्य में कमज़ोर होकर निम्न (स्थिति) में आसीन हुए हैं?"

देव (देवदूत) युवक ने उनकी बातों को सुनकर सांत्वना पाई और एक श्लोक बोला:

36 "यह उपदेश मेरे लिए उचित है और आपने जो शब्द कहे हैं, वे मेरे प्रति आदर के हैं। लेकिन अब, हे सज्जनों, मेरी शरण में आकर, आप अपनी इच्छित सुरक्षा के लिए प्रस्थान करें।"

व्यापारियों ने कृतज्ञता व्यक्त करते हुए यह श्लोक कहा:

37 "जब हम सिंधु और सोविरा भूमि में पहुँचेंगे, धन की आवश्यकता होगी, लाभ की तलाश में होंगे, और उचित भेंटों से सेरिसा का आदर करेंगे।"

लेकिन देव-युवक ने बड़ी भेंट को अस्वीकार करते हुए, उन्हें क्या करना चाहिए, यह बताते हुए एक श्लोक कहा:

38 "सेरिसा का आदर न करें, और सब कुछ आपके लिए वैसा ही होगा जैसा आपने कहा था; (लेकिन) आपको बुरे कर्मों से बचना चाहिए और धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के अभ्यास का दृढ़ निश्चय करना चाहिए।"

उन्हें उदाहरण देते हुए और उस गृहस्थ अनुयायी के गुणों की प्रशंसा करते हुए, जिसे वे अपना हिस्सा और सुरक्षा प्रदान करने के लिए उत्सुक थे, उन्होंने यह श्लोक कहा:

39 "इस समूह में एक गृहस्थ अनुयायी है, जो विद्वान, नैतिक उपदेशों और प्रतिज्ञाओं का पालन करने वाला, विश्वासी, उदार, प्रेममय, समझदार, संतुष्ट और बुद्धिमान है।

40 वह जानबूझकर झूठ नहीं बोलेगा, न ही किसी दूसरे को हानि पहुँचाने की सोचेगा, न ही फूट डालने वाला या निंदात्मक भाषण देगा, बल्कि वह कोमल और दयालु वाणी का होगा। 41

वह आदरणीय, सम्मानशील, प्रशिक्षित, दुष्ट नहीं और उच्च नैतिकता में शुद्ध होगा। और यह नेक जीवन जीने वाला व्यक्ति धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) के माध्यम से अपने माता-पिता का भरण-पोषण करता है।

42 मुझे लगता है कि वह अपने माता-पिता के लिए धन की खोज करता है, स्वयं के लिए नहीं, और यह कि अपने माता-पिता के न रहने पर वह त्याग की ओर अग्रसर होकर ब्रह्मचर्य का पालन करेगा। 43 वह

सीधा है, कुटिल नहीं, धूर्त नहीं, कपटी नहीं, वह किसी भी चीज का निपटारा धन के माध्यम से नहीं करेगा। किसी बहाने से। ऐसा व्यक्ति, जो अच्छे कर्म करता है, धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) में दृढ़ है, उसे दुख कैसे मिल सकता है?

44 इसी कारण मैंने स्वयं को प्रकट किया है। इसलिए, व्यापारियों, आपको धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) का अनुसरण करना चाहिए। उसके बिना आप यहाँ राख हो सकते थे, जंगल में खोए हुए अंधों की तरह भ्रमित हो सकते थे - किसी और के लिए उस पर हमला करना आसान है; वास्तव में एक अच्छे व्यक्ति से मिलना सुखद होता है।

व्यापारियों ने, सामान्य शब्दों में वर्णित व्यक्ति का पूरा विवरण जानने के लिए उत्सुक होकर कहा:

45 "यह कौन है और यह क्या काम करता है, इसका नाम क्या है और यह किस कुल का है? हम भी, यक्ष, उसे देखने के लिए उत्सुक हैं जिसके लिए करुणावश आप यहाँ आए हैं; वास्तव में यह उसके लिए लाभ है जिसे आप प्रिय मानते हैं।"

अब देव (देवदूत)-युवक ने उसका नाम और कुल बताते हुए कहा:

46 "वह नाई, जिसका नाम संभव है, एक गृहस्थ अनुयायी, जो ब्रश और ब्लेड से अपना जीवन यापन करता है, क्या आप इस व्यक्ति, अपने सेवक को जानते हैं?" तुम मेरा उपहास मत करो क्योंकि वह एक अच्छा आदमी है।"

तब व्यापारियों ने उसे पहचानकर कहा:

47 "हे यक्ष, हम उन्हें जानते तो हैं, पर उन्हें उस रूप में नहीं जानते थे। हे यक्ष, आपके उच्च वचन सुनकर हम भी अब उन्हें प्रणाम करेंगे।"

अब, उन्हें अपने महल में प्रवेश कराने के बाद, उन्होंने उन्हें प्रेरित करते हुए एक श्लोक कहा:

48 "इस कारवां में जितने भी पुरुष हों—युवक, वृद्ध और मध्यम आयु वर्ग के, वे सब महल में चढ़ें, कंजूस भी पुण्य का फल देखें।"

49 वहाँ जितने भी लोग थे, "मैं पहले हूँ" कहते हुए, (पर) नाई को आगे करके, वे सब वासव के मसक्कसर (इंद्र का निवास) के समान महल में चढ़ गए।

50 वहाँ जितने भी लोग थे, "मैं पहले हूँ" कहते हुए, उन्होंने गृहस्थ शिष्य होने की घोषणा की; वे प्राणियों की हत्या करने से विवश थे, उन्होंने संसार की वर्जित वस्तुओं का त्याग किया, वे शराब नहीं पीते थे और झूठ नहीं बोलते थे, वे अपनी-अपनी पत्नियों से संतुष्ट थे।

51 वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने "मैं प्रथम हूँ" कहकर गृहस्थ शिष्य होने की घोषणा की: यक्ष की मानसिक शक्ति और उसकी स्वीकृति से कारवां बार-बार हर्षोल्लास करते हुए आगे बढ़ा।

52 ये लोग सिंधु और सोविरा देशों में धन की आवश्यकता और लाभ की तलाश में गए, और जब उनका काम भरपूर लाभ के साथ पूरा हो गया, तो वे बिना किसी हानि के पाटलिपुत्त (पटना) लौट आए।

53 अपने-अपने घरों में सुरक्षित पहुँचकर, जहाँ उनके बच्चे और पत्नियाँ उनसे फिर से मिल गईं, वे प्रसन्न, प्रसन्न और आनंदित थे, उन्होंने सेरिसा के सम्मान में भव्य उत्सव मनाया, उन्होंने सेरिसाका निवास का निर्माण किया।

54 अच्छे लोगों के साथ संगति का यही स्वभाव है। धम्म (शाश्वत सत्य का मार्ग) में गुण रखने वालों के साथ संगति करना अत्यंत लाभकारी है। एक गृहस्थ अनुयायी के कारण समस्त प्राणी सुखी हो गए।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> विमानवत्थु7.11

www.tipitaka.org पर पाली टिपिटका के साथ तुलना की गई
पिछला <<<<----------------------- II.7.11 -------------------------->>>>समाप्त

7.11 सुनीक्खित्त का महल (85)
(सुनीक्खित्त-विमान)

भगवान बुद्ध श्रावस्ती में, जेतवन में ठहरे हुए थे। जैसा कि ऊपर बताया गया है, उस समय पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना देवयात्रा पर तैंतीसवें लोक में आए। एक देव-युवक, जो उनके महल के द्वार पर खड़ा था, अत्यंत श्रद्धापूर्वक वरिष्ठ भिक्षु के पास पहुँचा। अतीत में जब बुद्ध कश्यप के अवशेषों पर एक योजन आकार का स्वर्ण स्तूप स्थापित किया गया था, तब चार देवमंडल समय-समय पर भेंट

लेकर जाया करते थे। एक गृहस्थ शिष्य ने वहाँ फूल चढ़ाने के बाद, कुछ अन्य अव्यवस्थित फूलों को भी ठीक किया और उन्हें नए सिरे से अर्पित किया। उन्हें ध्यान का विषय बनाकर और गुरु के गुणों का स्मरण करते हुए, उन्होंने उनके पुण्य को अपने हृदय में स्थापित किया। बाद में जब उनकी मृत्यु हुई, तो इसी कर्म की शक्ति से उनका पुनर्जन्म तैंतीसवें लोक (स्वर्ग) में बारह योजन वाले स्वर्ण महल में हुआ, और उनके साथ बहुत सारे सेवक (परिचारक) थे। तब पूज्य वरिष्ठ भिक्षु महा-मोग्गलाना ने उनसे इन श्लोकों में पूछा:

1 "यह भव्य महल रत्नजड़ित स्तंभों से सुशोभित है, चारों ओर बारह योजन हैं, सात सौ शानदार शिखर वाले कक्ष हैं और सुंदर बेरिल के स्तंभ चमकते धातु से ढके हुए हैं।

2 आप यहाँ निवास करते हैं, खाते-पीते हैं और देवदूतों के समान वीणाओं की मधुर ध्वनि सुनते हैं। यहाँ देवदूतों के समान सुगंध हैं, पाँच प्रकार के इंद्रिय सुख हैं और सोने से सजी स्त्रियाँ नृत्य करती हैं।

3 आपकी ऐसी सुंदरता किस कारण है? आप यहाँ किस कारण समृद्ध होते हैं और वहाँ आपके हृदय को प्रिय सभी सुख कैसे उत्पन्न होते हैं?

4 हे महान महिमावान देव, मैं आपसे पूछता हूँ, मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आपने कौन सा पुण्य कर्म किया? आपकी ऐसी तेजस्वी महिमा किस कारण है और आपकी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है?"

उस देव-युवक ने अपने कर्म का वर्णन छंदों में किया। व्याख्या करते हुए विद्वानों ने कहा:

5 मोग्गलाना द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर प्रसन्न होकर उस देव-युवक ने बताया कि यह किस कर्म का फल है।

6 "मैंने एक बेढंगी माला को सुशोभित करके, उसे कुएँ के स्तूप पर स्थापित किया है, और अब मैं महान मानसिक शक्ति और महान महिमा से परिपूर्ण हूँ, देव-देवदूत जैसे इंद्रिय सुखों से युक्त हूँ।

7 इसी कारण मेरी सुंदरता ऐसी है, इसी कारण मैं यहाँ-वहाँ समृद्ध होता हूँ और जो भी सुख मेरे हृदय के निकट हैं, वे सब उत्पन्न होते हैं।

8 इसी कारण मेरी तेजस्वी महिमा ऐसी है और मेरी सुंदरता सभी दिशाओं को प्रकाशित करती है।"

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> विमानवत्थु >> सिरिमा - सिरिमा की हवेली
पाली भाषा से जॉन डी. आयरलैंड द्वारा अनुवादित
[वांगिसा:] आपके जुते हुए और खूबसूरती से सजाए गए घोड़े, बलवान और तेज, आकाश से नीचे की ओर जा रहे हैं। और ये पाँच सौ रथ, जादुई रूप से निर्मित, उनके पीछे-पीछे चल रहे हैं, घोड़ों को सारथी द्वारा प्रेरित किया जा रहा है।

आप इस उत्तम रथ पर सजी-धजी, तेजस्वी और दमकती हुई, एक चमकते तारे के समान खड़ी हैं। हे सुंदर, कोमल काया और असीम सौंदर्य वाली, मैं आपसे पूछता हूँ कि आप किस देवदूत मंडली से उस अद्वितीय व्यक्ति से मिलने आई हैं?

[सिरिमा:] उन देवताओं (देवदूतों) में से, जो दिव्य इंद्रिय सुखों की पराकाष्ठा पर पहुँच चुके हैं और जिन्हें अतुलनीय माना जाता है, वे अद्वितीय रूपान्तरण और सृजन में आनंदित होते हैं। उसी समूह की एक अप्सरा, जो किसी भी वांछित रूप को धारण करने में सक्षम है, अद्वितीय देवदूत की पूजा करने यहाँ आई है।

[वांगिसा:] तुमने पहले यहाँ कौन से अच्छे आचरण किए थे? तुम असीम वैभव में कैसे रहती हो और तुम्हें ऐसे सुख कैसे प्राप्त हुए? आकाश में विचरण करने की अद्वितीय शक्ति तुम्हें किस कारण प्राप्त हुई? तुम्हारी सुंदरता दसों दिशाओं में क्यों फैलती है?

आप देवताओं (देवदूतों) से घिरे और सम्मानित हैं। स्वर्ग में जन्मी देवी (देवदूत) के पास आने से पहले आपका क्या हाल था? या आपने किस शिक्षा का पालन किया? मुझे बताइए कि क्या आप ज्ञानी पुरुष के शिष्य थे।

[सिरिमा:] पहाड़ियों के बीच बसे एक सुंदर और सुव्यवस्थित नगर में, सौभाग्यशाली राजा की परिचारिका के रूप में, मैं नृत्य और गायन में अत्यंत निपुण थी। राजगृह में मुझे सिरिमा के नाम से जाना जाता था। परन्तु फिर ज्ञानी पुरुष, ऋषियों के गुरु, मार्गदर्शक ने मुझे उत्पत्ति, दुख और अनित्यता का ज्ञान दिया; असीम सत्य का, शाश्वत दुख निवारण का; और इस मार्ग का, जो टेढ़ा नहीं, सीधा और शुभ है।

जब मैंने तथागत (बुद्ध), अद्वितीय व्यक्ति के उपदेश से अमर अवस्था (निर्वाण), असीम अवस्था का ज्ञान प्राप्त किया, तो मैं उपदेशों में अत्यधिक संयमित और धर्म (बुद्ध का मार्ग) में स्थापित हो गया, जो कि सर्वश्रेष्ठ पुरुष, प्रबुद्ध व्यक्ति द्वारा सिखाया गया था।

जब मुझे तथागत (बुद्ध), अद्वितीय बुद्ध द्वारा सिखाए गए उस पवित्र, असीम स्थान का ज्ञान हुआ, तब मैंने उसी क्षण (महान मार्ग की) शांत एकाग्रता का अनुभव किया। मुक्ति की वह परम निश्चितता मेरी हो गई।

जब मुझे वह विशिष्ट, अमर, आश्वस्त और गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई, जिसमें कोई संदेह नहीं था, तो कई लोगों ने मेरा सम्मान किया और मुझे बहुत सुख और आनंद प्राप्त हुआ।

अत: मैं अमरता को जानने वाली देवी हूँ, तथागत (बुद्ध) की शिष्या हूँ, जो अद्वितीय हैं; प्रथम फल (सम्मोहन) में स्थापित धम्म की ज्ञाता हूँ, प्रथम मार्ग की साधिका हूँ। अब से मेरे लिए कोई कुजन्म नहीं है।

मैं अद्वितीय बुद्ध और कुशल विद्या में आनंदित रहने वाले गुणी भिक्षुओं का आदर करने आया हूँ; तपस्वियों की शुभ सभा और आदरणीय धर्म के स्वामी, धर्म के राजा, बुद्ध की आराधना करने आया हूँ। मैं ऋषि तथागत (बुद्ध) को देखकर आनंदित और प्रसन्न हूँ, जो योग्य मनुष्यों के उत्कृष्ट प्रशिक्षक हैं, जिन्होंने व्यथा का नाश किया है, जो कुशल विद्या में आनंदित रहते हैं, जो मार्गदर्शक हैं। मैं परम दयालु, करुणामय बुद्ध की आराधना करता हूँ।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> विमानवत्थु >> सेसवती - सेसवती की हवेली
पाली भाषा से जॉन डी. आयरलैंड द्वारा अनुवादित
[वांगिसा:] मैं इस रमणीय और सुंदर महल को देखता हूँ, जिसकी सतह अनेक रंगों से रंगी है, क्रिस्टल से जगमगा रही है और छत चाँदी और सोने से बनी है। एक सुगठित महल, जिसमें द्वार हैं और सुनहरी रेत बिछी है।

जैसे शरद ऋतु में हजार किरणों वाला सूर्य दस दिशाओं में आकाश में चमकता है और अंधकार को दूर करता है, वैसे ही आपका यह महल रात के अंधेरे में धधकती हुई, धुएं से लथपथ आग की तरह जगमगाता है।

यह बिजली की तरह आंखों को चकाचौंध कर देता है, सुंदर, मानो आकाश में ठहर गया हो। वीणा, ढोल और झांझ की मधुर ध्वनि से गूंजता हुआ, तुम्हारा यह महल वैभव में इंद्र के नगर को भी टक्कर देता है।

वहाँ सफेद, लाल और नीले कमल, चमेली और अन्य फूल हैं; खिलते हुए साल के पेड़ और फूलदार अशोक के पेड़ हैं, और हवा में तरह-तरह की सुगंध फैली हुई है।

मीठी सुगंध वाले वृक्ष, ब्रेडफ्रूट, आपस में गुंथी हुई शाखाएँ, पूरी तरह खिले हुए ताड़ के पेड़ और लटकती लताएँ, रत्नों से जड़े जालों की तरह शानदार; साथ ही आपके लिए एक रमणीय कमल का तालाब भी मौजूद है।

पानी में उगने वाले सभी फूलदार पौधे और जमीन पर उगने वाले सभी पेड़, जो मानव जगत और स्वर्ग में ज्ञात हैं, वे सभी आपके निवास स्थान में विद्यमान हैं।

यह किस प्रकार की शांति और आत्मसंयम का परिणाम है? आप किस कर्म के फल स्वरूप यहाँ आई हैं? यह महल आपको कैसे प्राप्त हुआ? हे घनी पलकों वाली महिला, विस्तार से बताइए।

[सेसवती:] यह महल, जिसमें बगुले, मोर और तीतरों के झुंड रहते हैं; और जहाँ दिव्य जलपक्षी और राजसी हंस आते-जाते रहते हैं; और जो पक्षियों, बत्तखों और कोयल की आवाज़ों से गूंजता रहता है, मुझे कैसे प्राप्त हुआ?

अनेक प्रकार की लताओं, फूलों और वृक्षों से युक्त; तुरही के फूल, गुलाब-सेब और अशोक के वृक्षों से युक्त — अब मैं आपको बताता हूँ कि यह महल मुझे कैसे प्राप्त हुआ। सुनिए, आदरणीय महोदय।

आदरणीय महोदय, मगध देश के पूर्वी भाग में नलका नामक एक गाँव है। मैं पूर्व में वहाँ बहू के रूप में रहती थी और वहाँ लोग मुझे शेषवती के नाम से जानते थे।

मैंने आनंदपूर्वक पुष्प बिखेरते हुए कर्मों में निपुण और देवताओं और मनुष्यों द्वारा पूजित महान उपतिस्सा (*1) का सम्मान किया, जिसने अपार तृप्ति प्राप्त की है।

परम जन्म लेने वाले, अपने अंतिम शरीर को धारण करने वाले प्रख्यात ऋषि की पूजा करने के बाद, मैंने अपना मानव रूप त्यागकर तैंतीस (स्वर्ग) में प्रवेश किया और इस स्थान पर निवास किया।

टिप्पणियाँ:

1. सारिपुत्त का व्यक्तिगत नाम, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे मूल रूप से नलका से आए थे।